संस्करण

अक्टूबर १९४१ : २०००

मूल्य

आठ आना

प्रकाशक

मार्तण्ड उपाध्याय, मन्त्री,
सस्ता साहित्य मण्डल,
नई दिल्ली

मुद्रक

एम० एन० ठुलल,
फेडरल ट्रेड प्रेस,
दिल्ली

भूमिका

यद्यपि भारतवर्ष में पशु-चिकित्सा के अनुभवी विद्वान सदैव होते रहे हैं जिन्होंने इस विषय में बहुत खोज और कार्य किया है; परन्तु संगठित कार्य कभी नहीं हुआ और जो कुछ हुआ है वह इतना तितर-बितर हो गया कि अब मिलना कठिन-सा है। शालिहोत्र तथा अश्विनीकुमार ने घोड़ों तथा अन्य ढोरों के विषय में जो कार्य किया है उसे कौन भूल सकता है! पाँचों पाण्डवों में नकुल को कौन नहीं जानता! वे इस विषय में बड़े दक्ष थे। ये लोग जो विद्या छोड़ गये उसमें से जो कुछ थोड़ा-बहुत मिलता है वह इस रूप में और इतना नहीं है कि उससे इस समय की हमारी आवश्यकतायें पूरी हो सकें।

इसी प्रकार मुसलमानों के समय में भी इस विषय के बड़े-बड़े विद्वान हुए हैं। उनकी खोज और अनुभव से भी लाभ उठाया जा सकता है। 'फारस नामा' के लेखक सादत यार खाँ और उनके पुत्र रंगनि ने फारसनामे रंगनि में जो कुछ लिखा है

वह कम महत्वपूर्ण नहीं है।

ईस्ट इंडिया कम्पनी के अर्थात् अंग्रेजों के भारतवर्ष में आगमन के समय तथा उनके राज्य के प्रारम्भिक काल में अंग्रेजी दवाइयाँ हर समय और हर जगह नहीं मिलती थीं और फौजों को बराबर एक स्थान से दूसरे स्थान को मार्च करना पड़ता था तब उन्हें हिन्दुस्तानी दवाइयों की आवश्यकता हुई। उस समय इस विषय में कुछ फौजी अफसरों ने खोज की थी और कुछ ऐसा संग्रह भी किया था: जैसे Veterinary Aid de Memoire, Bazar Medicine, Materia Medica Veterinica जिनकी मदद से आसानी से घोड़ों तथा अन्य ढोरों का स्थानिक दवाइयों से ही इलाज किया जा सके। परन्तु यह भी इस दिशा में समुचित और पर्याप्त कार्य नहीं कहा जा सकता।

भारतवर्ष के केन्द्रीय तथा प्रान्तिक वेटरिनरी विभागों ने भी इस सम्बन्ध में आधुनिक वैज्ञानिक तरीकों से बहुत-कुछ उपयोगी कार्य किया है, खास करके सीरम (Serum) और वेक्सीन (Vaccine) इत्यादि बनाने के सम्बन्ध में बड़ी खोज हुई है; और जो कामयाब साबित हुई है उसका प्रचार भी किया है। परन्तु जो कुछ आधुनिक कार्य इस विषय में हुआ है वह सरकारी दायरे में ही परिमित है। वह इस ढंग का नहीं है कि उससे सर्वसाधारण स्वतन्त्र रूप से लाभ उठा सकें।

मनुष्यों के मामले में भी भारतवर्ष में एलोपैथिक तथा वेक्सीन, इन्जेक्शन इत्यादि आधुनिक अंग्रेजी तरीके मँहगे

साबित हुए हैं। हिन्दुस्तान के निवासी बहुत गरीब हैं। वे इस प्रणाली (System) के अनुसार इलाज में जितना चाहिए उतना पैसा खर्च नहीं कर सकते। उनको तो पुराना तरीका अधिक माफिक आता है जिसमें घर और आस-पास के बाग-बगीचे, खेतों तथा जङ्गलों मे मिलजाने वाली चीजों की मदद से इलाज होता है। ढोरों के मामले में तो समस्या और भी विकट हो जाती है कारण कि पहिले तो ढोरों के इलाज के लिए मनुष्यों से सात-आठ गुनी अधिक दवा चाहिए और दूसरे प्रायः ढोर पालनेवाले तो भारतवर्ष में किसान या वे लोग हैं जो यहाँ सबसे अधिक गरीब हैं। आजकल की आधुनिक अंग्रेजी दवाइयाँ खरीदना उनके वश की बात नहीं है। इसलिए ऐसी दवाइयों के ज़रिये हमारे ढोरों के इलाज का प्रश्न हल नहीं हो सकता। ढोरों के इलाज के प्रश्न को हल करने के लिए हमें अपने भारतीय शालिहोत्र-शास्त्र को पुनर्जीवित करना होगा। मेरा ख़याल है कि यदि इस विषय में भली प्रकार खोज की जाये तो हमारे यहाँ इतनी सामग्री मिल सकती है कि इसके आधार पर भारतीय शालिहोत्र-विज्ञान की नींव डाली जा सके। जबसे प्रांतों में राष्ट्रीय सरकार जारी हुई हैं ग्रामसुधार तथा ढोरों की देखभाल की ओर उनका विशेष रूप से ध्यान गया है। अब यह आशा की जा सकती है कि वे भारतीय शालिहोत्र-शास्त्र को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता अनुभव करेंगे और इस काम को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे।

जब मैंने ढोरों के लिए 'चारा-दाना' पुस्तक लिखी थी तब

तो मेरे सामने केवल एक ही प्रश्न था कि इसको इस प्रकार लिखा जाना चाहिए कि साधारण आदमी भी जिसने किसी प्रकार की वैज्ञानिक शिक्षा नहीं पाई है इसे समझ सके और उससे पूरा लाभ उठा सके। परन्तु 'पशुओं का इलाज' लिखने में इसके अलावा एक और प्रश्न उपस्थित हो गया कि इस पुस्तक में जो दवायें तजवीज की जाये वे ऐसी होनी चाहिएँ कि जिनको प्राप्त करने में कम से कम खर्च और परिश्रम करना पड़े और वे उन ग्रामवासी भाइयों को सहज में ही मिल सकें जो बड़े-बड़े शहरों और कस्बों से बहुत दूर बसते हैं। इसलिए इस पुस्तक में जो दवायें तजवीज की गयी हैं वे उन्हीं घरेलू और गाँव में मिलनेवाली चीजों में से है जो गाँववालों के घर, गाँव, खेत या आस-पास के जंगल में भारतवर्ष के प्रायः सभी प्रान्तों में मिल सकती हैं। इनी-गिनी कुछ ही चीजें ऐसी होंगी जो आस-पास के कस्बे या शहर से लानी पड़ें, जैसे कालानमक, भंग, वेलगिरी, सुहागा, कपूर इत्यादि।

इसके अलावा मैंने एक बीमारी के कई नुसखे लिखे हैं ताकि एक नहीं तो दूसरा या तीसरा काम में लाया जा सके।

यह पुस्तक गाँव में रहनेवाले भाइयों की तत्संबंधी आवश्यकताओं ही को पूरा करने की दृष्टि से लिखी है। प्रायः गाँवों में जब कभी कोई ढोर बीमार हो जाता है तब आरम्भ में उसकी कोई परवाह नहीं करता और जब उसको ज्यादा तकलीफ हो जाती है या उससे काम में हर्ज होने का डर होता है तब उसके इलाज करने का विचार आता है। उस समय हरएक मिलनेवाला

अपने-अपने तजुर्बे की दवा बताता है और ऐसी स्थिति हो जाती है कि कभी किसी की दवा दी जाती है और कभी किसी की। इससे प्रायः हानि ही होती है। इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि ढोरों के मालिक के पास कोई ऐसी चीज होनी चाहिए जिसके आधार पर वह अपने ढोरों का इलाज कर सके और कभी किसी की और कभी किसी की बतायी दवा न देकर परेशानी और फिजूल खर्च से अपने आपको बचाता हुआ ढोरों के कष्ट को दूर कर सके। गाँव में ही क्या, कस्बों और शहरों में भी लोग छूत की बीमारियों से बिलकुल नावाकिफ़ होते हैं। इसलिए उनको बड़ी हानि होती है और उनके बहुमूल्य ढोर बड़ी भारी संख्या में मर जाते हैं। इस नुकसान को रोकने के लिए छूत की बीमारियों का पहचानना तथा यह जानना कि बीमारी की हालत में ढोरों की देखभाल किस प्रकार की जाती है बहुत आवश्यक है। पुस्तक के अन्त में दवाइयों के नाम अंग्रेजी में भी इसलिए दे दिये गये हैं कि अंग्रेजी नामों की सहायता से हर प्रान्त के लोग अपनी भाषा में दवाइयों के नाम जान सकें और उन्हें उनको पहिचानने में सुविधा हो।

मैंने इस बात की कोशिश की है कि इस पुस्तक के लिखने का ढंग और भाषा ऐसी हो जिसे एक साधारण पढ़ा-लिखा ग्रामीण भी समझ सके और बिना पढ़ा-लिखा किसान भी पुस्तक को दूसरे से सुनकर कुछ लाभ उठा सके। यदि इस पुस्तक से किसान भाइयों तथा ढोरों के मालिकों को लाभ पहुँचा तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा। पाठकों से मेरा निवेदन

है कि उन्हें इसमें किसी भी तरह की कोई त्रुटि जान पड़े या इसको अधिक उपयोगी बनाने के लिए उनकी कोई राय हो तो लेखक को सूचित करने की कृपा करें। इसके लिए लेखक उनका कृतज्ञ होगा।

परमेश्वरीप्रसाद गुप्त

गोपष्टमी, १६६७ वि०

मॉडल टाउन, ग़ाज़ियाबाद (यू० पी०)

———

विषय-सूची

०

संख्या पृष्ठ

५. विना छूत की या साधारण बीमारियाँ ६२-११६

६. मादा पशुओं का गर्भधारण, ब्याना और खास बीमारियाँ ११७-१४४

७. शरीर के ऊपरी भाग की साधारण बीमारियाँ

पशुओं का इलाज

: १ :

रोग का निदान

बीमारी के कारण

प्राय: प्राकृतिक जीवन होने के कारण मनुष्य की अपेक्षा पशु बहुत कम रोगी होते हैं। यहाँ पशुओं के रखने का तरीका और मुल्कों के मुक़ाबले में अधिक स्वाभाविक होने की वजह से छूत की बीमारियों के सिवा उन्हें और बीमारियाँ कम ही सताती हैं। छूत की बीमारी तो अधिकतर हमारे अज्ञान के कारण फैलती है। अनेक छोटे-मोटे रोगों का कारण कमज़ोरी है जो खुराक की कमी से पैदा होती है। कमज़ोर पर, चाहे वह मनुष्य हो या पशु, रोग का आक्रमण अधिक होता है।

पशुओं के बीमार होने के साधारण कारण

(१) (क) ज़रूरत से कम चारा-दाना पाना।

(ख) खुराक में आवश्यक पौष्टिक तत्त्वों का यथोचित मेल न होना।

(२) सड़ा-गला चारा-दाना खाना तथा गन्दा पानी पीना।

(३) गन्दा स्थान, अधिक सर्दी, गर्मी और वर्षा से बचाने

का ठीक प्रबंध न होना।

(४) छूत की बीमारियों से तन्दुरुस्त पशुओं को बचाने का उपाय न जानना।

तन्दुरुस्त पशुओं के लक्षण

पहले तन्दुरुस्त पशुओं के लक्षण बतलाये जाते हैं। इससे रोगी पशुओं के लक्षण समझने में आसानी होगी।

(१) भली प्रकार खाना, पीना और जुगाली करना।

(२) आँखों में चमक, थूथुन पर तरी, कान और पूँछ का स्वाभाविक रूप से हिलाते रहना।

(३) स्फूर्ति और चैतन्य होना।

(४) रोमों और बालों में सफाई और चमक।

(५) शरीर को आहिस्ता से भी छूने से सिकोड़ना।

बीमार पशुओं के लक्षण

(१) पशु का रेवड़ (समूह) से अलग खड़ा होना, सुस्त और निर्बल दिखाई देना।

(२) पूरी तरह न खाना-पीना और जुगाली बन्द कर देना।

(३) दूध कम देना।

(४) कान गिरे रहना, बाल खड़े रहना, थूथुन सूखे होना

(५) शरीर को छूने से न सिकोड़ना।

(६) कानों की जड़ के पास का हिस्सा ज्यादा गर्म और

सिरा ठण्डा होना।

(७) आँख, नाक, मुँह से गीड़ (कीचड़), पानी, नेटा और लार गिरते रहना।

गाय, बैल, भैंस इत्यादि के शरीर का साधारण तापक्रम-गर्मी—(Normal Temperature) १०१ से १०२ डिगरी तक होता है। इससे कुछ कम हो तो कमजोरी और अधिक हो तो बुखार समझना चाहिए। सख्त गर्मी के दिनों में कभी-कभी एक-आध डिगरी अधिक भी हो जाता है। स्वाभाविक हालत में ढोरों की नब्ज़ १ मिनट में ४०-४५ चलती है और साँस १ मिनट में १२ बार लेते हैं।

इसके सिवा गोबर और पेशाब की भी जाँच करनी चाहिए। गोबर बहुत पतला, बदबूदार, असाधारण रंगवाला, खून इत्यादि मिला हुआ अथवा छोटी-छोटी सूखी गाँठोंवाला भी रोग का लक्षण है। यों पशु के हरा चारा अधिक खाने पर गोबर प्रायः ढीला-ढाला, हरे से रंग का होता है और बहुत सख्त, सूखा, अधिक रेशेवाला चारा बिना खली और दाने के खिलाये जाने पर गोबर प्रायः सूखा हुआ करता है। पर यह अवस्था असाधारण नहीं है। बहुत गहरे रंग का, खून या उसके साथ कोई और माद्दा मिला हुआ या बिल्कुल पानी की तरह का बेरंग मूत्र रोग की निशानी है।

किसी प्रकार के रोग का सन्देह होते ही पशु को सबसे पहले दूसरे तन्दुरुस्त जानवरों से अलग करके परीक्षा और उसके यथोचित इलाज का प्रबंध करना चाहिए।

बीमारी की दो किस्में

एक छूत की (Contagious या infectious disease) और दूसरी साधारण (Non-contagious disease) एक बीमार पशु के दूसरे तन्दुरुस्त पशु के साथ खाने-पीने, साँस लेने या छू जाने से ही लग जानेवाली बीमारियाँ छूतवाली कहलाती हैं। इन्हें खतरनाक समझना चाहिए। ये विना किसी वजह के केवल छूत से ही पशुओं में फैल जाती है। प्रायः ऐसी बीमारियों के एक वार कुछ ढोरों में फैल जाने पर दूसरे अच्छे ढोरों को इनसे वचाना मुश्किल हो जाता है। इनसे वचने का सवसे अच्छा और सरल उपाय ऐसे रोगों को न फैलने देना ही है।

परीक्षा के वाद छूत या साधारण रोग का निश्चय हो जाने पर तदनुसार पशु के रहने-सहने, खाने-पीने, देख-भाल तथा इलाज का प्रवंध करना चाहिए। यदि खतरनाक छूत की बीमारी हो तो फौरन उसे तन्दुरुस्त पशुओं से अलग दूर ले जाकर रखें। और साधारण बीमारी हो तो भी दूसरे तन्दुरुस्त पशुओं से कुछ हटाकर, संभव हो तो अलग जगह अथवा वहीं अन्य पशुओं से वचाकर एक तरफ रखना चाहिए।

: २ :

उपचार

बीमार पशुओं के लिए स्थान

बरसात तथा जाड़े में ठण्ड के कारण होने या उससे बढ़नेवाले रोगों में पशु को ऊपर झरोखों से काफी हवा जाने-आनेवाले और साथ ही धूप और रोशनीवाले घिरे हुए मकान में रखना चाहिए, ताकि उसको सीधे हवा का झोंका न लगे तथा मकान की गंदी हवा भी साफ होती रहे। गर्मी में उसे खुले मैदान में पेड़ के नीचे अथवा घर के आँगन में भी रखा जा सकता है। रोगी पशु के शरीर पर सीधे हवा का झोंका न लगने देने का खयाल रखना चाहिए। लेकिन किसी भी दशा में रोशनी और हवा का आमदरफ्त बराबर रहना चाहिए। अच्छा तो यह है कि रोगी पशु के बैठने का फर्श पक्का हो। उसपर खूब सूखी घास, रेत, रद्दी सूखा भूसा या पत्ती वगैरह बिछाकर जानवर के बैठने को स्थान नरम कर देना चाहिए। इन चीजों को रोज बदलने का ख्याल रखना चाहिए। रोग की दशा में पतला गोबर करने, वस्तिकर्म (एनीमा) से दस्त कराने या योनि से बच्चेदानी को

साफ करने (ब्रूश) के कारणों से बीमारी की हालत में जगह ज्यादा गन्दी हो जाया करती है। रोग की हालत में ज्यादा सफ़ाई की ज़रूरत हुआ करती है। इसीलिए पक्का फर्श और पक्की दीवाल अधिक उपयुक्त है; पर यह न हो तो कच्चे स्थान से भी काम चल सकता है बशर्ते उसको अच्छी तरह साफ़ रखा जाय। गोबर, कीचड़ जो कुछ हो उसे फौरन हटाकर स्थान को सुखा देना चाहिए और दीवार पर जहाँ कहीं गन्दगी के छींटे वगैरह लग गये हों तो गोबर-मिट्टी से लीपकर साफ कर देने चाहिएँ।

बीमार पशुओं के लिए खुराक

बीमार पशु की खुराक की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। अलग-अलग रोगों के वर्णन में उनके लिए खुराक भी बतलाई गई है पर जहाँ कोई खास खुराक न बतलाई गई हो वहाँ नीचे लिखी बातों का ख़याल रखना चाहिए।

(१) बीमार जानवर को थोड़ा-थोड़ा कई बार करके खिलाना चाहिए। एक ही दो बार में पेट भरकर खिला देना ठीक नहीं है।

(२) जल्दी पचनेवाली, अधिक गरम, बादी तथा कब्ज न करनेवाली रुचिकर और पौष्टिक खुराक देनी चाहिए, जिसमें जानवर बीमारी की हालत में भी खुराक रुचि से खाकर आसानी से पचा ले और ताकत बनाये रख सके।

(३) खास खास रोगों में तरल पदार्थ वर्जित होते हैं और कुछ बीमारियों में जानवर सूखे पदार्थ खा ही नहीं सकता। इस

लिए रोग के अनुसार उपर्युक्त बातों का खयाल रखते हुए खुराक देनी चाहिए।

(४) आम तौर से रोगी पशुओं को उनकी दशा के अनुसार हरा या मुलायम सूखा चारा, दलिया, दूध काँजी, चाय, सत्तू, रोटी, चोकड़ इत्यादि दिया जाता है।

हरे चारे में—दूब या दूसरी मुलायम घास, जई, गेहूँ, बरसीम, कच्ची गिनी घास, मक्का, नेपियर तथा हाथी घास इत्यादि देनी चाहिए।

मुलायम सूखे चारे में—दूब तथा दूसरी मुलायम घासें जिनमें रेत मिट्टी न हो, सुखाई हुई जई का चारा, जौ गेहूँ, जई का भूसा, पुआल, बारीक मुलायम चरी, मुलायम गिनी घास की बारीक कुट्टी इत्यादि देनी चाहिए।

दलिया—बाजरा, गेहूँ, चोकड़, जई इत्यादि का देना चाहिए।

काँजी या माँड—चावल, अलसी, चोकड़, इत्यादि देना चाहिए।

काँजी या माँड बनाने की विधि—तीन पाव चावल या चोकड़ या १॥ पाव कूटी हुई तीसी को ५ सेर पानी में भली प्रकार उबालो फिर कपड़े में छान लो और ठंडा होने पर थोड़ा-सा नमक या गुड़ मिलाकर पिलाओ।

(५) किसी रोग में कुछ समय तक पानी बिल्कुल नहीं और कुछ में गरम पिलाया जाता है। बाकी में हमेशा कुएँ का ताजा पानी पिलाना चाहिए। पानी गुनगुना गरम

खिलाना चाहिए।

(६) जहाँतक संभव हो, दवा के सिवा जानवर को और कोई चीज जबरन नहीं खिलानी चाहिए। थोड़े-थोड़े नियत समय के बाद उसके सामने खाने-पीने की चीज़ें रखनी चाहिएँ कि इच्छा हो तो खा-पी ले।

बीमार पशुओं की देख-भाल

बीमार जानवर की देख-भाल बड़ी होशियारी से करनी चाहिए क्योंकि उस समय जानवर बिल्कुल लाचार हो जाता है मनुष्य की तरह न उसमें विचार-शक्ति ही होती है और न बोल ही सकता है। इसलिए उसकी देख-भाल और इंतजाम करनेवालों की बड़ी जिम्मेदारी हो जाती है। उसकी देख-भाल और दवा इत्यादि में जरा भी लापरवाही या चूक होने से उसका नतीजा न मालूम क्या हो जाय! नीचे लिखी बातों का खास ख़याल रखना चाहिए:—

(१) सख्त धूप, सर्दी, बारिश, तेज हवा से बचाने के लिए बीमार पशु को छाया या मकान में रखना, तथा सर्दी में उसपर झूल डालना चाहिये।

(२) बीमार पशु को मक्खी-मच्छरों से बचाने के लिए भी उसपर झूल डालना चाहिए। उसके रहने के स्थान पर सवेरे-शाम गूगल, राल, गँधक या और किसी ऐसी ही चीज की धूनी देना और यह न हो तो नीम के पत्तों या और कोई पत्ते या कूड़ा-कर्कट, घास इत्यादि ही जलाकर थोड़ी देर के लिए धुआँ कर देना भी लाभ-

प्रद होता है। मच्छर इससे कम होंगे और वहाँ की हवा भी कुछ शुद्ध हो जायगी।

(३) पशु को नाल, ढरके (बाँस की नली), बोतल इत्यादि से दवा देने के समय पशु को गिराकर कोई दवा वग़ैरह लगाने की जरूरत होने पर पशु को एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाते समय तथा बीमार जानवर को खड़ा करते समय, या करवट बदलवाते समय, यह ध्यान रखना चाहिए कि पशु के साथ ज्यादा जबरदस्ती किये बिना उसे कम से कम तकलीफ पहुँचा कर काम किया जाय।

(४) यदि जानवर एक दिन से ज्यादा एक करवट पड़ा रहता है तो उसके दबे हुए हिस्से की खाल गलने का डर रहता है। इसलिए जानवर के शरीर के हर एक हिस्से पर प्रकाश और हवा लगने के लिए यथासंभव एक-दो बार रोज करवट लिवाना नहीं भूलना चाहिए।

(५) साधारण बीमार जानवर को भी अच्छे जानवर से अलग ही रखना लाभप्रद है; लेकिन ज्यादा बीमार जानवर को तो अच्छे जानवर से अलग रखना बहुत ही जरूरी है ताकि समय-असमय (रात-बिरात) आदमी आसानी से उसके पास आ जा सके और उसकी सेवा-टहल कर सके। खास करके छूत की बीमारीवाले जानवरों को फौरन अलग करना न भूलिए।

(६) बीमार जानवर के रोग का निदान या पहिचान (Diagnosis) करने में जल्दी न करें। बीमारी ठीक समझ में नहीं आवे तो अपने यहाँ जो समझदार आदमी बीमारी को

समझनेवाला हो उससे सलाह करके दवा तजवीज करें यदि खुद फैसला न कर सकें तो आसपास के पशुओं के डाक्टर से सलाह लेकर ही इलाज आरंभ करना चाहिए।

(७) बीमारी से अच्छे हो गये हुए जानवर को तन्दुरुस्त जानवरों में मिलाने में जल्दी नहीं करनी चाहिए। बीमारी से अच्छा हो जाने के एक सप्ताह बाद ही अच्छे जानवरों में मिलाना चाहिए। इससे उसकी व्यक्तिगत देख-भाल हो सकेगी और वह शीघ्र स्वस्थ होकर अपना कार्य पूर्ववत् कर सकेगा।

(८) तेज जहरीली (Poisonous) दवा जहाँ फोड़े-फुन्सी पर लगानी हो उससे इधर-उधर न लगे, इसका खयाल रखना चाहिए।

(९) कोई दवा जानवर को खिलाने-पिलाने के पहिले देख लेना चाहिए कि उसमें कोई जहरीली दवा तो शामिल नहीं है और है तो उसके बारे में भली भाँति निश्चय कर लेना चाहिए कि वह ठीक है वा नहीं और मात्रा से अधिक तो नहीं है।

(१०) मालिक को अपने नौकर व साथी पर ही बीमार जानवर की देख-भाल का सब भार नहीं छोड़ना चाहिए बल्कि उसे खुद भी एक-आध बार देख लेना चाहिए जिससे कोई भूल हो रही हो तो उसे सुधारा जा सके। बीमार जानवर की देख-भाल करनेवालों के पास जहाँतक हो घर-बार का या अन्य पशुओं का या दूसरा कोई काम बीमारी के दिनों में नहीं होना चाहिए ताकि उसको यथोचित समय देने में कोई दिक्कत न हो। खास करके छूत की बीमारी के जानवरों की देख-भाल करनेवालों के पास दूसरे तन्दुरुस्त जानवरों का या घर का तो कोई भी काम नहीं होना चाहिए, अन्यथा छूत फैलने का डर रहेगा।

: ३ :

दवाइयों के विषय में कुछ जानकारी की बातें

सब दवाइयों को उनके इस्तेमाल के तरीके का ख़याल करते हुए तीन हिस्सों में बांटा जा सकता है।

(१) खिलाने-पिलानेवाली दवाइयाँ—

(अ) कूट-पीसकर बारीक दवाइयाँ चूर्ण या सफ़ूफ के रूप में।

(आ) तरल दवाइयाँ जैसे काढ़ा, तेल तथा तरल पदार्थ में घुली हुई।

(२) लगाई, चुपड़ी या बुरकाई जानेवाली दवाइयाँ—

(अ) बारीक पीसी हुई चूर्ण या सफ़ूफ के रूपमें।

(आ) काढ़ा, तेल या तरल पदार्थ में घुली हुई।

(इ) मलहम के रूप में।

(ई) पलस्तर अर्थात चिपकाई जानेवाली।

(उ) धुआँ या भाप देकर असर पहुँचानेवाली।

(ऊ) गुदा या योनि द्वारा दी जानेवाली।

(३) पिचकारी द्वारा देने की या टीका लगाने की दवाइयां अर्थात वे दवाइयाँ जो सुई द्वारा खाल के नीचे की नस या शरीर के हिस्से में पहुँचाई जाती हैं।

(१) (अ) सफूफ या चूर्ण की शक्ल में दी जानेवाली दवाइयाँ खरल, इमामदस्ता, ओखली, या सिल-बट्टे, किसी से कूट-पीसकर झिनझने कपड़े (धोतर) या जहरीली दवा न हो तो आटा छानने की छलनी से छानकर तैयार की जाती हैं। सफूफ के रूप में पशुओं को दवा रोटी अथवा गुड़ में या किसी दूसरे खाने की चीज में रख या मिलाकर दी जाती है। कभी कभी पानी, दूध या अन्य किसी तरल पदार्थ में, जिसका बीमारी में खराब असर न पड़ता हो घोलकर भी दी जाती है। यदि दवा थोड़ी मिकदार में हो तो जानवर का मुँह खोलकर उसकी जीभ पर डालदेने से और उसका मुँह थोड़ी देर ऊपर किये रहने से ताकि राल द्वारा दवा बाहर न आवे काम हो सकता है।

(आ) इनमें बहुतेरी दवाइयाँ जैसे तैल, शीरा इत्यादि तो तैयार ही होती हैं। कुछ दवाइयाँ पानी या अन्य किसी तरल पदार्थ में घोलने से या मिलाने से ही तैयार हो जाती हैं। कुछ ऐसी भी हैं जो पानी या दूसरे तरल पदार्थ में आसानी से घुलती या मिलती नहीं है। उन्हें गर्म पानी या जिस तरल पदार्थ में वे घुल जाती हैं घोला जा सकता है। उन्हें बहुत बारीक करने की आवश्यकता नहीं, छोटे टुकड़े करके बतलाये हुए अन्दाज़ के पानी या दूसरे तरल पदार्थ में खूब उबालकर पानी की पौन या आधी मिकदार रह जाय उस समय छानकर गर्म या ठन्डी जैसी बतलाई गई है दी जाती है। कुछ दवाइयाँ पानी या अन्य किसी तरल पदार्थ में कुछ अर्से तक भिगो या सड़ा

कर दी जाती हैं। अपने आप पी जा सकनेवाली दवा तो पशु के सामने बर्तन में रख देनी चाहिए और न पिये तो वह तथा दूसरा अपने आप न पी जानेवाली दवाइयाँ बाँस की नाल (ढरका) या टीन या शीशे की मजबूत बोतल में डालकर पिलानी चाहिए।

नाल या ढरके से दवा पिलाने की तरकीब—जानवर की बाईं ओर खड़ा होकर दाहिने हाथ से उसका सिर उठाये और दूसरे बायें हाथ से जानवर का मुँह खोलकर दवा की बोतल या ढरके का मुँह होशियारी से जानवर के मुँह में एक तरफ़ जबाड़े के पास जीभ के ऊपर रखकर धीरे-धीरे पिला दे। इस बात का बराबर ध्यान रखना चाहिए कि जानवर के नथने में दवा न चली जाय। अगर खाँसी बहुत तेज हो या हलक़ में गर्मी हो तो दवा की चटनी बनाकर चटा देना अच्छा है। अगर दवा पिलाते समय जानवर खाँसे या मालूम हो कि जानवर खाँसना चाहता है तो जल्दी उसका सिर छोड़ देना चाहिए जिससे वह खाँस सके और दवा नथुने (साँस की नली) में न जाने पावे। दवा नथुने में चली जाने पर तो जानवर का साँस घुट जाने का भय रहता है।

३ (अ) ऊपर नं० १ (अ) में लिखी गई विधि से चूर्ण तैयार कर ले पर इसे बहुत बारीक करना चाहिए। इसको महीन कपड़े से छानना आवश्यक है। दवा लगाने की जगह साफ़ करके, तेल चुपड़कर या बिना तेल चुपड़े साफ़ रुई या हाथ से बताई हुई विधि से बुरका देनी चाहिए।

४. (आ) यह नं० १ (आ) के अनुसार तैयार करें। इन दवाइयों में कुछ उड़नेवाली (Volatile) और शीघ्र आग लग जानेवाली (Inflamable) भी होती हैं। गर्म करने की आवश्यकता हो तो बहुत होशियारी से हल्की आँच से ही गर्म करें। जिसमें दवा उड़ न जाय या आग न लग जाय। यह दवा किसी तिनके या बारीक लकड़ी इत्यादि के सिरे पर ज़रा सी रुई या कपड़ा लपेटकर अर्थात् उसकी फुरहरी बनाकर उसे दवा में डुबोकर लगानी चाहिए यदि शरीर के किसी भीतरी हिस्से में पहुँचाना हो तो फुरहरी या पिचकारी द्वारा पहुँचाना चाहिए। बाज़ दफ़ा पिचकारी की बहुत बारीक बौछार (spraying) द्वारा भी यह दवा इस्तैमाल की जाती है।

५. (इ) मलहम बनाने में चर्बी, तैल, मोम, वेसलीन या घी और मक्खन काम में लाते हैं। इसे मलहम का आधार (base) कहते हैं। जिस चीज़ का मलहम बनाना हो वह दवा उपयुक्त आधार में भली-भाँति मिलाने से मलहम तैयार हो जाता है। जहाँ लगाना हो वह जगह विधिपूर्वक साफ़ करके ठीक नाप का कपड़ा काटें। उसपर पलस्तर की तरह लगाकर उस जगह पर चिपका दें। कभी-कभी दवा किसी चीज़ से या हाथ से लगाकर आहिस्ता-आहिस्ता उस जगह पर मालिश की जाती है ताकि यह दवा भिद कर असर करे। मालिश करते समय ख़याल रखें कि जिस ओर शरीर के रोओं (बाल) का रुख़ हो उसी ओर को मालिश करें अर्थात् जिस तरफ़ से रोयें शुरू हों उधर से हाथ रगड़ना शुरु करके जिस ओर रोयें ख़तम हों उस

और हाथ रोकना चाहिए वरना बाल तोड़ होने का भय है।

६. (ई) दवा पलस्तर के रूप में लगाई जाती है। दवा को किसी मोटे कपड़े पर एक सा फैलाकर जानवर के पीड़ित भाग पर चिपका देते हैं।

७. (उ) धुआँ और भाप देकर असर पहुँचाने के लिए आँच पर दवा डालकर धुआँ पैदा करते हैं। भाफ के लिए बर्तन में पानी तथा दवा डालकर बर्तन को हल्की आँच पर रख देते हैं। जिससे पानी गर्म होकर धीरे-धीरे भाप द्वारा दवा का असर हो। जिस स्थान पर दवा का असर पहुँचाना हो उस जगह उपरोक्त तरीक़े से धुआँ या भाफ उत्पन्न करके नली द्वारा या सीधे ही उस स्थान पर धुआँ या भाप लगाते हैं।

धुआँ या भाप आम तौर से ऐसे मकान के अन्दर जहाँ सीधी हवा का झोंका न लगे लगानी चाहिए ताकि उसका असर भली भाँति हो सके। जिस हिस्से पर दवा के धुएँ व भाप का असर पहुँचाना हो उस हिस्से के नज़दीक वह धुआँ व भाप उत्पन्न करते हैं ताकि वह धुआँ व भाप शरीर के उस हिस्से पर भली-भाँति लगे। कभी-कभी यह रबड़ या हुक्के की नली द्वारा भी उस स्थान पर लगाया जाता है। जानवर की नाक के नज़दीक जिस दवा का धुआँ या भाप साँस के ज़रिये अन्दर पहुँचाना है उस दवा का धुआँ या भाप उत्पन्न किया जाता है ताकि जानवर के साँस के ज़रिए अन्दर चला जाय या यह भी हो सकता है कि एक लम्बी लकड़ी के सिरे पर कोई कपड़ा बाँध दिया जाय

और वह उबलती हुई दवा के पानी में डुबोकर जानवर के नाक के नज़दीक ले जाया जाय ताकि भाप साँस के ज़रिए अन्दर चली जाय । इस प्रकार कई बार करके खतरनाक और भड़कने-वाले जानवर को भी भपारा दिया जा सकता है। धूनी केवल सुलगे हुए उपले पर दवा डालकर या चिलम में आग रखकर उसपर दवा डालकर दी जा सकती है।

(२) (अ) योनि द्वारा दवाई का असर पहुँचाना (डूश करना) और गुदा द्वारा हकना (एनीमा) देने की तरकीब—

इसके लिए नीचे लिखी चीजों की आवश्यकता होती है:—

[१] सबसे पहिले ८-१० सेर पानी में नीम के पत्ते डाल कर खूब उबालना चाहिए या गर्म पानी में कुए में डाली जानेवाली लाल दवा डालकर खूब मिला लेना चाहिए।

[२] एक नली रबड़ की हो तो अच्छा है अन्यथा बाँस की जिसके दोनों सिरे गोल और चिकने कर लिये हों; पपीते अथवा प्याज की काम में लाई जा सकती हैं। यह आधा इंच या एक अंगुल तक मोटी और ३-४ फीट या २-३ हाथ लम्बी होनी चाहिए।

[३] एक कीफ या टीप [लालटेन में तेल डालने की] यदि टीप न मिले तो चौड़ी चिलम या बधना [जिससे मुसलमान लोग पानी पीते हैं] जिसमें नाली ठीक लग जाय होनी चाहिए।

[४] एक छोटी मशक या बाल्टी या डोल जिससे टीप में पानी डाला जा सके।

नली को नीम का तैल या कपूर मिले तिल्ल के तैल से खूब चुपड़ लो उसके एक सिरे में कीफ या टीप चिलम या बधना लगाकर मशक या डोल में से पानी डालते हैं और नाली का दूसरा सिरा एक बालिश्त के करीब पशु की योनि अर्थात् पेशाब करने की जगह में और वस्तिकर्म कराने के लिए गुदा में भीतर डाल दो। मशक या डोल पशु से काफी ऊँचा रहना चाहिए, जिससे पानी टीप में डालते रहने से नली द्वारा जानवर के अंदर के हिस्से में सहूलियत से जा सके। डोल से दवा मिला हुआ पानी आहिस्ता-आहिस्ता डालते रहें। जानवर को बराबर एक जगह खड़ा रखें, इधर-उधर हटने न दें वरना नाली निकल जायगी। योनि या गुदा के पास भी नाली को हाथ से पकड़े रहें कि नाली निकल न सके। और उस जगह को दबाये रक्खें क्योंकि जब काफी पानी शरीर के अन्दर चला जाता है तब वह उसको निकालने के लिए जोर करता है उस समय पानी निकलने न पावे। इस प्रकार काफी पानी जब अंदर चला जाय तब दो-एक मिनट पानी अंदर रोके रखें फिर हाथ हटालें और पानी निकल जाने दें। इस प्रकार दो-तीन बार करना चाहिए। ऐसा करने से अंदर की सब गंदगी पानी के साथ निकल जाती है।

३—पिचकारी द्वारा दवा देना या टीका लगाना—जिस तरह मनुष्यों में चेचक का टीका लगाते हैं उसी तरह जानवरों को छूत की बीमारियों से बचाने के लिए टीका लगाते हैं। इसमें पिचकारी के जरिए जानवरों की खाल के नीचे दवा प्रवेश

करते हैं इससे जानवर कुछ अर्से के लिए या उम्र भर के लिए उस बीमारी से बच जाते हैं। इस टीके से जानवर को कोई तकलीफ नहीं होती। सिर्फ सुई चुभाते समय जरा-सा दर्द होता है। इसके लिए विशेष यंत्र और जानकारी की आवश्यकता होती है। इसलिए यह सदा जानकार डाक्टर से ही कराना चाहिए। इसी प्रकार इन्जेक्शन देते हैं। इनमें जो दवा पिचकारी द्वारा अन्दर पहुँचाई जाती है वह खून की गर्दिश के साथ मिलकर तमाम शरीर में बड़ी जल्दी फैल जाती है और अपना असर करती है। यह भी होशियार डाक्टर द्वारा ही दिलाना चाहिए।

दवा की खूराक या मिकदार (Dose)—खुराक या मिकदार आमतौर से जहाँ दवा तजवीज की गई है वहाँ लिख दी गई है कि किसके लिए कितनी है, अन्यथा उसे पूरे कद के प्रौढ़ जानवर के लिए जिसका वजन करीब ८०० पौंड या १० मन हो समझें। कम या ज्यादा वजन के जानवर को उसके वजन के अनुसार कम या ज्यादा मिकदार में दें। एक वर्ष से दो वर्ष के जानवर के लिए आधी से पौनी मिकदार और ६ महीने से साल भर के जानवर के लिए ¹/₃ से ¹/₂ मिकदार में ४ माह से ६ माह तक के जानवर के लिए चौथाई मिकदार में ४ माह से कम उम्र के जानवर को ¹/₈ हिस्सा की मिकदार में और १ माह से कम के जानवर को ¹/₁₆ भाग की मिकदार में उनके कद, वजन और अवस्था के अनुसार देते हैं। गायों से भैंसों को सवाई, बकरी को चौथाई और घोड़े को बराबर मिकदार में उनके कद, वजन और अवस्था के अनुसार दवा की खुराक

देनी चाहिए।

वास्तव में मनुष्य और जानवर में जहाँतक बीमारी का सवाल है कोई खास फर्क नहीं है। प्रायः जो दवा मनुष्य को लाभ पहुँचाती है वह जानवरों को भी लाभ पहुँचाती है। मनुष्य को बाज़ दफा बेशकीमती दवायें दी जाती हैं जो जानवरों को देना संभव नहीं लेकिन यदि वह जानवरों को भी दी जायँ तो उनको लाभ करती हैं। मनुष्यों के मुकाबले में छः गुनी से आठ गुनी तक दवा पूरे कद के प्रौढ़ जानवर को दे सकते हैं।

: ४ :

छूतवाली बीमारियाँ

(Contgious & Infectious Diseases)

छूत की बीमारियाँ आमतौर से बीमारी के कीटाणुओं द्वारा होती हैं। हर एक बीमारी के अलग-अलग कीटाणु होते हैं। ये इतने छोटे होते हैं कि बिना यंत्र के आँखों से दिखाई भी नहीं देते और रेत के एक ज़र्रे पर हज़ारों की तादाद में आ जायें इतने छोटे होते हैं। इनकी बढ़ोत्तरी भी बड़ी जल्दी होती है, कई बीमारियों के कीटाणु तो एक दिन में एक से बढ़कर १००० या इससे भी अधिक हो जाते हैं। इससे अन्दाज़ा किया जा सकता है कि छूत की बीमारी कितनी जल्दी फैलनेवाली हो सकती है। ये कीटाणु इतने छोटे और हल्के होते हैं कि ज़रा से स्पर्श से खाने-पीने की चीज़ द्वारा, हवा द्वारा, नाक, थूक, गोबर, पेशाब, बीमार जानवर की भूठन तथा सेवा करनेवाले मनुष्य द्वारा, बेजाने बीमार जानवरों से अच्छे भले-चंगे जानवरों के पास पहुँच जाते हैं, और उनको बीमार कर देते हैं। इसलिए आसपास कहीं भी किसी प्रकार की छूत की बीमारी हो जाय तो पशुओं के मालिक को बहुत चौकन्ना हो जाना चाहिए और बहुत होशियारी से अपने पशुओं की हिफ़ाज़त करनी चाहिए, ताकि उनमें वह बीमारी न फैल पाये।

छूत की बीमारी से ढोरों को बचाने के लिए नीचे लिखी बातें अमल में लानी चाहिए:—

(१) आसपास के गाँव या इलाके में जब कोई छूत की बीमारी फैलने की खबर मिले तब किसी आते-जाते आदमी द्वारा उस इलाक़े के पशुओं के डाक्टर या अस्पताल में खबर दे देनी चाहिए कि अमुक गाँव में अमुक छूत की बीमारी की ख़बर मिली है। इसी प्रकार अपने गाँव में तथा आसपास के गाँव में भी सब जगह चर्चा कर देनी चाहिए जिसमें सब आदमी होशियार हो जाये और अपने-अपने पशुओं को बीमारी से बचाने का इन्तज़ाम कर लें।

(२) सम्भव हो तो पंचायत करके अपने गाँव के पशु उस इलाक़े में न जाने दें। अपने निजी पशुओं को न उस इलाक़े में जाने दें और न उस इलाक़ों के पशु अपने पशुओं में आने दें।

(३) अपने पशुओं की तथा उनके रहने के स्थान की सफ़ाई का हमेशा और खास करके ऐसे समय ठीक प्रबन्ध रखना चाहिए।

(४) पशुओं का गोबर और पेशाब बराबर देखते रहना चाहिए कि वह साधारणतः जैसा होना चाहिए वैसा ही है या नहीं तथा यह भी देखते रहना चाहिए कि वे भली भाँति जुगाली करते हैं कि नहीं किसी के मुँह से राल तो नहीं गिरती, कोई लँगड़ाकर तो नहीं चलता, कोई सुस्त तो नहीं है इत्यादि, जिसमें किसी पशु के जरा भी गड़बड़ हो तो फौरन मालूम हो जाये।

(५) हमेशा ही और खास कर ऐसे समय तो अवश्य ही ढोरों को कोई गला-सड़ा चारा-दाना कदापि नहीं खिलाना चाहिए क्योंकि बहुत-सी छूत की बीमारियाँ गली-सड़ी चीजें खाने और सील नमी, तरी में रहने से जल्दी होती हैं।

(६) ऐसे समय जबकि आस-पास बीमारी फैली हो अपने ढोरों को उन ताल-तलैयों का पानी नहीं पिलाना चाहिए जहाँ कि दूसरों के ढोर पानी पिया करते हैं और उस नहर या नदी का पानी भी नहीं पिलाना चाहिए जो बीमारी के इलाके में से गुज़र कर आती है। अपने घर के पास के कुएँ में से पानी खींचकर अपने ढोरों को पिलाना चाहिए। अक्सर ऐसे समय पानी द्वारा भी बीमारी फैल जाया करती है।

(७) बीमारी के इलाके से अपने यहाँ खाल और चमड़ा नहीं लाना चाहिए क्योंकि छूत की बीमारी से मरे हुए ढोरों की खाल व चमड़े से बीमारी बड़ी जल्दी फैलती है।

(८) डाक्टर से अपने ढोरों को टीका लगवा लेना चाहिए। सरकारी ढोरों के डाक्टर विना किसी क़िस्म की फीस लिए इत्तिला मिलते ही फौरन टीका लगा जाते हैं। टीका लगवा देने पर फिर टीका लगे ढोर को वह बीमारी जितने दिन तक उसकी (टीके की) मियाद होती है उतने दिन तक और बाज़ बीमारी हमेशा के लिए नहीं होती। यदि एक बार ढोर के छूत की बीमारी लग जाय तो फिर उसका अच्छा होना मुश्किल होता है। इसलिए अपने ढोरों के टीका तो अवश्य लगवा लेना चाहिए, इसमें कोई हर्ज की बात मालूम नहीं देती।

(९) यदि उपरोक्त सब बातों का ख़याल रखते हुए भी आपके ढोरों में कोई जानवर बीमार हो जाय तो उसे फ़ौरन अच्छे ढोरों से अलग कर देना चाहिए। अलग जगह में रखकर देखना चाहिए कि उसको क्या बीमारी हो गयी है? यदि किसी छूत की बीमारी का संदेह हो तो गाँव के दक्षिण और उत्तरी हिस्से में छूत की बीमारीवाले अहाते में ले जाकर उसे रखना चाहिए और उसका इलाज व सेवा-टहल करनी चाहिये ताकि गाँव के या मालिक के अन्य जानवरों में वह बीमारी न फैले।

(१०) छूत की बीमारी से मरे हुए जानवर की खाल कभी नहीं उतारनी चाहिए। उसको जहाँतक हो जला देना चाहिए अन्यथा ३ फीट गहरा गड्ढा खोदकर गाड़ देना चाहिए और इसी प्रकार उसके रहने के स्थान का गोबर, मूत्र, बुहारन, उसकी झूठन इत्यादि भी कभी किसी काम में नहीं लेनी चाहिए। उसको भी जला देना या गहरा गड्ढा खोदकर गाड़ देना चाहिए। प्रायः ज़मींदार चमारों को खालों का ठेका दे देते हैं और वे छूत से मरे हुए जानवरों की भी खाल निकाल लेते हैं। इस कारण गाँव में छूत फैल जाती है। अक्सर यही छूत की बीमारी फैलने का कारण हो जाता है।

यदि सम्भव हो तो गाँव के दक्षिण अन्यथा उत्तर की ओर जहाँ वर्ष के ज्यादा समय में हवा उधर से गाँव की तरफ़ न आती हो बीमार मवेशियों के लिए गाँव की पंचायत की ओर से करीब ५०×५० फीट का एक अहाता (घेर) बनवा देना चाहिए। उसमें ५-६ जानवरों के रहने के लिए एक कोने में

पच्छिम की ओर एक १४ फीट चौड़ा, ४० फीट लम्बा छप्पर होना चाहिए जो पूर्व की ओर बिलकुल खुला रहे। उसके फर्श का ढाल पूर्व की ओर होना चाहिए। छप्पर में दीवार की ओर हर एक जानवर के लिए दो मिट्टी की नाँदें मिट्टी की ऊँची चबूतरी बनाकर उसमें लगा देनी चाहिएँ जिनमें से एक खाने के लिए और दूसरी पानी पीने के लिए रहे। छप्पर के आगे अर्थात् पूर्व की ओर जिधर से बिलकुल खुला है आवश्यकता हो तो बाँस का टट्टा हवा रोकने को रात को या दिन को लगाया जा सकता है। उसी अहाते में दक्षिण की तरफ दो-एक कोठड़ियाँ बनाई जा सकती हैं जिसमें बीमार जानवरों के इलाज का सामान रखा जा सके और सेवा-टहल करनेवाले रह सकें! अहाते का दर्वाजा पूर्व की ओर होना चाहिए। चौक के बीच में दीवार से पंद्रह-पंद्रह फीट के फासले पर दो या चार पेड़ हो सके तो नीम के या फिर कोई और अच्छी छाँयावाले लगाये जा सकते हैं।

गाँव में जगह की ऐसी कोई कमी नहीं रहती। अहाते की दीवार कच्ची होनी चाहिए जो पंचायत के ज़रिए गाँव-वाले अपने आप ही बिना कुछ खर्च के बना सकते हैं। इसी प्रकार अहाते में वृक्ष भी लगाये जा सकते हैं। कूण्ड या नाद कुम्हार के यहाँ से आ जायगी। लकड़ी या बाँस छप्पर के लिए गाँव की शामलात धरती के वृक्षों से या बन में से ला सकते हैं। छप्पर के लिए फूस गाँव में काफ़ी होता है। उसको बनाने में, गाँव के चमारों से या अन्य जो आदमी उस काम को जानते

हों उनसे मदद लेनी चाहिए। साधारण मजदूर के काम में गाँव के अन्य सब आदमियों को हाथ बटाना चाहिए। मेरे खयाल से थोड़ा-बहुत लोहा, बान या अन्य कोई चीज भी उपरोक्त चीजों के अलावा चाहेगी तो वह भी गाँव में ही प्राप्त हो सकती है अन्यथा उसपर जो-कुछ थोड़ा-बहुत खर्च आवेगा वह इतना कम होगा कि एक-दो आना या सेर-दो सेर अनाज प्रति घर भी इकट्ठा किया जाय तो पूरा हो सकता है। गाँव में जितने भर भी मजदूर पेशेवाले (Professional) आदमी रहते हैं उनका गुजारा तो गाँव के काम से ही होता है फिर गाँव के इस पंचायती काम को बिला किसी उजरत के करने में उनको क्या उज्र हो सकता है? गाँव की चौपाल में तो बहुत-कुछ करना पड़ता है परन्तु इसमें तो उसके मुकाबले में कुछ भी नहीं करना पड़ता। गाँव के आदमियों का सबमें बेशकीमती धन उनके ढोर ही हैं। उत्तरीय भारत में ढोरों को धन कहकर पुकारते ही हैं। असल में देखा जाय तो गाँववालों के लिए तो ढोर उनके आदमी से भी बेशकीमत हैं। तो क्या वे सब मिलकर अपने इतने बेश कीमत धन को बचाने के लिए इतना काम भी नहीं कर सकेंगे? मेरे खयाल से तो केवल उनके इधर ध्यान देने की ही बात है। यदि सब लोग इस बात पर गौर करें तो सभी गाँव के धन को बचाना जरूरी समझ कर इस कार्य को प्रसन्नता से करेंगे।

छूत की बीमारियाँ बहुत हैं। सब बीमारियाँ हर एक जगह नहीं होतीं इसलिए जो प्रायः भारतवर्ष में बहुतायत से होती हैं उन्हींका हम नीचे जिक्र करेंगे।

(१) माता या रिंडरपेस्ट (Rinderpest)
(२) ज़हरी बुखार या एन्थरेक्स (Anthrax)
(३) लँगड़ा बुखार या ब्लैक क्वार्टर (Black quarter)
(४) गलघोटू या हेमरेजिक सेप्टीसीमिया (Haemorrhagic septicimia or Alignant soar throat)
(५) तपैदिक़ या ट्यूबरक्लोसिस (Tuberculosis)
(६) फेफड़े का बुखार या प्लोरो निमोनिया (Contagious Pleuro pneumonia)
(७) सूखा या जोन्स डिज़ीज़ (John's disease)
(८) खुरमुँह की बीमारी या फुट एन्ड माउथ डिज़ीज़ (Foot and mouth disease)
(९) छून से हमल गिरना या कन्टेजियस एबोर्शन (Contagious abortion)
(१०) छूत से खूनी पेशाब आना या रेड वाटर (Red water)
(११) दुध का बुखार या मिल्क फीवर (milk fever)
(१२) चेचक या काउ पॉक्स (Cow pox)
(१३) गज-चर्म या मेन्ज (Mange)
(१४) खुजली (Khujli)
(१५) दाद या रिंगवर्म (Ring worm)
(१६) कीड़ों के दुम्बल और मूँजे या मनिया फूटना या वारबल फ्लाईज़ (Warble flies)
(१७) जूँ या लाइस (Lice)

इनमें से पहली सात बीमारियाँ ज्यादा खतरनाक बीमारियाँ हैं। यदि ये बीमारियाँ किसी जानवर को हो जायें तो वह भाग्य से ही बच सकता है। उसका इलाज अवतक जो मालूम हो सका है वह टीके के अलावा अन्य कोई कामयाव नहीं पाया गया। ऐसी बीमारी हो जाने पर उस बीमार जानवर के वचाने की तो कोशिश करनी ही चाहिए उससे अधिक ऐसी बीमारी से अपने अच्छे जानवरको वचाने का प्रयत्न करना चाहिए। उनके वचाने के उपाय हमने ऊपर लिख दिये हैं। सव बड़ी सावधानी से अमल में लाने चाहिएँ।

छूत की बीमारियों में से ८, ९, १०, ११, १२, वीं साधारण खतरनाक बीमारियाँ हैं जिनका इलाज यदि एहतियात से किया जाय तो जानवर अच्छा हो सकता है।

इनके अलावा कुछ छूत की बीमारियाँ ऐसी हैं जो खतर-नाक नहीं हैं और उनका इलाज आसानी से हो सकता है। वे १३, १४, १५, १६, १७ वीं हैं। इनके सबके लक्षण और इलाज का तरीका आगे दिया जाता है।

(१) माता या रिन्डरपेस्ट (RINDER PEST)

(इसके अनेक नाम हैं जैसे माता, चेचक, वेधन, घोल, भवानी, देवी, सीतला, छेरा, दुख, पोकनी)

यह बीमारी ढोरों में अचानक दिखलाई दे जाती है और वड़ी जल्दी फैलती है। इसकी छूत प्रायः खून, लार, गोवर, विछावन जूठा चारा और मरे ढोर की खाल खींचने से फैलती है। पहाड़ी

इलाक़े में मैदान में रहनेवालों की अपेक्षा इसका अधिक असर होता है। एक दफ़ा ढोरों में यह बीमारी फैलने पर इसका हटाना बड़ा कठिन हो जाता है और जबतक कोई खास कार्यवाही न की जाये साधारणतया ६०-७० फी सदी जानवर पहाड़ी इलाक़े में और ४०-५० फी सदी जानवर मैदानी इलाक़े में मर जाते हैं। एक बार किसी जानवर के यह बीमारी हो जाती है और वह उसको झेल जाता है तो फिर ऐसा देखने में आया है कि जिन्दगी भर उसके यह बीमारी नहीं होती।

पहचान—आरम्भ में ढोर को बुखार आता है जो कि १०५° तक हो जाता है और ढोर काँपने लगता है। कमर धनुष जैसी मुड़ जाती है। भूख बन्द हो जाती है और अकसर कब्ज़ होने के चिन्ह भी दिखाई देते हैं। ३ या ४ रोज़ तक बुखार बढ़ता रहता है। इसके खास चिन्ह हैं—तीसरे-चौथे दिन कमर का धनुष जैसा मुड़ जाना, सिर का एक तरफ़ गिरना, आँखों से पानी गिरना, और गीड़ आना, जीभ पर छोटे-छोटे छाले दिखाई देना और मुँह में बदबू आना। ज्यों-ज्यों जानवर की हालत खराब होती जाती है दस्त लगने आरम्भ हो जाते हैं जिसमें बदबूदार गोबर के साथ आँव जैसी लुआबदार चीज़ अकसर खून के साथ दिखायी देती है। साँस भारी हो जाता है। जानवर से उठा नहीं जाता। आठ-दस रोज में मर जाता है। यह हालत २०-२१ रोज़ तक भी जारी रह सकती है।

इलाज—इस बीमारी का माकूल इलाज टीका लगवाना ही है। अच्छे जानवरों के 'गोट वीरस या सीरम साइमल्टेनियस मेथड'

(GOAT VIRUS OR SERUM SIMULTANEOUS METHOD) से रिंडरपेस्ट का टीका लगवा देने से फिर जन्म भर यह बीमारी नहीं होती।

खान-पान—मुलायम चारा देना चाहिए। इसके अलावा गेहूँ, बाजरा इत्यादि का दलिया, चोकड़ और बहुत खराब हालत में चावल का माँड और दूध देना चाहिए। ताजा कुए का पानी पिलाना चाहिए।

दूसरी हिदायतें—बीमार होते ही अच्छे जानवरों से बीमार जानवर को फौरन अलग कर देना चाहिए और यदि छूत के बीमार जानवरों के लिए कोई खास जगह गाँव में मुकर्रर हो तो वहाँ, अन्यथा गाँव के बाहर अपने खेत में किसी पेड़ के नीचे जानवर को रखना चाहिए और वहाँ सिवाय जानवर की सेवा-टहल करनेवाले के अन्य आदमी या जानवर की आमदरफ्त नहीं होनी चाहिए। यदि जानवर मर जाय तो वहीं खेत में खूब गहरा गड्ढा खोदकर उसको उसकी भूठन व गन्दी मिट्टी समेत उसे उसमें रखकर उसपर कम से कम दो या डेढ़ फ़ीट मिट्टी ढककर ज़मीन हमवार कर देनी चाहिए। सेवा-टहल करनेवाले आदमी को बिना सोडे, साबुन या नीम के पत्ते के पानी से हाथ-पैर और कपड़े धोये अच्छे ढोरों के पास नहीं जाना चाहिए।

(२) ज़हरी बुखार या एन्थरेक्स (ANTHRAX)

(बावला या जहरी बुखार)

यह बीमारी भी खून में बीमारी के कीटाणु प्रवेश होने

से होती है। यह इतनी जल्दी फैलती है कि एक-आध जानवर मरा ही दिखाई देता है। यह बीमारी बड़ी खतरनाक होती है और इससे जानवरों को बचाना बड़ा कठिन है।

पहचान—अचानक एक-दो जानवरों का मरा पाना तथा उनके मुँह और नाक से तथा गोबर के रास्ते से काला खून निकलना। खाल का रंग नीला व काला-सा हो जाना तथा मृत शरीर का जल्दी से सड़ना आरम्भ हो जाना। यदि ऐसा मिले तो समझना चाहिए कि उपरोक्त बीमारी फैल गयी है ऐसी हालत में अच्छा तो यही है कि तन्दुरुस्त जानवरों को वहाँ से हटा दें और यदि यह सम्भव न हो तो बीमार जानवर को ही अच्छे जानवरों से अलग कर दें और इसके नीचे की ४-५ अंगुल मिट्टी तथा वहाँ का मल-मूत्र कूड़ा-कर्कट और झूठन इत्यादि हटाकर गहरे गड्ढे में गाड़ दें या जला दें। उस स्थान पर नयी मिट्टी डालकर और चूना इत्यादि छिड़ककर या थोड़ी-सी सूखी घास जलाकर शुद्ध कर लें। यदि सम्भव हो तो कुछ अर्से तक वहाँ तन्दुरुस्त जानवर को न बाँधें। इस बीमारी में जानवर के बीमार होते ही उसकी हालत खराब होनी आरम्भ हो जाती है। तेज़ बुखार हो जाता है। नब्ज मन्दी पड़ जाती है और खाल की चमक जाती रहती है। रंग मैला नीला-सा होना आरम्भ हो जाता है और वह चिल्लाने लगता है जैसे उसको बड़ा भारी दर्द हो रहा हो और डर गया हो। उसकी आँखें मुरझा जाती हैं। चन्द घण्टों में ही जानवर की हालत बहुत ज्यादा खराब हो जाती है। बाज दफे गोबर काले खून से सना हुआ होता है, और

पेशाब भी गहरे रंग का होता है। जानवर बेहोश हो जाता है, और मर जाता है। कभी-कभी यह हालत एक-दो रोज़ तक बनी रहती है।

खानपान—इस बीमारी में जानवर की हालत आरम्भ से ही खतरनाक होती चली जाती है इसलिए खाना-पीना तो जानवर का बिल्कुल ही छूट जाता है। लेकिन यदि वह खा ले तो उसको मुलायम हरी व सूखी घास देनी चाहिए, अन्यथा पतला दलिया व दूध पिलाने की कोशिश करनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—इस बीमारी से अच्छे जानवरों को बचाने के लिए यह बहुत जरूरी है कि जिस हिस्से (इलाके) में यह बीमारी हो गई हो वहाँ अपने तन्दुरुस्त जानवर न जाने देने चाहिएँ और जिस हिस्से (इलाके) में जानवर चरते हैं यदि वहाँ कोई जानवर बीमार हो जाय तो वहाँ भी जानवर ले जाकर बन्द कर देना चाहिए। मरे हुए जानवर की खाल तो खींचनी ही नहीं चाहिए बल्कि यदि जानवर खुले मैदान में मरा हो तो उसको उसी स्थान पर जला देना चाहिए और उसके नीचे की ५-६ अंगुल मिट्टी, घास-पात या उसके मुँह, गोबर के रास्ते या और कहीं से जो खून, गन्दा माद्दा आदि निकला हो उन सबको इकट्ठा करके उसके साथ ही जला देना चाहिए। यदि जलाना बिल्कुल असम्भव हो तो बहुत गहरा गड्ढा खोदकर उसको गाड़ देना चाहिए और दो-तीन फुट मिट्टी उसके ऊपर डालकर इकसार कर देना चाहिए। देखिए जानवर को जहाँ वह

मरा है उसको फूँकने या गाड़ने की जगह तक लाने में रास्ते में उसका खून आदि न गिरे। मरे हुए स्थान से जानवर को हटाने के पहले ही उसके मुँह नाक में और पैखाने के रास्ते पर घास या कपड़े इत्यादि की डाट लगाकर उसके ऊपर कपड़ा या पुरानी बोरी बाँधकर या उस हिस्से पर गीली मिट्टी लगाकर ढक या बाँध देना चाहिए ताकि रास्ते में खून या गन्दा माद्दा गिरने का अन्देशा न रहे।

(२) लँगड़ा बुखार या ब्लैक क्वार्टर (Black Quarter)

(इसके अनेक नाम हैं जैसे लँगड़ी, चेचड़ा, गोली चिरचिरा, फलसूजा)

यह बीमारी भी खून में कीटाणुओं द्वारा विकार पैदा हो जाने से ही होती है।

पहचान—इस बीमारी से पीड़ित पशु अन्य जानवरों से अलग खड़ा दिखलाई दिया करता है। चलाने से लँगड़ा मालूम देता है जैसे कोई लकवा मार गया हो और थोड़ी देर बाद गिर जाता है। सिर एक तरफ गिरा देता है, कान लटक जाते हैं। जहाँ से लंगड़ाता है उसके आस पास सूजन दिखाई देती है। इस सूजन को जब हाथ से दबाया जाता है तो कर-कर की आवाज़ मालूम देती है और ऐसा मालूम देता है कि इसमें हवा भरी है। तेज़ बुखार हो जाता है। जल्दी-जल्दी साँस लेता है और दाँत पीसता है। अक्सर २४ घंटे के अन्दर जानवर मर जाता है।

इलाज—इसका माकूल इलाज तो ढोरों के डाक्टर को

बुलाकर टीका (Vaccine) लगवाना है परन्तु यदि यह न हो तो नीम का तेल या और कोई कीड़ों (कीटाणुओं) को नष्ट करनेवाली तेज दवा सूजनवाली जगह में खाल चीरकर पहुँचानी चाहिए। यदि वक्त पर यह इलाज किया जाय तो सम्भव है कि जानवर बच जाय।

खान-पान—और बीमारी के बीमार जानवरों की तरह इसको भी मुलायम चारा व दूध-दलिया वगैरा तथा कुएँ का ताजा पानी पीने को देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—बीमार होते ही जानवर को अन्य जानवरों से अलग करदें और उसकी झूठन, गोबर, पेशाब, बिछावन व बैठने के स्थान की मिट्टी इत्यादि को जला दिया करें या गाड़ दिया करें उसकी खाल नहीं खींचनी चाहिये।

(४) गलघोंटू या हेमरेजिक सेप्टीसीमिया

(Haemorrhagic Septicimia or Alignant soar throat

(इसके अनेक नाम हैं जैसे गलघोंटू, घुटरवा, घुड़खा, घटरीन, घुरवा,)

यह एक प्रकार की खून की बीमारी है जो कीटाणुओं द्वारा बहुत ही जल्दी फैलती है। प्राय: तगड़े और नौजवान जानवरों को अधिक सताती है। यह तराई या शीलवाली जमीन में रहनेवाले जानवरों को तथा वर्षा ऋतु में या उसके बाद अकसर होती है और जो जानवर सड़ी-गली घास व तराई में पैदा हुई पनियल घास खाते हैं उनमें जल्दी फैलती है।

पहचान—यह बीमारी इतनी जल्दी फैलती है कि जहाँ यह बीमारी फैल जाय वहाँ एक-दो जानवर मरा हुआ मिले तो कोई अचरज की बात नहीं। इस बीमारी में बहुत तेज बुखार होता है जो कभी-कभी तो १०७ से १०६ डिगरी तक पहुँच जाता है। जानवर बिल्कुल सुस्त हो जाता है। गले पर गर्म, सख्त तथा बड़ी दुखदाई सूजन दिखाई पड़ती है। उसको उँगलियों से दबाया जाय तब भी नहीं दबती। बाज़ दफा ऐसा प्रतीत होता है कि जानवर के गले में कोई सख्त चीज अटक गई है। नाक से गन्दा माद्दा निकलता है। जानवर रुक-रुककर साँस लेना आरम्भ कर देता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो जानवर का साँस घुट रहा हो। जानवर गिर जाता है और इतना कमज़ोर हो जाता है कि उठ नहीं सकता। एक-दो रोज़ में मर जाता है। अखीर समय में दस्त भी आरम्भ हो जाते हैं इस बीमारी और रिंडरपेस्ट (Rinderpest), एन्थरेक्स (Anthrex) औरब्लेक क्वार्टर (Black quarter) में अन्तर है। रिंडरपेस्ट में मुँह में छाले होते हैं और एन्थरेक्स में खून का रंग बदल जाता है। इसम खून का रंग नहीं बदलता और गले पर सूजन होती है जो उपरोक्त दोनों बीमारियों में नहीं होती। इसी प्रकार ब्लेक क्वार्टर में जो सूजन होती है वह दबाने से करकर बोलती है और दब भी जाती है परन्तु इसकी सूजन न तो आवाज़ करती है और न दबती है।

इलाज—यदि यह सन्देह हो कि किसी जानवर को यह बीमारी हो गई है तो फौरन अपने नजदीक के सरकारी अस्पताल से ढोरों के डाक्टर को बुलाकर जानवर के टीका लगवाना चाहिए।

इसके अलावा इस बीमारी का और कोई इलाज नहीं है।

खानपान—अन्य बीमार जानवर की तरह ही है।

अन्य हिदायतें—आसपास इस बीमारी के फैलने की खबर मिलते ही फौरन सब जानवरों के टीका लगवा देना चाहिए। इस बीमारी से मरे जानवर की खाल नहीं खींचनी चाहिए और जहाँतक हो उसे जला देना चाहिए और यह सम्भव न हो तो बहुत गहरा गाड़ देना चाहिए। यह बीमारी ढोरोंकी खाल खींचने से छूत द्वारा बहुत फैलती है।

यदि कोई जानवर इस बीमारी से अच्छा हो गया हो तो उसे १०-१२ दिन अच्छा होने के बाद तक अलग ही रखना चाहिए इसके बाद अच्छे ढोरों में मिलाना चाहिए।

तपेदिक या टयूबरक्लोसिस (Tuberculosis)

यह बीमारी भारतवर्ष के मैदानी हिस्से में बहुत कम मिलती है। अन्य देशों के मुकाबले में भारतवर्ष में बहुत कम होती है। पहाड़ी हिस्सों में या अन्य स्थानों में जहाँ जानवरों को बंद जगहों में रखते हैं यह बीमारी पाई जाती है।

पहचान—ऊपरी देख-भाल से जबतक जानवर बहुत अधिक इस बीमारी का शिकार न हो गया हो तब तक नहीं मालूम हो सकती। ज्यादह खराब हालत में प्राय: जो साधारण बीमारी के चिन्ह होते हैं वे देख पड़ते हैं और उसके खाँसी तथा रुक-रुककर साँस लेने की शिकायत होती है। इस बीमारी की परीक्षा टयुबरकोलीन टेस्ट (Tuber colin test) द्वारा वैटरिनरी डाक्टर से कराई जा सकती है। यही एक मानी हुई परीक्षा है

जिससे इस बीमारी का निश्चय रूप से पता लगाया जा सकता है।

इलाज—इस बीमारी का कोई माकूल इलाज अबतक नहीं मालूम हुआ है। इस बीमारी से बीमार जानवरको तन्दुरुस्त जानवर से अलग रखना चाहिए, ताकि दूसरे जानवरों में इसकी छूत न फैले।

खानपान—शीघ्र पचनेवाली खूराक थोड़ी-थोड़ी दिन में तीन-चार बार देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—बीमार जानवर को अन्य जानवरों से अलग रक्खें। उसकी भूठन, गोबर, पेशाब, बिछावन, कूड़ा कर्कट जला देना चाहिए या फिर बहुत गहरा गाड़ देना चाहिए। मरने पर खाल नहीं खीचनी चाहिए बल्कि लाश को ज्यों का त्यों गहरा गाड़ देना चाहिए।

फेफड़े का बुखार या प्लोरो-नियोमोनिया

(Contagious Pleuro-pneumonia)

(इसे फेफड़े का मर्ज या छूतदार नियोमोनिया भी कहते हैं)

यह बीमारी बीमार जानवर को छूने या उसके जख्म, फोड़ा-फुन्सी; इत्यादि के गन्दे मादे के लगने से तथा बीमार जानवर के मुँह के सामने साँस लेने से फैलती है। इस बीमारी में फेफड़ों पर असर होता है।

पहचान—भूख बन्द हो जाना, दूध घट जाना, बराबर कायम रहनेवाला, हलका बुखार हो जाना सूखी खाँसी, खास करके गोशाला के बाहर पानी पीने के समय होना, मवाद की

तरह से नाक से सिनक आना इसके लक्षण हैं। एक-दो सप्ताह के बाद साँस भारी हो जाता है और जानवर टसके के माफिक साँस लेता है और धीरे-धीरे अधिक बीमार हो जाता है। बैठ जाता है फिर उठ नहीं सकता तथा पैर फैला देता है। पैर पीटने लगता है जैसे कि बड़ा भारी दर्द हो और मर जाता है।

इलाज—बुखार के लिए जो साधारण दवाई दी जाती है वह देनी चाहिए। नीम, सफेदा, मरुआ इत्यादि के पत्ते या तारपीन का तेल डालकर पानी में उबालिए और उसकी भाप में साँस लेने दीजिए ताकि वह साँस के जरिए फेफड़ों तक पहुँच-कर फेफड़ों को तन्दुरुस्त करने में मदद करे। और तारपीन का तेल १० हिस्से तिल के तेल में मिलाकर छाती पर मालिश की जावे।

खान-पान—मुलायम और दस्तावर खाने-पीने की चीजें दीजिए जैसे चाय, दलिया, चोकड़ व दूध, पीने को गरम गुनगुना पानी।

अन्य हिदायतें—बीमार जानवर को तन्दुरुस्त जानवरों से फौरन अलग कर दीजिए। इस बीमारीवाले जानवर का दूध जहाँतक हो पीना नहीं चाहिए। लाचारी हालत में उसको आध घंटे तक खूब उबालकर या उसका घी इस्तैमाल करना चाहिए। जानवर पर झूल डाले रखिए तथा उसको हवा के झोंके और सरदी से बचाइए।

(७) जोन्स डिज़ीज़ (John's Desease)

यह बीमारी भी तपेदिक जैसी ही है। इस बीमारी का कोई

इलाज नहीं है। धीरे-धीरे जानवर कई महीनों में दुख पाकर मरता है। इस बीमारी में प्रायः दस्तों की शिकायत रहती है। कमर ऊपर को मुड़ (Humped) जाती है। सुस्ती छा जाती है। सिर और कान गिरे हुए दिखाई देते हैं। करीब करीब तपेदिक (Tuberculosis) के सभी चिन्ह इस बीमारी में होते हैं।

इलाज—यह बीमारी होते ही जानवर को दूसरों से अलग कर देना चाहिए और उसकी देख-भाल दूसरे बीमार जानवरों की भाँति करनी चाहिए।

खान-पान तथा अन्य हिदायतें—अन्य बीमार जानवरों के माफिक।

नोटः—छूत के उपरोक्त सात भयंकर रोगों में यदि नीचे लिखी दवाइयाँ दीजावें, तो मेरे एक मित्र का विचार है कि बहुत हद तक आराम हो सकता है—

(१) आक, मदार की जड़ की छाल ɾ=
　　काली मिर्च ɾ—
　　घी ɾ।—

छाल व मिर्चों को खूब बारीक पीसकर घी में घोलकर नाल से दें। यह दवा दिन में तीन बार देनी चाहिए।

(२) रीठे के ऊपर के छिलके जो कपड़ा धोने के काम आते हैं ɾ—
　　घी ɾ।—

छिलकों को बारीक पीसकर घी में घोल नाल से दिन में तीन बार दें।

(३) निर्वसी काली ɾ=
　　घी ɾ।—

निर्विसी को बारीक पीस कर घी में मिला लें और दिन में तीन बार नाल से दें ।

(८) खुर-मुँह की बीमारी या फुट एन्ड माउथ डिज़ीज़

(Foot and mouth disease)

(इसके अनेक नाम हैं; जैसे खुरिया, खसीटा, खुरका, खुरा, रोड़ा)

यह बीमारी बड़ी भयानक बीमारियों में से है क्योंकि इसकी छूत हवा द्वारा भी फैल जाती है और एक बार ढोरों में फैल जाने पर इसका निकलना मुश्किल हो जाता है। इस बीमारी में अगर लापरवाही होती है तो जानवर के मर जाने का भी डर रहता है। होशियारी से इलाज व सेवा-टहल करने से बच तो जाता है परन्तु बहुत कमजोर हो जाता है। दूध देनेवाले जानवर का दूध एक दम कम हो जाता है और काम करनेवाले जानवर शक्तिहीन हो जाते हैं। पिछली ताकत प्राप्त करने में काफी समय लग जाता है।

पहचान—जानवर के मुँह से लार और झाग आता दिखाई देना, जानवर के पिछले पैरों का काँपना और जानवर का खुरों के बीच के हिस्से को चाटना, चलने के समय लँगड़ाना, भली भाँति खूराक का न खा सकना और जबड़ों के पास छालों का होजाना इसकी पहचान है। इस बीमारी में बुखार भी हो जाता है। ज्यों ज्यों बीमारी बढ़ती जाती है जबड़ों के छाले तमाम मुँह और ज़बान पर फैल जाते हैं। इसी प्रकार खुरों के बीच में जख्म हो जाते हैं और शीघ्र ही यथोचित इलाज न किया जाय तो

उनमें कीड़े पड़ जाते हैं। ज्यादा बीमारी बढ़ने पर जानवर का चलना-फिरना तो दूर रहा खड़ा भी नहीं रह सकता और उसका खाना-पीना बिल्कुल बन्द हो जाता है। बाज़ दफा आदमी इस बीमारी में और रिंडरपेस्ट के पहचानने में गड़बड़ा जाता है। रिंडरपेस्ट (Rinderpest) में केवल मुँह में छाले होते हैं और दस्त आरम्भ हो जाते हैं किन्तु इस बीमारी में ऐसा नहीं होता। इसमें सिर्फ मुँह में और खुरों में छाले होते हैं। इसके छाले हमेशा पीली-सी झिल्ली से ढके रहते हैं। यह एक खास पहचान है। अन्य बीमारियों के छाले आम तौर से लाल होते हैं।

इलाज—आम तौर से जहाँ एक ही जगह अधिक जानवर हों उनके दरवाजे पर या गाँव में से ढोर आने जाने के जो खास रास्ते हैं उनपर पैर-डुबकी या फुटबाथ (Foot-bath) बनवा देने चाहिएँ ताकि जो जानवर वहाँ से गुजरें उनके पैरों में दवा लग जाय और उनके खुरों के बीच में दवा भली प्रकार प्रवेश कर जाय। जहाँ पैर-डुबकी बनवाना सम्भव न हो तो बीमार पशु को जहाँ कहीं कीचड़ ज्यादा हो उसमें से जानवर गुजारने से भी ठीक रहता है। परन्तु पैर-डुबकी के बदले यह चीज नहीं हो सकती।

पैर-डुबकी(Footbath) बनवाने की विधि—जहाँ से जानवर निकलते हों उस दरवाजे पर या रास्ते पर उसकी पूरी चौड़ाई पर ८ या १० इन्च गहरा पक्का चौबच्चा (स्थान) इतना लम्बा बनवा दें कि पशु उसे कूदकर पार न कर सके बल्कि उसमें पैर रखकर दूसरी तरफ जा सके। यह जितनी लम्बी होगी उतना ही अच्छा होगा,

कम-से-कम १०-१२ फ़ीट तो होनी ही चाहिए। इसमें फिनाइल या कीड़े मारने की कोई अन्य दवा पानी में मिलाकर भर दें। यह पैर-डुबकी हर समय बनी रहनी चाहिए। जब बीमारी की कोई आशंका न हो तो इसमें रेत-मिट्टी भरकर इकसार करदें और जब बीमारी फैलनी शुरू होजाय तो इसे साफ करके इसमें पानी भरकर उसमें फिनाइल या अन्य कोई कीड़े मारनेवाली दवा घोल देनी चाहिए।

पैर-डुबकी के अलावा कीकर की छाल वग़ैरह के क्वाथ से दोनों समय साँझ-सवेरे बीमार ढोरों के खुरों और मुँह को साधारण पिचकारी से या स्प्रे पम्प (spray pump) से धोना चाहिए। अगर किसी के पास लोहे या पीतल की पिचकारी न हो तो थोथे बाँस की पिचकारी बनवाकर या कपड़ा डुबोकर उससे धो दे।

कीकर की छाल का क्वाथ बनाने की विधिः—

कीकर या बबूल की छाल	४—छटाँक
जवासा का हरा पौदा	१—छटाँक
फिटकरी	१।—छटाँक
हीरा कसीस	॥—छटाँक
कत्था	॥—छटाँक

इन सबको किसी लोहे के बरतन में करीब ४ सेर पानी में उबाला जाय और जब पौना पानी रह जाय तो उसको छानकर ज़रा-सा कपड़े धोने का सोडा मिला देने से उपरोक्त क्वाथ बन जाता है। यदि उपरोक्त चीज़ों में से कोई चीज़ न मिले तो जो-जो चीज़ें मिलें उन्हींको पानी में उबालकर ज़रा-सा सोडा डालकर

काम में लेने से भी लाभ होता है।

मुँह और पैर में अगर जख्म अधिक हो गये हों तो शहद या शीरा मिले तो अच्छा है अन्यथा तिल या नारियल के तेल में या घी में जरा-जरा सी फिटकरी, कत्था, फुलाया हुआ सुहागा और जरा-सा सोडा मिलाकर लेप कर देना चाहिए किन्तु लेप करने से पहले उपरोक्त क्वाथ से जख्मों को भली प्रकार धो देना चाहिए ताकि जख्मों के ऊपर का पीला हिस्सा दूर हो जाय और जख्म लाल और साफ दिखाई दें। खुरों के बीच में प्रायः गोबर या मिट्टी इत्यादि आजाने से दवा का असर नहीं होता, इसलिए दवा लगाने के पहले जख्मों को उपरोक्त क्वाथ से भली भाँति धोकर और दवा लगाकर कपड़े या टाट की पट्टी से इस प्रकार बाँध कर ढक देना चाहिए कि मिट्टी, गोबर इत्यादि जख्म तक न पहुँच सकें। इस प्रकार दोनों समय दवा लगानी चाहिए। खुर में चाहे तो उपरोक्त दवा यानी सुहागा, कत्था, फिटकरी, सोडा, तिल के तेल में मिलाकर लगाइए या जख्म अच्छा करने के लिए जो मल्हम या अन्य दवा लगाई जाती है वह लगाइए यदि कीड़े पड़गये हों तो कीड़े मारने की दवा से कीड़े मार कर फिर जख्म अच्छा करने की दवा लगाकर जख्म अच्छा कीजिए।

खान-पान—मुलायम बारीक चारा देना चाहिए। यदि मुमकिन हो तो हरा चारा दें। गर्मी पैदा करनेवाली व सख्त चीजें, जो आसानी से न चबाई जा सकें, नहीं देनी चाहिएँ। कुएँ का ताजा पानी पिलाना चाहिए। जिन जानवरों की जबान (जीभ)

ज्यादह खराब हो गयी है उनको मुलायम हरा चारा जैसे बरसीम कच्ची जई या अन्य कोई चीज देनी चाहिए। दूध, चावल इत्यादि का माँड या काँजी, व पतला दलिया खिलाना चाहिए। अगर वे ये भी न खा सकें तो उन्हें नाल द्वारा पिला देना चाहिए। यह खयाल रखना चाहिए कि खाने-पीने की कमी से जहाँतक हो जानवर कमज़ोर न होने पावे।

अन्य हिदायतें—कोई भी जानवर इस रोग से बीमार हो जाय तो उसे फौरन दूसरे जानवरों से अलग कर देना चाहिए। उसे छूत की बीमारियों के स्थान पर या गाँव से बाहर खेत में पेड़ के नीचे रखना चाहिए। यह बीमारी हवा से भी फैलती है इसलिए जहाँ तक हो गाँव के या अच्छे जानवरों के दक्षिण या उत्तर में या जिधर की हवा हो उसके दूसरी ओर रक्खें ताकि अच्छे जानवरों को उस ओर की हवा न लगे। बीमारी आरम्भ होने के १५ या २० रोज़ बाद तक अगर ढोरों में बीमारी न रोकी जा सके अर्थात् अच्छे ढोरों में बीमारी ज्यादह फैलती जाय तो इसके माने यह हैं कि बीमारी रोकना नामुमकिन है। ऐसी हालत में इस बीमारी से बीमार और अच्छे सब ढोरों को आपस में मिला देना ही अच्छा होता है। इससे बीमारी बहुत दिन तक जारी नहीं रहती। बल्कि जिन ढोरों को बीमार होना है वह बीमार होकर जल्दी से निबट जाते हैं। इस बीमारी की मियाद २१ दिन की होती है। जानवर को अच्छा हो जाने पर भी थोड़े दिन तक अच्छे जानवरों से अलग रखना चाहिए।

(६) छूत से हमल गिरना या कन्टेजियस एबोर्शन।

(CONTAGIOUS ABORTION).

यह छूत का गर्भपात साधारण गर्भपात से बिल्कुल अलग बीमारी है। साधारण गर्भपात तो तेज़ दौड़ने से छलाँग लगाने से, लात इत्यादि चलाने से, चोट लग जाने इत्यादि बेढंगे तरीकों की हरकतों और व्यवहारों से या किसी विशेष गर्म चीज़ के खा लेने से होता है परन्तु छूत से गर्भपात इस बीमारी के कीटाणु का किसी तरह से गर्भाशय या बच्चेदानी में प्रवेश हो जाने से होता है। साधारण गर्भपात एक बार होकर रुक जाता है परन्तु छूत से गर्भपात की बीमारी एक बार होने पर जब तक इसका पूरा इलाज न हो जाय बराबर होता रहता है और अगर अहतियात न रक्खा जाय तो दूसरे ढोरों में भी फैल जाता है।

पहचान—गर्भालय तथा पेशाब की जगह सूजन का होना और समय के पहले ही बच्चे का गिर जाना गर्भपात के बाद जेल का भली प्रकार न गिरना, पेशाब बदबूदार होना, गंदा मादा निकलना और जानवर का सुस्त दिखाई देना इसके लक्षण हैं। गर्भपात की बीमारी और ढोरों में भी इस प्रकार दिखाई दे तो अच्छा तो यही है कि ढोरों के डाक्टर से इसकी परीक्षा करा ले। यदि छूत के गर्भपात की बीमारी हो तो उसका यथोचित इलाज करायें।

इलाजः—इस बीमारी का सबसे ज्यादा कामयाब

इलाज एन्टीकन्टेजियस ऐबोर्शन वेक्सीन (Anti-contagious Abortion Vaccine) दिलाना है। अगर इस इन्जेक्शन (सुई द्वारा खाल में दवाई पहुँचाकर इलाज करना) कराने से भी जानवर अच्छा नहीं होता तो उसके अच्छा होने की ज्यादा उम्मीद नहीं समझनी चाहिए। गर्भपात होने पर अगर जानवर जेल को दो-तीन दिन तक न गिरावे तो मीठे तिल के तेल में थोड़ा नीम का तेल या और कोई कीड़े मारनेवाली दवा मिलाकर हाथ में कोहनी तक चुपड़कर उसकी बच्चादानी में हाथ डालकर आहिस्ता-आहिस्ता छोटे-छोटे टुकड़े करके निकाल देने चाहिएँ। हाथ से जेल निकालने में यह ख़याल रखना चाहिए कि यदि जेल का कोई हिस्सा गर्भालय में चिपका हुआ हो तो जोर से नहीं खींचना चाहिए और नाखून इत्यादि से किसी प्रकार गर्भालय में खुरच न लगने पावे। इस प्रकार एक या दो या इससे अधिक बार हाथ डालकर धीरे-धीरे जेल निकालनी चाहिए। जिस रोज हाथ से जेल निकालने का काम आरम्भ किया जाय उस रोज तो दो-तीन बार गाय के गर्भालय को डूश द्वारा धोना चाहिए और बाद में रोज दो दफे दस-बारह रोज तक जब-तक जानवर का अन्दर का हिस्सा बिल्कुल साफ़ न हो जाय दोनों वक्त डूश देकर धोना चाहिए। डूश करने के बाद जो गंदगी व गंदा पानी, खून इत्यादि निकले उसे गाढ़ या जला देना चाहिए ताकि बीमारी की छूत दूसरे ढोरों को न लगे। डूस करने की तरकीब अन्यत्र देखिए।

खानपान—साधारण तन्दुरुत जानवरों को जो खूराक

दी जाती है वही गाय को देनी चाहिए। केवल यह ख़याल रखना चाहिए कि इस अर्से में कोई ज्यादा गर्म तासीरवाली और कब्ज करनेवाली चीज न दी जाय और गाय खाने-पीने की वजह से कमजोर न होने पावे।

अन्य हिदायतें—यदि आस-पास या अपने ढोरों में इस बीमारी के होने का ख़याल तो अपने यहाँ की सब गाय-भैंसों को और ८ महीने से ऊपर की सभी बछियाँ व बछड़ियों को एन्टी कन्टेजियस एब्रोशन (Anti-contagious Abortion) का टीका लगवा देना चाहिए और जिस जानवर का यह बीमारी होने का सन्देह हो, उस जानवर को फौरन अच्छे जानवरों से अलग जहाँ छूत के बीमार जानवर रक्खे जाते हैं; वहाँ या अन्य किसी जगह रखना चाहिए और उनके रहने के स्थान की मिट्टी, पेशाब, गन्दा माद्दा आदि हटाकर फर्श को बिल्कुल साफ़ करके उसपर चूना इत्यादि भली भाँति बिखेर देना चाहिए। गन्दी मिट्टी और वहाँ की जो गन्दगी हो इकट्ठी करके जला देनी चाहिए या बहुत गहरे गड्ढे में गाड़ देनी चाहिए। जिस ढोर को छूत से गर्भपात की बीमारी होने का शक़ हो उसको जहाँतक हो जबतक वह अच्छा न हो जाय लाचार को ३-४ माह तक तो गार्भिन हरगिज नहीं कराना चाहिए। जब गार्भिन करावे तब गाभिन करने के बाद साँड के मूतने की जगह को भली प्रकार नीम के पानी से धोकर नीम का तेल या कपूर और बीस हिस्से तिलका तेल या घी खूब अच्छी तरह मिलाकर चुपड़ देना चाहिए। ऐसी गाय को जिस साँड से

गाभिन करावे उस साँड से कुछ दिनों तक अच्छी गाय गाभिन न करावें।

(१०) छूत से खूनी पेशाब या रेड वाटर (Red water)

यह बीमारी भी कीटाणुओं द्वारा खून में विकार पैदा होने से होती है। इस बीमारी की छूत थनों द्वारा और उस मच्छर के काटने से जो बीमार जानवर को काटकर अच्छे जानवर को काटता है, होती है। इस प्रकार एक जानवर से दूसरे जानवर में फैलती है। गर्मी की वजह से अकसर जानवरों के पेशाब में खून आने लगता है। इससे इस बीमारी का कोई सम्बन्ध नहीं है पहचान के लिए ख़याल रखना चाहिए।

पहचान—जानवर को तेज बुख़ार हो जाता है। जल्दी-जल्दी साँस लेने लगता है। नब्ज़ कमज़ोर हो जाती है, आँखें तथा जीभ इत्यादि पीली पड़ जाती हैं जैसे पीलिया के रोगी की होती हैं। ऐसा भी देखने में आया है कि एक-दो रोज़ के बाद जानवर का बुख़ार उतर जाता है और शरीर ठण्डा हो जाता है। पेशाब के ज़रिए खून आता है और क़ब्ज़ हो जाता है। इसकी निश्चित पहचान तो खून की डाक्टरी परीक्षा कराने से होती है।

इलाज—इस बीमारी का इलाज नजदीक के ढोरों के डाक्टर को बुलाकर करवाना चाहिए। आमतौर से इस बीमारी में एक नीली दवा का जिसे ट्रिपन बिल्यु (Tripen Blue) कहते हैं इन्जेक्शन दिया जाता है।

खान-पान—अन्य दूसरे बीमार जानवरों की तरह।

अन्य हिदायतें—अन्य छूत की बीमारियों की तरह जानवर को बीमार होते ही फौरन दूसरे जानवरों से अलग करना चाहिए और अन्त हिदायतें भी उसके माफिक ही समझनी चाहिएँ।

दूध का बुखार या मिल्क फीवर

(Milk-fever)

यह बीमारी अधिक दूध देनेवाली, नौजवान और तगड़ी गायों को तीसरे या चौथे बियान के बाद होती है। बुड्ढे या पहले वियात जानवरों में नहीं होती।

पहचान—यह बीमारी व्याने के २४ घंटे बाद या एक-दो दिन बाद दिखलाई पड़ती है। बहुत-से जानवरों में पहले-पहल दूध दुहे जाने पर दिखलाई देती है। जानवरों को दीखना कम हो जाता है। आँखें चढ़ जाती हैं। मुँह से राल गिरने लगती है। जानवर सुस्त रहता है और खड़ा नहीं रह सकता, पशु एक करवट पड़ा रहता है। पैर पेट के नीचे सिकोड़ लेता है और सिर एक ओर को गर्दन के सहारे मोड़ लेता है। इसका ख़ास चिन्ह यह है कि यदि सिर को ठीक हालत में करते हैं तो वह फिर उसी हालत में कर लेता है। बुखार हो जाता है। पेशाब बन्द हो जाता है। दूध का स्रोत कम हो जाता है। जानवर सिर पटकता है और घबरा जाता है। थन सूज जाते हैं। यदि अच्छी तरह इलाज किया जाय तो घन्टों में आराम हो जाता

है अन्यथा जानवर थोड़ी देर में मर जाता है।

इलाज—पहले इस बीमारी में बहुत जानवर मर जाते थे परन्तु अब इसका माकूल इलाज मालूम हो गया है और अब ९० फी सदी जानवर इस बीमारी से बचाये जा सकते हैं। इस बीमारीवाले जानवर के थनों में से सब दूध निकाल लो कि उनमें ज़रा-सा भी दूध न रहे। अब एक बाइसिकल के वालटयूब को साइकिल की पिचकारी की नली में लगाकर साफ़ कर लो और नीम के तेल या कपूर मिले हुए तिल के तेल में खूब अच्छी तरह डालकर हिला-जुला दो ताकि खूब अच्छी तरह उसमें तैल लग जाय। फिर धीरे-धीरे उस नली को थन के सूराख में अन्दर चढ़ाकर भली प्रकार फिट कर दो। एक आदमी जिस थन में वालट्युए वाली नली लगाई है उसे एक हाथ से दबाकर थाम ले और दूसरा आदमी धीरे-धीरे जैसे बाइसिकल में हवा भरते हैं इस तरह हवा भरनी शुरू कर दे। पहला आदमी अपने बाएँ हाथ से तमाम बाक (udder) पर धीरे-धीरे मालिश करे ताकि हवा तमाम बाक में जज्ब हो जाय। इस प्रकार थन में हवा भरने के बाद थन भली प्रकार कपड़े की चौड़ी पट्टी या फीते से बाँध देने चाहिए ताकि थन से हवा बाहर न निकले और असर कर सके। आवश्यकता हो तो थोड़ा कपूर मिले या सादे तेल की मालिश की जा सकती है। थोड़ी देर बाद हो सके तो पशु को करवट दिला देनी चाहिए। ३ या ४ घन्टे में पशु को खड़ा हो जाना चाहिए। जब गाय खड़ी हो जाय तो फिर हवा

भरनी चाहिए और १२ घन्टे तक दूध नहीं निकालना चाहिए। जानवर को बाँधना नहीं चाहिए।

खान-पान—इस बीमारी में खाने-पीने को बहुत कम देना चाहिए और जो कुछ दें वह शीघ्र पचनेवाली चीज होनी चाहिए जैसे अलसी या चोकड़ की चाय, दूध, दलिया इत्यादि और घनी बीमारी की अवस्था में जहाँतक हो पानी नहीं पिलाना चाहिए। जानवर के अच्छा होने पर शीघ्र पचनेवाला चारा-दाना देना चाहिए और थोड़ा-थोड़ा करके कुएँ का ताजा पानी पिलाना चाहिए।

अन्य हिदायतें—यह बीमारी आम तौर से ज्यादा दूध देनेवाले जानवरों को ही होती है। बीमारी होते ही यदि जानवर के इलाज का तुरन्त प्रबन्ध नहीं किया जाता तो जानवर के मर जाने का अन्देशा रहता है। जानवर को अधिक से अधिक सफ़ाई की हालत में रखना चाहिए और थनों को बराबर कपूर या सुहागा मिले हुए तेल से चुपड़ते रहना चाहिए ताकि गाय को इस बीमारी से अच्छी हो जाने के बाद अक्सर थन सूजने की बीमारी हो जाया करती है वह न होने पावे। अच्छा तो यह है कि यदि आपके गाँव में या आस-पास कहीं रस-कपूर मिल जाय तो एक उड़द के बराबर डली हरे केले को बीच में चीरकर उसके बीच में रखकर गाय को खिला दीजिए ताकि गाय थनों की बीमारी से बच सके। ज्यादा दूध देनेवाली गाय का दूध ब्याने के बाद पहिली बार एक दम से सब नहीं निकालना चाहिए, बल्कि थोड़ा-थोड़ा करके दो-तीन वार में निकालना

चाहिए। ऐसा करने से इस बीमारी के होने का खतरा कम हो जाता है।

हवा भरने के समय यह ख़याल रखना चाहिए कि हवा के साथ रेत-मिट्टी या अन्य किसी प्रकार की कोई चीज़ या गंदी हवा या पम्प द्वारा गाय के थनों में न जाय, नहीं तो वह हानि करेगी।

चेचक या काउ पोक्स

(cowpox)

यह बीमारी उस आदमी द्वारा फैलती है जिस आदमी के हाल में ही टीका लगा हो। या उस दूध दूहनेवाले से जिसने इस बीमारी से पीड़ित ढोर का दूध निकाला हो। बिना हाथ धोये दूसरे ढोर के दुहने से उनमें बीमारी फैलती है या बीमार ढोर का फफोला फूट जाने पर फफोले का जहर तन्दुरुस्त ढोर के किसी कटे स्थान पर या फोड़ा-फुन्सी आदि में लगने से या अन्य किसी नाज़ुक जगह पर लगने से भी फैलती है।

पहचान—बाक पर, थनों पर या बच्चों के आँख, नाक या नाक के पास आरम्भ में छोटे-छोटे लाल-लाल से रंग की फुन्सियाँ सी दिखाई देती हैं जिनमें सफेद रस-सा भरा हुआ होता है। ये दस दिन तक बढ़ती चली जाती हैं और बाद में सूखने लगती हैं और क़रीब-क़रीब बीस रोज़ तक सूखकर खत्म हो जाती हैं। इससे जानवर को आरम्भ में तो थोड़ी तकलीफ होती है परन्तु बाद में कोई खास तकलीफ नहीं होती और न दूध देनेवाले जानवरों का विशेष दूध ही घटता है।

खान-पान—शीघ्र पचनेवाला और जहाँ तक हो मुलायम

चारा-दाना देना चाहिए और यह ख़याल रखना चाहिए कि जानवर किसी प्रकार बीमारी के दिनों में कमज़ोर न होने पावे।

अन्य हिदायतें—इस बीमारी में बीमार जानवर को अन्य तन्दुरुस्त जानवरों से अलग कर देना ही अच्छा होता है। अगर किसी वजह से अलग न कर सकें तो इस बात का ख़ास ख़याल रखना चाहिए कि इस बीमारी की छूत दूसरे जानवरों को न लगे। दूध दुहनेवाले आदमी को ख़ास करके नीम के पानी या साबुन और सोडा इत्यादि से भली प्रकार हाथ धोये बिना अच्छे जानवर को दुहना या उसको हाथ लगाना या उसकी सानी, कुट्टी इत्यादि ठीक नहीं है। और किसी भी जानवर या मनुष्य के काम में आनेवाले बर्तन या चीज़ के हाथ भी नहीं लगाना चाहिए। जिस बर्तन में दूध दुहा गया है उस बर्तन को भी बिना सोडा व राख इत्यादि से धोये काम में नहीं लाना चाहिए। इस बीमारी से पीड़ित जानवर के दूध में दूध दुहनेवाले का हाथ या फफोले या फुन्सियों का रस नहीं लगना चाहिए। ऐसे जानवरों के दूध को साधारण खाने-पीने के काम में जहाँ तक हो सके न लें। खोया बनाने या गर्म करके दही जमाकर घी निकालने के काम में ले लिया जाय। अगर किसी लाचारी हालत में दूध पीने इत्यादि के काम में लिया ही जाय तो उसको कम-से-कम आध घंटे उबाले बिना काम में न लें।

(१४) गजचर्म या मेन्ज

(Mange)

यह छूत से होनेवाली बीमारी है। यह प्रायः कमजोर,

गन्दे, तग जगह में रहनेवाले जानवरों को हुआ करती है। यह बीमार जानवर के स्थान पर या उसके साथ रहनेवाले जानवर को या बीमार जानवर से छू जानेवाले जानवरों को हो जाया करती है।

पहचान—जानवर के बीमारी के असरवाले हिस्से में बहुत जोर की खाज चलती है। वह उस हिस्से को खुजलाता रहता है। यहाँ तक कि बाज़ दफ़ा वहाँ जख्म हो जाता है। बाल गिर जाते हैं, खाल मोटी हो जाती है और उसमें सलवट पड़ जाती हैं आमतौर से आरम्भ में थुई और पूछ पर होती है फिर वहाँ से धीरे-धीरे तमाम शरीर में फैलती है।

इलाज—इस बीमारी से पीड़ित जानवरों को अच्छे जानवरों से अलग रखना चाहिए और उसके रहने के स्थान की ख़ास तौर से सफ़ाई रखनी चाहिए। जिस हिस्से में यह बीमारी हो गयी हो वहाँके बाल काटकर उसको भली भाँति गर्म पानी और साबुन से धोकर साफ़ कर देना चाहिए। बाद में जानवर को धूप में खड़ा करके गोबर और सरसों का तेल मिलाकर १०-१५ मिनट तक मालिश करनाचाहिए। उसके बाद घंटाभर तक जानवर को धूप में रखकर फिर गर्म पानी से धोकर उस जगह को कपड़े या टाट से सुखाकर नीचे लिखे तेल की दिन में एक बार रोज़ मालिश करना चाहिए। नीचे लिखी खाने की दवा एक बार रोज़ दी जाये।

मालिश करने का तैल

गंधक	१ हिस्सा

घी या तिल का तैल ८ हिस्सा
नीम का तैल १/८ हिस्सा

गँधक बारीक पीसकर, सब चीज़ मिला लो। आग पर भली प्रकार पकाने के बाद ठण्डा होने पर मालिश करो।

घासलेट या मिट्टी का तैल १ हिस्सा
मुँह-हाथ धोने का साबुन १ ,,
पानी (पीने का) २० ,,

साबुन को गर्म पानी में भली प्रकार घोलकर मिट्टी का तैल मिलाकर खूब फेटो। जब मिलकर एक-सा दूध जैसा हो जाय तब काम में लो। हमेशा काम में लेने के पहिले उसको भली भाँति मिला लेना चाहिए।

खाने की दवा

खाने का नमक १ छ०
गन्धक बारीक पिसी हुई 1/2 तो०

१/८ सेर पानी में घोलकर नाल द्वारा दें या मिस्सी रोटी के बीच में रखकर केवल खाने का नमक और गंधक ; । गरमी में नीचे या लिखी दवा भी दी जा सकती है—

चावल १ पौंड
बारीक पिसे हुए नीम के पत्ते १ छटाँक

दोनों को पानी के साथ पका लो। ठण्डा होने पर आध सेर खट्टी दही मिलाकर हाथ से मथ लें। गर्मी के मौसम में

एक सप्ताह तक रोज़ दें। दवा देने के दो-तीन घंटे बाद तक पानी न दो।

खान-पान—क़ब्ज़ होनेवाली कोई चीज़ न दें। हो सके तो बीमारी के दिनों में चने की चूरी, दाना या भूसी थोड़ी बहुत जरूर खिलावें।

अन्य हिदायतें—शुरू में ठीक इलाज करने से यह बीमारी आसानी से अच्छी हो जाती है, नहीं तो जानवर को बहुत तकलीफ़ देती है और बरसों तक अच्छी नहीं होती। दूसरे जानवरों को इस बीमारी से बचाना मुश्किल है। इसलिए शुरू में ही इस बीमारी की दवा-दारू अच्छी तरह करनी चाहिए।

(१५) खुजली

खुजली भी छूत की बीमारी है। गजचर्म और खुजली में विशेष अन्तर नहीं है। गजचर्म खुजली से कहीं ज्यादा खतरनाक और दुखदायी बीमारी है और ज्यादा अर्से में अच्छी होती है। खुजली इसके मुक़ाबले में कम दुखदायी, और जल्दी अच्छी हो जानेवाली बीमारी है। खुजली का इलाज, खान-पान व अन्य हिदायतें सब गजचर्म जैसी समझनी चाहिए। खुजलीवाले जानवर के जिस स्थान पर खुजली है वहाँ पर साबुन गर्म पानी से धोकर दवा की मालिश करनी ही चाहिए लेकिन यह अच्छा होगा कि खुजली की हालत में जानवर के तमाम शरीर को सम्भव हो सके तो भली प्रकार साबुन व गर्म पानी से धोकर अन्यथा साधारण तरीक़े से दवाई की मालिश

कभी-कभी कर दिया करें। साबुन न हो तो तन्दुरुस्त गाय का गोबर मलकर नीम के गर्म पानी से धोकर दवा लगा दिया करें।

(१६) दाद या रिङ्ग वर्म

(Ring-worm)

यह बीमारी भी गन्दी और तंग जगह में रहनेवाले जानवरों को होती है। ज्यादातर छोटे बच्चों को बहुत होती है।

पहचान—गजचर्म की तरह से जानवर की खाल पर इसका असर होता है और इसमें गोल-गोल छल्ले से शरीर पर हो जाते हैं।

इलाज—गजचर्म और इस बीमारी का लगभग एक ही इलाज है। इस बीमारी में पीने की दवा जबतक कोई खास बात न हो, आम तौर से नहीं दी जाती।

खानपान और अन्य हिदायतें—गज-चर्म (Mange) के अनुसार ।

(१७) कीड़ों के दुम्बल या मुजे (मनिया) फूटना या वार्बल फ़्लाईज़

(Warble Flies)

जिन जानवरों के ऊपर खुरहरा और ब्रुश अच्छी तरह नहीं फेरा जाता और उनकी सफाई नहीं रक्खी जाती उनको अक्सर यह बीमारी हो जाती है। वर्षा ऋतु के अन्त में इस बीमारी के कीड़े जानवर के शरीर पर आ जाते हैं और अपना काम शुरू कर देते हैं। गर्मियों के आरम्भ में इस बीमारी के

कीड़े पूरे ताकतवर हो जाते है और खाल में छेद करके बाहर निकल आते हैं या जानवर के शरीर पर सख्त काले-से रंग की फुन्सी-सी हो जाती है। इससे जानवर को कोई विशेष नुकसान नहीं होता परन्तु इस बीमारी से उसकी उपयोगिता पर असर पड़ता है और मरने के बाद उसकी खाल कम कीमती हो जाती है।

इलाज—जिस जानवर को यह बीमारी हो जाय उसके पीड़ित स्थान को भली प्रकार चूने और तम्बाकू के गर्म पानी से धोकर चूने और तम्बाकू को मिलाकर चटनी जैसा बनाकर पीड़ित स्थान पर भली प्रकार लगाना चाहिए या २^१/२ सेर पानी में एक छटाँक ताजा चूना मिलाकर उसमें ४ छटाँक बारीक पिसा हुआ तम्बाकू खूब मिलाकर घोल लेना चाहिए और २४ घंटे रखने के बाद उसको झिरझिरे कपड़े में छान लेना चाहिए और सफेदी करने की मूँज की जैसी कूंची होती हैं वैसी बहुत बारीक एक अंगुल मोटी कूँची बनाकर या किसी सरकण्डे या लकड़ी के सिरे पर जरा-सा कपड़ा बाँधकर कूँची या ब्रुश जैसा बना लें और उसको दवा में डुबोकर पीड़ित स्थान पर दवा लगावें। दवा लगाने में यह खयाल रखना चाहिए कि दवा उन फुन्सियों के छेदों द्वारा अच्छी तरह अन्दर पहुँच जाय ताकि अन्दर यदि इस बीमारी के कीड़े हों तो वे मर जायें। इस प्रकार बराबर दवाई लगाने से आराम होता है।

अगर छेद फूटकर उनमें से खून जैसा माद्दा बाहर आना शुरू हो जाय तो हाथ से दबाकर गन्दा माद्दा निकालकर एक

सींक के ऊपर जरा-सी रूई बाँधकर उसे दवाई में डुबोकर उपरोक्त दवाई उसके अन्दर भली प्रकार लगा देनी चाहिए। यह दवा तैयार न हो तो नीम का तेल फुरेरहरी द्वारा उपरोक्त दवा की तरह लगा देना चाहिए।

पीने के लिए

२ तोला खारी नमक

½ तोला गन्धक

ऽ। (गुनगुने) पानी में घोलकर १ हफ्ते तक पिलाओ।

खान-पान—कोई खास बात नहीं; कब्ज करनेवाली खुराक कम देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर को साफ रक्खें। रहने के स्थान की सफाई जरूर करते रहें। जिस जगह यह बीमारी हो उस इलाके के जंगल में वर्षा के अन्त समय में अपने ढोर नहीं चराने चाहिएँ क्योंकि उसी समय इस बीमारी के कीड़े अच्छे जानवरों पर हमला करते हैं।

(१८) जूँ या लाइस (lice)

जूँ भी छूत की बीमारी है। यह भी केवल स्पर्श-मात्र से एक जानवर से दूसरे जानवर को लग जाती है। लेकिन यह बीमारी खतरनाक नहीं होती। यह प्राय: छोटे बच्चों को ही हुआ करती है। यदि एहतियात रक्खी जाय तो जल्दी ही दूर हो जाती रहती है वरना ज्यादा फैलकर बच्चे को बहुत कमजोर कर देती है।

इलाज—१ हिस्सा तम्बाकू और दो हिस्से मुँह-हाथ धोने का साबुन ४० हिस्से पानी में उबालकर ठण्डा कर लें, और फिर उसमें १ हिस्सा मिट्टी का तेल अच्छी तरह मिलाकर मल दें। मलने के एक या दो रोज़ बाद साबुन और गर्म पानी से भली प्रकार धो दें।

: ५ :

बिना छूत की या साधारण बीमारियाँ

(Non-contagious or Simple Diseases)

साधारण (बिना छूत की) बीमारियाँ प्रायः इतनी भयानक नहीं होतीं जितनी छूत की होती हैं। यदि आरम्भ में ही यथोचित संभाल रखी जाय तो इन बीमारियों को आगे न बढ़ने देकर आसानी से रोका जा सकता है; परन्तु बाज़ बीमारियाँ इनमें भी यदि उनके इलाज और देख-भाल में ज़रा-सी भी लापरवाही हो जाय तो बड़ा भयानक रूप धारण कर लेती हैं और जानवर को बचाना कठिन हो जाता है। इसलिए आरम्भ में ही यथोचित कार्यवाही करके बीमारी को रोकने का प्रबन्ध करना चाहिए क्योंकि साधारण बीमारी भी खान-पान, देख-भाल, रहन-सहन में त्रुटि होने के कारण होती हैं। सबसे पहले त्रुटि या कमी को दूर करना चाहिए और ऐसी व्यवस्था कर देनी चाहिए कि बीमारी की हालत में जानवर को काफी सहूलियतें मिल जायें ताकि जो त्रुटियाँ और कमियाँ हो गयी हैं उनको पूरा कर सकें। बहुत कुछ तो ये सहूलियतें पहुँचाने से ही ठीक हो जायगा। दवाई तो केवल एक प्रकार की मदद है। वह तो सिर्फ बीमारी की आगे

के लिए रोक-थाम और जानवर को जल्दी साधारण हालत में लाने के जो ज़रिये हैं उनको मदद करने के लिए ही हैं। इसलिए बीमारियों की हालत में दवाई पर ही निर्भर न रहकर उससे ज्यादा उनके खान-पान, रहन-सहन का खयाल रखना चाहिए। खाने-पीने और रहन-सहनके विषय में हम पहले अध्याय में बतला चुके हैं, उन सब बातों को भली प्रकार समझ लेना चाहिए और अमल में लाना चाहिए। बीमारी की हालत में जानवर को साफ़ सुथरा रखना चाहिए। तेज़ हवा, ज्यादा सर्दी-गर्मी और वर्षा से बचाना चाहिए। उसके रहने का स्थान बिल्कुल साफ़-सुथरा रखना चाहिए। उसमें किसी किस्म की सील, कीचड़, कादा व बदबू नहीं होनी चाहिए। खाने-पीने के लिए गली, सड़ी, बदबूदार, सख्त, देर में हज़म होनेवाली कोई चीज़ नहीं देनी चाहिए बल्कि शीघ्र पचनेवाली स्वादिष्ट और ऐसी हलकी गिज़ा, जिससे जानवर आसानी से खाकर स्वस्थ रह सके, देनी चाहिए और कुएँ का ताज़ा पानी तसले,नाँद या बाल्टी में अलग पिलाना चाहिए। फोड़ा, फुन्सी, चोट, जख्म की सफ़ाई तथा उसकी मरहम-पट्टी इत्यादि करने में पूरी सफ़ाई रखनी चाहिए। ऐसा समझकर, कि जानवर के लिए ज्यादा सफाई की आवश्यकता नहीं है और यों ही अच्छा हो जायगा, लापरवाही नहीं करनी चाहिए। ज़रा-सी लापरवाही में दुख बढ़ जाता है और फिर कहीं ज्यादा परिश्रम से और दुख पाकर वह अच्छा होता है। बीमारी की हालत में जहाँ दवाई इत्यादि का प्रबन्ध किया जाता है वहाँ उनको यथोचित गिज़ा और आराम भी देना चाहिए। याद रखिए

उनको इस समय जितना आराम दिया जायगा और होशियारी के साथ तुरन्त जितनी उनकी देख-भाल की जायगी उतना ही जल्दी वह बीमारी से अच्छे हो सकेंगे।

बदहज़मी या अपच

यह बीमारी जानवरों को अकसर हो जाती है। इसमें जानवर न तो पूरा चारा खाता और न काम ही कर सकता है। बदहज़मी अन्य बीमारियों का कारण होती है। गला, गन्दा, बदबूदार चारा खाने तथा साफ और काफी पानी न मिलने से यह बीमारी हो जाती है। मेदा अपना काम ठीक नहीं करता और खाना हज़म करने में कमज़ोर हो जाता है। कभी-कभी पेट के कीड़े व पट्ठों की कमजोरी भी इसका कारण होती है। बाज़ दफा जिगर की खराबी और अधिक सर्दी-गर्मी लगने से व अनियमित रूप से कम या ज्यादा काम लेने से भी हो जाती है।

पहचान—जानवर खाना पूरी तरह हज़म नहीं करता और दिन ब-दिन कमजोर होता जाता है। पूरा चारा नहीं खाता और न ठीक जुगाली करता है; पानी ज्यादा पीता है। जानवर सुस्त-सा रहता है। कब्ज़ हो जाता है, कभी-कभी बजाय कब्ज़ के पतले रंग-बिरंगे दस्त भी हो जाया करते हैं जिनमें बिना पचा खाना निकलता है।

इलाज—पहले जानवर को जुलाब की दवा देकर हल्के दस्त कराने चाहिएँ। इसके लिए नीचे लिखे नुसखों में से कोई-सा नुस्खा दे सकते हैं—

(१) सरसों या रैंडी का तेल १० छ०
सौंठ २ तोला

सौंठ को कूट-पीसकर तेल में मिलाकर नाल (ढरके) से दीजिए। साधारण अवस्था में यह ठीक रहता है।

(२) खारी नमक ८ छ०
सौंठ २ तोला

दोनों को कूट-पीसकर आध सेर गुनगुने पानी में घोलकर नाल से पिलावें। यदि जरा तेज़ जुलाब देना हो तो यह अच्छा है।

(३) सरसों या तिल का तेल ८ छटाँक
तारपीन का तेल १/२ छटाँक

दोनों को घोलकर नाल से पिला दें। पेट के कीड़े, अफारा और बदबूदार दस्तों में यह अच्छा है।

उपरोक्त दवाइयों में से किसी दवा को दें। यदि २-३ घंटे तक दस्त न हों तो उसी चीज की आधी खुराक दुबारा देनी चाहिए। दस्त हो जाने के अगले दिन से नीची लिखी कोई दवाई सुबह को एक बार दें।

(४) सौंठ १ तोला
राई १ तोला
अजवायन २ तो०
नमक ११ तो०

सम्भव हो तो काला नमक लें अन्यथा सादा खाने का लें।

इन सब चीज़ों को कूट-पीसकर पाव भर गर्म पानी के साथ पिलावें और बाद में दो घन्टे तक पानी न पिलावें।

(५) खाने का नमक २ तोला
नौसादर १ तोला
सौंठ १ तोला
कसीस १/२ तोला
कुचला या भंग १/४ तो० } १ तो०

सबको कूट-पीसकर पावभर गरम पानी के साथ मिलाकर नाल से पिलावें।

(६) काला नमक
ज़ीरा
राई
कचरी
अजवायन
सौंठ
सेंजना की छाल (यदि मिल जाय तो)

सबको बराबर-बराबर मिलाकर कूट-पीसकर छान लें। यदि सम्भव हो तो चौगुने गर्म पानी में या छाछ में मिलाकर दो-चार रोज़ धूप में या गर्म जगह में रखकर सड़ा लिया जाय और फिर पावभर रोज़ दिया जाय अन्यथा एक छटाँक दवा पावभर गर्म पानी में मिलाकर पिला दें।

खान-पान—जानवर की खुराक कम कर देनी चाहिए। जो खुराक दी जाय वह थोड़ी-थोड़ी देर में और थोड़ी मात्रा में देनी चाहिए। पहिले दिन मुलायम घास व चावल का माँड देना चाहिए, दूसरे दिन मुलायम चारे के अलावा दलिया, चोकड़ या अन्य शीघ्र पचनेवाला कोई दाना दिया जा सकता है। इसी प्रकार धीरे-धीरे ज्यों-ज्यों भूख बढ़ती जाय, थोड़ा-थोड़ा साधारण चारा दाना देना चाहिए और फिर धीरे-धीरे बढ़ाकर जब जानवर साधारण हालत में आ जाय तब रोज़ाना की खुराक दी जाय।

अन्य हिदायतें—इस बीच में जहाँ तक हो सके जानवर को आराम देना चाहिए और देर में पचने व क़ब्ज़ करनेवाला चारा दाना नहीं देना चाहिए। जानवर को तेज़ गर्मी-सर्दी से बचाना चाहिए, नहीं तो फिर बीमारी के बढ़ जाने का अन्देशा रहेगा।

(२) अफारा या पेट फूलना

यह बीमारी अक्सर जानवरों के ज्यादा चारा खा लेने या उसको एक दम अच्छा चारा-दाना भर-पेट मिलने से हुआ करती है। या कभी ऐसा होता है कि जब अकाल-पीड़ित या भूखे जानवर अकाल के इलाक़े से सुकाल की जगह आते हैं और एक दम से अधिक घास चर लेते हैं तब भी यह बीमारी हो जाती है। बाज दफ़ा जानवर खुल जाता है और वह चुपके से अनाज के गोदाम में या जहाँ दाना इत्यादि रक्खा रहता है वहाँ जाकर दाना इत्यादि जल्दी-जल्दी खा जाता है। जब वह दाना या अनाज

पेट में फूलता है तो अफारा आ जाता है। यह मेदे की बीमारियों में से है जो खाई हुई खुराक मेदे में ठस जाने से होती है। जो चीजें हज़म नहीं होती या कहीं अटक जाती हैं और पेट में पड़ी रहकर सड़ने लगती हैं। उनसे गैस बनने लगती है और पेट फूलकर अफारा आ जाता है। यदि इस गैस को जल्दी से निकाला न जाय तो गैस अधिक तादाद में पैदा होकर जानवर की मौत का कारण होती है। सड़े-गले चारे-दाने से, वर्षा में नई उगी हुई घास या हरा चारा एकदम ज्यादा खा लेने से, और ज़हरीले घास खा जाने से भी यह बीमारी हो जाती है। खाने के बाद जानवर से एकदम काम लेने से भी यह बीमारी हो जाती है।

पहचान—पेट फूल जाता है। बाईं कोख ज्यादह उभरी हुई होती है, और दाहिनी भी उठी हुई होती है। पेट में हवा (गैस) भरी हुई मालूम होती है। पेट बजाने से ढोल की तरह बोलता है, साँस बड़ी मुश्किल से आता है। पशु बेचैन होकर उठता-बैठता है। यदि जल्दी इलाज न किया जाय तो जानवर के मर जाने का खतरा रहता है।

इलाज—आरम्भ में नीचे लिखों में से कोई एक नुसखा देना चाहिए—

(१) सरसों, अरण्ड या तिल का तेल ऽ।।।
तारपीन का तेल २ तोला

दोनों को मिलाकर नाल से पिलावें।

(२) खारी नमक २ छ०
सरसों का तेल ऽ।।

दोनों को मिलाकर नाल से पिलावें।

(३) १० तोला राई बारीक पीसकर आध सेर गर्म पानी में घोलकर पिलावें।

(४)	सौंठ	२ तोला
	हींग	६ माशा
	नमक	१० तोला
	काली मिर्च	६ मा०
	तारपीन का तेल	२॥ तो०

सबको घोट-पीस कर गर्म पानी के साथ पिलावें।

(५)	काला नमक	२ तोला
	अजवायन	२ तोला
	आक के पत्ते	१ छ०

सबको घोट-पीसकर गर्म पानी में मिलाकर नाल से पिलावें।

(६) आम का अचार २ छ० खूब घोट-पीसकर गर्म पानी के साथ पिलावें।

यदि उपरोक्त दवाइयों में से किसी के देने से २ घंटे तक आराम न हो, तो फिर दुबारा एक खुराक दें। यदि फिर भी अफारा कम न हो तो साबुन घोलकर निवाये पानी से पशु को वस्ति-कर्म या एनिमा कराना चाहिए। एनिमा कराने की विधि १६ वें पृष्ठ पर लिखी हुई है। अगर एनिमा से भी आराम न हो और अफारा बढ़ता ही जाय तो जानवर की बाईं कोख में जो अधिक फूला हुआ हिस्सा हो वहाँ चाकू से

छेद करके हवा निकाल देनी चाहिए। छेद करने के पहले चाकू को आँच में गर्म करे और लाल-जैसा हो जाने पर सम्भव हो तो नीम के वरना सरसों या कपूर के तेल में डालकर ठण्डा कर लेना चाहिए या १५-२० मिनट नीम के पत्तों के पानी में उबाल-लेना चाहिए। अफारा कम हो जाने पर बदहज़मी के नुसखे नं० ४,५,६ में से कोई-सा नुसखा या नीचे लिखा नुसखा दिन में एक बार देना चाहिए।

सोंठ	१ तोला
काली मिर्च	१ तोला
काला नमक	१ तोला
हींग	१/२ तोला
या	
नौसादर	१ तोला

सबको कूट-पीसकर आध सेर गर्म पानी में मिलाकर नाल से पिलावें।

खान-पान—इस बीमारी में जानवर को चारा-दाना व पानी उस समय तक बिलकुल नहीं देना चाहिए कि जबतक अफारा बिलकुल न उतर जाय। उसके बाद ऐसी खुराक जो जल्दी हज़म होनेवाली हो थोड़ी तादाद में देनी चाहिए और जब जानवर उसे ठीक पचाने लगे और उसकी मामूली हालत हो जाय तो धीरे-धीरे खुराक बढ़ाकर फिर रोजाना की खुराक दे सकते हैं।

अन्य हिदायतें—अफारा कम करने की दवाई देने के बाद सम्भव हो तो जानवर को थोड़ा टहलाना चाहिए और उसकी

कोख पर गरम पानी से सेक और तारपीन के तेल की मालिश करनी चाहिए। अफारा उतरने पर एकदम उससे काम नहीं लेना चाहिए। अफारे वाले जानवर को धूप में नहीं रखना चाहिए ।

(३) पेट का दर्द

जब पशु कड़ी सूखी घास खा लेता है और पानी पीने को कम मिलता है तो वह सूखकर पेट में जम जाती और वहाँ दर्द करने लगती है। कभी-कभी गर्मी के दिनों में एकदम ठण्डा पानी पिलाकर खड़ा कर देने से भी यह बीमारी हो जाती है।

पहचान—पशु जुगाली नहीं करता। खाना-पीना छोड़ देता है। बेचैन होकर उठता-बैठता है, पाँव पीटता और दाँत पीसता है। गोबर नहीं करता। लेकिन कभी-कभी पतला, थोड़ा, बदबूदार गोबर कर देता है। कभी-कभी अफारा भी हो जाता है।

इलाज—बदहज़मी की नं० १, २, ३ में से कोई-सी एक दवा दस्तों के लिए दें ताकि दस्त होकर गन्दा मादा निकल जाय। फिर नीचे लिखी दवाओं में से कोई एक दवा पहले रोज़ एक दफ़ा सुबह और एक दफ़ा शाम को दें। फिर बाद में दो रोज़ तक दिन में एक बार दें। दवा देने के २-३ घंटे तक खाना न दें।

(१) सौंठ — २ तो०
हींग — ६ मा०

दोनों को कूट-पीसकर ⟆= गुड़ के साथ मिलाकर खिला दें।

(२) पीने की तम्बाकू — २ तो०
पुराना गुड़ — २ छ०

पाव भर पानी में पकाकर नाल से दें।

(३)	अजवायन	२ तोला
	काली मिर्च	१ तोला
	सोंठ	१ तोला
	गुड़	४ तोला

आवटी बनाकर अर्थात आधा सेर पानी में पकाकर गुनगुना पिला दें।

(४)	अजवाइन	२ तो०
	काला नमक	२ तो०
	सौंठ	१ तो०
	लहसुन	३ तो०

सबको कूट-पीसकर गर्म पानी में मिलाकर पिलावें।

(५)	लहसुन	१ तो०
	प्याज	१ छ०
	काला नमक	१ तो०
	काली मिर्च	$^1/_2$ तो०
	अजवायन	१ तो०
	हींग	$^1/_2$ तो०
	सौंठ	१ तो०

खान-पान—दस्त जबतक लगे तबतक तो कोई चीज खाने-पीने को नहीं देनी चाहिए। उसके बाद हाजमा ठीक करने की दवा देने के बाद सिवा गर्म माँड, चाय या गर्म पानी के दो-तीन घन्टे तक कोई खुराक नहीं देनी चाहिए। इसके बाद शीघ्र पचनेवाला चारा,

दलिया, चोकड़ इत्यादि देना चाहिए। पीने को ताजा पानी दें। फिर धीरे-धीरे चार-पाँच दिन में साधारण चारा-दाना देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—यह बीमारी उपरोक्त दवा के देने से यदि अच्छी होती न मालूम दे तो बीमारी का निदान (diagnosis) अर्थात् बीमारी की जाँच दुबारा करानी चाहिए और देखना चाहिए कि कोई और बीमारी तो नहीं है, क्योंकि इस बीमारी के लक्षण कुछ अन्य साधारण और कुछ छूत की बीमारियों से भी मिलते-जुलते होते हैं।

(४) कब्ज

कब्ज प्रायः बदहजमी के कारण ही होता है। यह बीमारी जानवरों के खाने-पीने में गड़बड़ होने के कारण व सूखा चारा ज्यादा खा लेने और पानी देर तक न मिलने के कारण हो जाती है। इससे अनेक बीमारियाँ उठ खड़ी होती हैं।

पहचान—इस बीमारी में गोबर सूखा और कड़ा होता है या मींगनी जैसा आँव या आँव जैसा सफेद लुआबदार माद्दे के साथ होता है। कभी-कभी गोबर बिल्कुल नहीं होता जिसकी वजह से जानवर व्याकुल हो जाता है और खाना-पीना कम कर देता है।

इलाज—आरम्भ में दस्त कराने के लिए नीचे लिखे नुस्खों में से एक देना चाहिए।

(१) अमलतास	२॥ तो०
सौंफ	२ छ०

दोनों को कूट-पीसकर आधा पाव गुड़ या शीरे में मिला कर पाव डेढ़ पाव गर्म पानी के साथ पिला दें। यह बहुत हल्के जुलाव का नुस्खा है।

(२) एलवा शुद्ध १ तो०
सौंठ १ तो०

दोनों को बारीक कूट-पीसकर एक पाव तेल या शीरे में मिलाकर नाल से पिला दें।

यदि २-३ घंटे तक दस्त न हो तो फिर दुबारा आधी खुराक उसी चीज की देनी चाहिए। फिर भी यदि दस्त न हो और नुसखा नम्बर ३, ४, या ५ से भी न हो तो अखीर में नुस्खा नम्बर ६ आजमाइए।

(३) सरसों या अरण्ड का तेल १० छ०
सौंठ २ तोला

सौंठ को कूट-पीसकर तेल में मिलाकर नाल से पिला दें।

(४) तिल्ली या सरसों का तेल आध सेर
तारपीन का तेल १॥ छ०

दोनों को मिलाकर नाल से पिला दें।

(५) खारी नमक ८ छ०
सौंठ २ तो०

दोनों को कूट-पीसकर ऽ॥ गुनगुने पानी में घोलकर नाल से पिला दें।

(६) घी ३ पाव
गर्म दूध १ सेर

घी को गर्म करके दूध में मिलाकर जानवर को पिला दें। यदि फिर भी दस्त न हो तो उसे वस्ति-कर्म (एनेमा) करना चाहिए।

दस्त हो जाने पर हाजमे के लिए नुस्खे नं० ४, ५, ६ में से कोई-सा नुसखा एक या दो दिन तक दें।

खान-पान—जानवर की खुराक कम कर देनी चाहिए और थोड़ी-थोड़ी देर और थोड़ी मात्रा में देनी चाहिए। पहले दिन मुलायम घास व चावल का माँड देना चाहिए। दूसरे रोज मुलायम या हरे चारे के अलावा दलिया, चौकड़ या अन्य जल्दी पचनेवाला कोई दाना दिया जा सकता है। इस प्रकार धीरे-धीरे ज्यों-ज्यों भूख वढ़ती जाय थोड़ा-थोड़ा साधारण चारा देना चाहिए और फिर धीरे-धीरे वढ़ाकर जब जानवर साधारण हालत में आ जाय तब रोजाना की चीजें दी जायँ। कुछ दिन सूखा चारा जहाँ तक हो कम दीजिए।

अन्य हिदायतें—इस वीच में जहाँतक हो जानवर को आराम देना चाहिए और देर में पचने व कब्ज करनेवाला चारा-दाना नहीं देना चाहिए।

(५) मुँह में काँटे या छाले पड़ जाना

ये प्रायः वदहज़मी से, कोई वहुत तेज गर्म जलती हुई चीज, चूना वगैरा कटाव करनेवाली या कोई वहुत कड़ी चीजें खा लेने से, या भीतरी गर्मी से हो जाते हैं। इसके अलावा यह वीमारी कुछ छूतवाली

बीमारियों का लक्षण भी है। इसलिए इसकी पहचान में यह विचार कर लेना चाहिए कि यह छूत की वजह से तो नहीं है।

पहचान—मुँह से बदबू आना तथा हाथ डालने से गर्म मालूम देना, मुँह से भभका-सा निकलना तथा झाग राल का गिरते रहना, मुँह में छाले होना, मुँह के काँटों का बढ़ जाना और जीभ पर सूजन होना इसके लक्षण हैं। कभी-कभी इस बीमारी में बुखार भी हो जाता है।

इलाज—शुरू में बदहजमी की बीमारी में बताये दस्तों की दवा नं० १, २, ३ में से कोई एक दीजिए, ताकि दस्त होकर पेट साफ़ हो जाय तथा गन्दे माद्दे के निकल जाने से कुछ गर्मी का असर भी कम हो जाय। फिर मामूली हालत में नमक और फिटकरी के गर्म पानी से भली प्रकार मुँह धोकर दरदरा अर्थात् जो अनाज छानने की या आटा छानने की मोटे छेदवाली छननी से छन जाय ऐसा नमक बराबर के सरसों के तेल में मिलाकर उसके मुँह में और काँटे हों तो काँटे की जगह दिन में दो बार सुबह-शाम भली भाँति मल देना चाहिए और पीने के लिए निम्नलिखित दवा उस दवा के मलने से पहले देनी चाहिए:—

नमक	३ तो०
चिरायता	१ तो०
जीरा	१ तो०
नौसादर	१ तो०

पावभर गर्म पानी में दवाई लगाने के पहले सुबह-शाम दें।

यदि इससे लाभ न हो तो आध पाव नीम के पत्ते और सेर भर पानी किसी साफ़ बर्तन में डालकर आग पर रखकर उबालिए। जब पानी उबल जाय तो उसमें एक तेज़ चाकू या कैंची डाल दो। जब पानी जलकर आधा रह जाय तो बर्तन आग से उतार लो। पानी ठण्डा हो जाय तो उससे अपने हाथ धो लो और चाकू या कैंची निकालकर जानवर के मुँह के बढ़े हुए काँटे काट दो काटने के बाद हल्दी और नमक बराबर पीसकर सरसों के तेल में पिण्ड बनालो और काटी हुई जगह पर खूब मलकर चुपड़ दो। इस तरह तीन दिन तक बराबर दवा मलनी व चुपड़नी चाहिए।

मुँह में ज़ख्म या छाले हों उस समय कीकर की छाल नमक, और फिटकरी तीनों उबालकर उसके पानी से अन्यथा फिटकरी या नीम के गर्म पानी से मुँह धोकर नीचे लिखी दवा में से एक भले प्रकार दिन में तीन-चार बार लगानी चाहिए।

(१) सुहागा, कत्था, बारीक पिसी हुई हल्दी, बराबर-बराबर लेकर शहद या शीरा, और दोनों न मिलें तो घी में मिलाकर लगानी चाहिए।

(२) सूखे केले की भस्म	२ तो०
मक्खन	४ तो०
दूध	ऽ।

सबको मिलाकर पिलाओ और उपरोक्त दवाई पिलाने के बाद केले की भस्म को कपड़छन करके मक्खन में मिलाकर मुँह और छालों पर लगाओ। यदि २ तोला सूखे केले की

भस्म एक पाव दूध में मिलाकर पिलाई जाय तो वह भी लाभप्रद होता है।

खान-पान—दवाई लगाने के दो-तीन घंटे बाद तक खाने-पीने को कोई भी चीज़ नहीं देनी चाहिए। बाद में दलिया, चौकड़ और मुमकिन हो, तो हरा अन्यथा सूखा चारा खिलाना चाहिए और कुएँ का ताज़ा पानी पिलाना चाहिए। देर में हज़म होनेवाली कोई चीज़ हर्गिज़ नहीं खिलानी चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर के मुँह में हाथ डालने से पहले अपने हाथ खूब धो लीजिए। यदि नाखून बढ़े हुए हों तो उनको कटवाकर साबुन से भली भाँति हाथ धो डालना चाहिए। दिन में २,३ या ४ प्याज़ की गाँठ रोज खिलाने से गर्मी कम होती है और मुँह के छाले ठीक होते हैं।

(६) पेट के कीड़े

सड़ा-गला चारा-दाना खाने, गन्दा, मैला और मिट्टी मिला हुआ कीड़े पड़ा हुआ पानी पीने से यह बीमारी हो जाती है। बछड़ों को ज्यादा हुआ करती है।

पहचान—जानवर अच्छी तरह खाता है परन्तु पनपता नहीं और दुबला होता चला जाता है। यदि ग़ौर से देखा जाय तो उसके गोबर में छोटे-छोटे कीड़े मिलते हैं। ये कीड़े दो प्रकार के होते हैं—लम्बे व गोल। प्रायः दूध पीते बच्चों के पेट में, जो मिट्टी बहुत खाते हैं, लम्बे कीड़े पैदा हो जाते हैं, जिनसे उनको कभी-कभी कब्ज़ हो जाता है या बदबूदार मटियाले दस्त आने

शुरु हो जाते हैं।

इलाज—पहिले उनको कोई दस्त लगने की दवा देनी चाहिए।

सरसों या अरण्ड का तैल	॥ सेर
तारपीन का तेल	२ तो०

मिलाकर दीजिए। बाद में नीचे लिखी दवा में से कोई एक दीजिए—

(१)	कत्था	½ तो०
	कपूर	३ मा०
	खरिया मिट्टी	१ तो०

भली भाँति मिलाकर आध सेर माँड, छाछ या पानी में दें।

(२)	भंग	१ तो०
	कपूर	½ तो०
	मेंहदी	१ तो०
	सफेद जीरा	१तो०
	बेलगिरी	१ तो०

भली भाँति मिलाकर आधसेर माँड, छाछ या पानी में दें।

(३)	तूतिया या नीलाथोथा	१ माशे,
	फिटकरी	१ तो०

दोनों को कूट-पीसकर ॥ ताजे पानी में दें।

यह दवा आखिर में देनी चाहिए जबकि पहले किसी दवा से लाभ न हो।

खान-पान—पहिले चारे-दाने को बदल देना चाहिए। पानी की जगह जहाँ तक हो चावल का माँड या सम्भव हो तो छाछ

पिलायें। इस बीमारी में जहाँ तक हो पानी न पिलावें। खाने को मुलायम शीघ्र पचनेवाला चारा, चावल का माँड और दलिया या थोड़ा चोकड़ दिया जा सकता है।

अन्य हिदायतें—जानवर के रहने की जगह को बिल्कुल साफ रखना चाहिए। गोबर तथा अन्य मैल इत्यादि को साफ़ करते रहना चाहिए। यदि जानवर सन जाय तो उसे धोकर टाट, कपड़े आदि से पोंछकर सुखा देना चाहिए।

(७) पेचिश, खूनी दस्त और आँव

पेचिश यानी जिसमें दर्द के साथ खून व आँव मिला हुआ दस्त बार-बार होता है। कभी-कभी दस्त अधिक दिन तक आने पर या बदहज़मी की वजह से यह बीमारी होती जाती है। पेट में कीड़े हो जाने या अन्य बीमारी के कारण भी हो सकती है

पहचान—पशु बार-बार आँव या खून मिला कुछ सख्त, कुछ पतला गोबर करता है। हर वक्त गोबर करने की इच्छा प्रकट करता है परन्तु थोड़ा-थोड़ा करता है।

इलाज—सबसे पहले सरसों, अरंड, अलसी या तिल का).॥ तेल और १ छ० सौंफ को मिलाकर पिला देना चाहिए। इसके ७–८ घन्टे के बाद नीचे लिखी कोई दवा दें।

(१) सूखा आँवला	२ तो०
सौंठ	१ तो०
खाँड या बताशे	२ तो०

आधसेर पानी में पीस-छान कर दें।

(२) खड़िया मिट्टी २ तो०
कत्था २ तो०
अफीम या धतूरे के बीज ३ मा०

॥ सेर चावल के माँड में मिलाकर दिन में दो बार दें।

(३) भंग १ तो०
कपूर १ तो०
मेहँदी १ तो०
सफेद जीरा १ तो०
बेलगिरी १ तो०

सबको पीसकर आध सेर चावल के माँड में मिलाकर दें।

(४) बेलगिरी ५ तो०
खड़ियामिट्टी १। तो०

सबेरे-शाम एक सेर छाछ में मिलाकर दें।

(५) सौंफ १ तो०
मेहँदी १ तो०
सफेद जीरा १ तो०
बेलगिरी १ तो०

सबको पीस कर आध सेर चावल के माँड में मिलाकर दें।

खान-पान व अन्य हिदायतें—दस्तों की बीमारी के माफिक।

(८) दस्त आना

इस बीमारी में पतला गोबर आता है। यह कोई बीमारी नहीं बल्कि अजीर्ण का चिन्ह है जो कि खराब चारा, गन्दा पानी

आदि के खाने-पीने से हो जाता है। कभी-कभी विशेष सर्दी-गर्मी से या अंतड़ियों के विकार से भी ऐसा हो जाता है। एकदम ज्यादा हरी घास खाने से या पेट में कीड़े हो जाने से भी दस्त होने लग जाते हैं।

पहचान—इस बीमारीवाला जानवर जल्दी-जल्दी पतला गोबर करता है। जुगाली कम करता है या बिल्कुल नहीं करता। कमज़ोर हो जाता है, पानी ज्यादा पीता है। आखिर में पशु अधिक बेचैन मालूम पड़ता है जैसे कोई कष्ट हो रहा हो। पीठ सिकोड़कर खड़ा हो जाता है।

इलाज—जिस चीज से दस्त आते हों वह नहीं खिलानी चाहिए अर्थात् चारा-दाना बदल देना चाहिए। जानवर को सर्दी-गर्मी से बचाना चाहिए। पहले पहल आँतों की खराश दूर करने के लिए अलसी, तिल, अरण्डी या सरसों का तेल ऽ॥, सौंफ १ छ० मिलाकर देनी चाहिए। बाद में नीचे लिखी कोई भी एक दवा सवेरे-शाम दोनों समय दीजिए:—

(१) अजवायन २ तो०
कत्था २ तो०
सौंफ ३ तो०

सब चीज घोट-पीसकर आध सेर माँड में मिलाकर दें।

(२) बेलगिरी ५ तो०
खरियामिट्टी १। तो०

दोनों को कूट-पीस कर आध सेर पानी में मिलाकर दें।

(३) खरिया मिट्टी ५ तो०
सोंठ १ तो०

कत्था	½ तो०
भंग	१ तो०
धतूरे के बीज	३ माशे

सब चीज़ अच्छी तरह सिल आदि पर घोटकर ≡।। माँड में मिलाकर दें।

(६) हलक या खाना निगलनेवाली नली का रुक जाना

सख़्त व गोल चीज़ जैसे गाजर, शलजम व इस किस्म की और कोई चीज़ गले में रुक जाने से या सख़्त सूखा चारा-दाना जल्दी-जल्दी निगल जाने से हलक़ में जाकर गोला-सा बँध जाता है और रुक जाता है, इससे यह बीमारी हो जाती है।

पहचान—जब इस प्रकार कोई चीज़ गले में अटक जाती है तो उस समय जानवर जो भी कुछ खाता-पीता है उसे निगल नहीं सकता और वह मुँह और नाक के ज़रिए वापिस आ जाता है। ऐसे मौके पर धाँस या खाँसी भी हो जाती है जिससे जानवर बेचैन हो जाता है और बार-बार निगलने की, कै या उल्टी करने की कोशिश करता है।

इलाज—अटकी हुई चीज़ को मुँह में हाथ डालकर बाहर निकालने की कोशिश करनी चाहिए। अगर बाहर निकल जाय तो अच्छा है, अन्यथा लचकदार बेंत के सिरे पर कपड़ा गोल बाँध-कर उसको घी या तेल में भिगो मुँह में डालकर अटकी हुई चीज़ को अन्दर धकेलने की कोशिश करनी चाहिए और बाहर के हिस्से पर आहिस्ता-आहिस्ता मालिश करनी चाहिए ताकि अटकी

हुई चीज अन्दर चली जाय और जानवर को थोड़ा आराम भी मिले। चीज अन्दर चली जाने के वाद थोड़ा तिल का तेल उसमें थोड़ा सुहागा या कच्चे केले की कपड़छन की हुई राख मिलाकर पिला देनी चाहिए ताकि गले की खारिश को आराम पहुँचे।

खान-पान—खाने के लिए कुछ दिन तक चावल का माँड, दलिया, सत्तू, चौकड़ तथा हरी घास और यदि हरी घास न मिले तो वहुत मुलायम सूखा चारा देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर के मुँह में हाथ डालने के पहले हाथ को भली भाँति धोकर साफ कर लेना चाहिए। वेंत या कपड़ा भी जो अन्दर डालें साफ कर लेना चाहिए। यह खयाल रखना चाहिए कि वेंत या हाथ जानवर के मुँह में इस प्रकार से न लगे कि जख्म हो जाने का डर हो।

(१०) पित्ती उछलना

यह बीमारी पित्त के विकार के कारण पैदा होती है। जब पित्त खून में मिल जाता है तो वह खाल में चकत्ते से पैदा कर देता है।

पहचान—खाल के ऊपर जगह-जगह मच्छर के काटे जैसे गोल-गोल चकत्ते से पड़ जाते हैं जो दो-तीन इंच तक चौड़े होते हैं। तमाम शरीर में खाज हो जाती है और जानवर वेचैन हो जाता है। ये चकत्ते निकलते और दवते रहते हैं।

इलाज—पहले जानवर को जुलाव देना चाहिए। इसके लिए वदहजमी के नुसखे नं० १, २, ३ में से कोई-सा नुस्खा दे

सकते हैं। दस्त होने के बाद नीचे लिखी दवा दें—

(१) शहद १० तो०
गेरू १० तो०

दोनों को मिलाकर नाल से दें।

(२) नीम के पत्ते ३ तो०
अडूसा, जिसको वासा
भी कहते हैं, के पत्ते ३ तो०
शीशम के पत्ते ३ तो०

सबको आध सेर पानी में उबालें। जब डेढ़ पाव रह जाय तब ठंडा करके पिला दें।

खान-पान—खाने के लिए यदि सम्भव हो तो हरा अन्यथा सूखा नरम चारा देना चाहिए। पीने के लिए पानी ताजा या थोड़ा गर्म करके दें।

अन्य हिदायतें—जानवर को अधिक सर्दी-गर्मी से बचाना चाहिए। उसपर यदि सम्भव हो तो काले रंग का कपड़ा या झूल अथवा कोई कपड़ा डाले रखें।

(११) जुकाम या सर्द-गर्म

यह कोई खास बीमारी नहीं है बल्कि किसी दूसरी बीमारी का चिह्न है। अगर किसी बीमारी का पता न लगे तो यह समझना चाहिए कि पशु को सर्दी लग गई है। एक दम गर्म जगह में से निकलते ही या काम पर से आते ही ठण्डा पानी पिलाने से,

बहुत ज्यादा गर्द या धूल में रहने से या एक दम से ठण्डक में से जानवर को गर्म जगह में लाकर बाँधने से भी जुकाम हो जाया करता है।

पहचान—नाक से पानी निकलता है, छींकें आती हैं, जानवर खाँसने लगता है, बाज़ दफ़ा हल्का बुखार भी हो जाता है। बाद में नाक की झिल्ली लाल हो जाती है और जानवर खाना-पीना कम कर देता है।

इलाज—उबलते पानी में तारपीन का तेल या सफेदा (eucalyptus) के पत्ते डालकर १५-२० मिनट तक उसकी भाप साँस द्वारा जानवर के अन्दर पहुँचानी चाहिए। साँस द्वारा बफारा देने की तरकीब पहले दी जा चुकी है। नीचे लिखी दवाओं में से कोई एक दवा दीजिए—

(१) सौंठ १ तो०
अजवायन २ तो०
गुड़ ४ छ०

आध सेर पानी में पकाकर आउटी बनाकर नाल से पिला दें।

(२) अजवायन १ तो०
अदरक या सौंठ १ तो०
मेथी ३ तो०
कपूर २ मा०

सब चीज़ों को कूट-पीसकर पावभर शीरे या गुड़ में मिलाकर दें।

उपरोक्त कोई दवा सुबह-शाम देने के बाद दो-तीन घंटे तक पानी न पिलावें। और दवा देने के बाद जानवर को हवा से बचाकर रखें और उसपर झूल फौरन डाल दें।

खान-पान—पीने को गुनगुना या निवाया (मामूली गर्म) पानी देना चाहिए। खाने के लिए शीघ्र पचनेवाला मुलायम चारा देना चाहिए। क़ब्ज़ करनेवाली या ठण्डी तासीर-वाली कोई चीज़ बीमारी में नहीं खिलानी चाहिए। गुड़ डालकर दलिया या चोकड़ की गर्म चाय देना लाभप्रद होता है। जानवर के अच्छे होने पर रोज़ाना की साधारण खुराक देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—जहाँ तक सम्भव हो जानवर को गर्म सूखी जगह में रखना चाहिए। एक दम उसे गर्म जगह से बाहर मत निकालो या ठण्डक में से लाकर गर्म जगह में एक दम से मत बाँधो। पीने को बहुत ठण्डा पानी नहीं देना चाहिए। जाड़े के दिनों में काम पर से लाते ही, तालाब, नहर, नदी और नाले का ठण्डा पानी नहीं पिलाना चाहिए। ठण्डक और तेज़ हवा से जानवर को बचाना आवश्यक है। बीमारी की हालत में जानवर पर झूल डाले रखिए। उबलते पानी के बर्तन में दवा डालकर उसपर थोड़ी सूखी घास-फूस इत्यादि डाल दीजिए ताकि जब वह जानवर के मुँह के पास लाया जाय तो जानवर के मुँह डालने उसका मुँह न जले।

(१२) खाँसी

यह बीमारी भी दूसरी बीमारियों का लक्षण हो सकती है। यह प्रायः सर्दी-गर्मी और बदहजमी से होती है। गर्मी में

आम तौर से सूखी खाँसी होती है और जाड़ों में तर होती है।

पहचान—ज़ोर से साँस लेना, जुगाली कम करना, रोयें (बाल) खड़े होना, बाज़ दफ़ा बुख़ार का भी होना इसके लक्षण हैं। क़ब्ज़ भी अक्सर हो जाया करता है। आँख-नाक से पानी गिरता है। आरम्भ में सूखी खाँसी होती है। फिर बाद में बढ़कर तर हो जाती है। खाँसी बढ़ जाने पर साँस की आवाज़ भी बढ़ जाती है।

इलाज—प्रारम्भ में जुकाम की दोनों दवाओं में से कोई-सी दीजिए। इसके दो-तीन घंटे बाद नीचे लिखी कोई दवा देनी चाहिए—

(१) केले के पत्ते की राख २ तो०
मक्खन या लोनी घी २ तो०

दोनों को मिलाकर चटाओ।

(२) छः माशे नमक की डली आक के पत्तों में दबाकर भून लो फिर पावभर गर्म पानी में मिलाकर ३ दिन तक लगातार दो।

(३) कपूर ३ मा०
कलमी शोरा १ तो०
नौसादर १ तो०
आककी छाल १ तो०
सौंठ १ तो०

सबको कूट-पीसकर एक छटाँक शीरे में मिलाकर दो।

(४) पिसी हुई हींग ६ मा० अदरक की एक गाँठ में

रखकर उपले की आग में दवा दो। पक जाने पर उसको बारीक पीस लो। पानी पिलाने के बाद शीरे में मिलाकर दिन में दो-तीन बार दो।

(५)	लहसुन	१ तो०
	काली मिर्च	१ तो०
	सौंठ	१ तो०
	बाँसा (अडूसा) के पत्ते का रस	१ तो०
	अनार की छाल या छिलका	१ तो०

सबको कूट-पीस-घोटकर गुड़ में मिलाकर खिलाओ।

उपरोक्त दवा में से कोई भी दवा सवेरे-शाम दिन में दो बार दीजिए और दवा देने के पहले १५ या २० मिनट तक उबलते पानी में तारपीन का तेल या सफेदा (eucalyptus) के पत्ते डालकर साँस के ज़रिए भपारा दीजिए। उसकी तरकीब पहले दी जा चुकी है।

खान-पान—दवा देने के बाद जानवर को तीन-चार घंटे तक पानी नहीं पिलाना चाहिए। इसके अलावा जो जुकाम में खान-पान बताया है वही देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जुकाम की बीमारी के अनुसार।

(१३) निमोनिया

एक दम सर्दी-गर्मी के बदल से, पसीने व बुखार की हालत में ठण्डी हवा लगने या भीगने या बहुत ठण्डा पानी पी लेने से यह

बीमारी हो जाया करती है। यह खतरनाक बीमारी है। जरा-सी गफलत से जानवर का बचना मुश्किल हो जाता है।

पहचान—जुकाम-खाँसी के सब लक्षण तो मौजूद होते ही हैं, उसके अलावा बराबर बुखार का रहना, जानवर का काँपना, मुश्किल से साँस लेना, नाक से बलगम जाना, आँखों का लाल होना, नब्ज का जल्दी-जल्दी चलना, यहाँतक कि एक मिनट में ८० से १०० तक हो जाना इसके लक्षण हैं। जानवर बेचैन हो जाता है। छाती और फेफड़े के दर्द की वजह से दाँत पीसता है और कराहता है। छाती पर बायाँ हाथ रखकर दाहिने हाथ की अँगुली की चोट मारने से ढोल जैसी आवाज आती है। बीमारी होने के ६, ७ रोज तक बीमारी बढ़ती दिखाई देती है। करीब सातवें रोज बीमारी का अधिक से अधिक जोर होता है। इसके बाद बुखार उतरना आरम्भ हो जाता है और सब हालतें अच्छे जानवर की जैसी मालूम देती हैं। जब बुखार एकदम कम हो जाये और साँस भी सहूलियत से आती मालूम हो तब यह समझना चाहिए कि हालत बहुत खराब हो गई है। जानवर का बचना बहुत मुश्किल है।

इलाज—जानवर को खुले स्थान में न रखकर गर्म स्थान में रखना चाहिए और उसको झूल या कम्बल उढ़ाये रखना चाहिए ताकि जानवर को हवा न लगे। दोनों समय (सवेरे-साँझ) नाक के द्वारा जुकाम में बताया हुआ भपारा देना चाहिए। राई का पलास्तर कपड़े पर लगाकर छाती पर दर्द के स्थान पर लगाइए। इस पलास्टर के बनाने की तरकीब भी पीछे दी जा

चुकी है। फिर आरम्भ में नीचे लिखी आवटी दे—

(१)	सौंठ	१॥ तो०
	मेथी	५ तो०
	अजवायन	२॥ तो०
	चाय	१ तो०
	गुड़	ऽ॥ सेर

आध सेर पानी में मिलाकर भली प्रकार उबालकर जब पौना रह जाय तब पिला दीजिए। बाद में सवेरे-शाम नीचे लिखी दवा दें—

(२)	कपूर	४ मा०
	बीज धतूरा	१ मा०
	अनार का छिलका या छाल	२ तो०
	सौंठ	१ तो०
	देशी शराब	२ छ०
	शीरा	२ तो०

कपूर और बीज धतूरे को पीसकर शराब में घोल लो। अनार के छिलके या छाल को कूट-पीसकर आध सेर पानी में मिलाकर आग पर चढ़ा दो। आधा पानी रह जाय तब छानकर यह पानी और कपूर व धतूरे के बीज मिली हुई शराब का घोल व शीरा मिलाकर मामूली गर्मगर्म जानवरको पिलाओ।

(३) बारहसींगे का सींग आग में जला लो। इस में से एक तोला लो और १ तो० भुनी हुई फटकड़ी दोनों मिलाकर

आधा सवेरे आधा शाम को सौंठ के काढ़े के साथ दो।

खानपान—दवाई देने के तीन-चार घंटे तक पानी बिलकुल न दो और जब पानी पिलाओ तो गर्म पिलाओ, ठण्डा हर्गिज न पिलाओ और खाने को गर्म दूध या चौकड़ की गर्म चाय दो। जानवर के अच्छा होने पर थोड़ा दलिया और मुलायम चारा देना चाहिए और ५, ६ रोज़ के बाद साधारण खुराक देनी चाहिए। बीमारी में यह ध्यान रखना चाहिए कि जानवर जहाँ तक हो कमज़ोर होने न पावे और उसको तीन-चार बार चाय और दूध थोड़ा थोड़ा जरूर देते रहना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जुकाम जैसी ही हैं। इस बीमारी में जानवर के शरीर पर हवा का झोंका हर्गिज नहीं लगना चाहिए इस बीमारी में बीमार को तन्दुरुस्त जानवर से अलग रखना चाहिए ताकि उसकी भली भाँति सेवा-टहल हो सके और दूसरों को भी तकलीफ न हो; क्योंकि यह बीमारी छूत की बीमारी की तरह दूसरे तनदुरुस्त जानवरों में भी बीमार जानवर के नाक के सिनक, झूठन या गोबर-पेशाब वगैरा से लग जाती है इसलिए उपरोक्त चीज़ें सब इकट्ठी करके जिस तरह छूतवाली बीमारियों की हालत में तुरंत जला देते हैं या गहरे गड्ढे में डालकर ढक देते हैं वैसे ही जला या ढक देनी चाहिए। निमोनिया की बीमारी में जानवर को जहाँ तक हो नाल से कोई चीज़ नहीं पिलानी चाहिए।

(१४) दमा

कमज़ोर जानवर को ज्यादा दौड़ाने से, बहुत दिनों

तक बराबर खाँसी और बदहज़मी रहने से और बीमारी में खान-पान या इलाज में लापरवाही करने से दमा हो जाया करता है।

पहचान—जल्दी जल्दी खींचकर तकलीफ से साँस लेना यहाँतक कि जल्दी साँस लेने की वजह से कोख और पेट में दर्द हो जाना। लगातार खाँसी आते रहना और बलगम का गिरना दमा की निशानी है।

इलाज—बीज धतूरा १ मा०
कपूर १ मा०
अनार का छिलका
या छाल १ तो०
देशी शराब १ छ०
बाँसे के पत्तों का
रस १ तो०
शीरा १ छ०

कपूर व बीज धतूरे को बारीक पीसकर, बाँसे के रस के साथ शराब में घोल लो। अनार के छिलके या छाल को पानी में खूब पकाओ जब पककर आधा पानी रहजाय तो छानकर इस पानी को और शराब में मिले हुए, कपूर धतूरे के बीजों, बाँसे के पत्तों के रस और शीरा सबको मिलाकर गर्म-गर्म दिन में एक या दो बार दें।

खान-पान—शीघ्र पचनेवाला और मुलायम चारा तथा चौकड़ का दलिया, चाकड़ की चाय नमक डालकर दीजिए। पीने

को निवाया गर्म पानी परन्तु यदि यह सम्भव न हो तो कुएँ का ताज़ा पानी देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर को तेज़ सर्दी, गर्मी और ओस से बचाइए और जहाँ तक हो खुले में न रखकर मकान में रखना चाहिए। कोई ठण्डी तासीर य कब्ज़ करनेवाली और देर में हज़म होनेवाली खाने की चीज़ नहीं देनी चाहिए। जानवर को खिलाने-पिलाने में पूरी होशियारी रखनी चाहिए ताकि जानवर कमजोर न हो क्योंकि कमजोर होने से बीमारी के बढ़ने का डर रहता है।

(१५) पेशाब में खून आना

यह बीमारी चोट लगने या अधिक गर्मी या कोई ज़हरीली चीज़ आदि खा लेने या गुर्दे या मसाने की कमज़ोरी की वजह से हुआ करती है।

इलाज—(१) कीकर के पत्ते ४ छ०
हल्दी २ तो०

दोनों को भंग की तरह पीसकर सुबह-शाम जानवर को पिला दें।

(२) बारीक पिसी हुई फिटकरी १ तो०
दूध ऽ॥

फिटकरी दूध में मिलाकर पिला दें।

यदि जानवर ज्यादह गर्मी की वजह से खून का पेशाब करता हो तो उसे नीचे लिखी दवा दें—

(३) अमचूर (आम की सूखी खटाई) २ छ० मिट्टी के बर्तन में शाम को भिगो दें और सवेरे उसको खूब मथकर छानकर पिला दें।

(४) इसी प्रकार मिट्टी के बर्तन में पावभर सफेद तिल शाम को भिगो दो और सवेरे ठंडाई की तरह घोटकर पिला दो।

अगर जानवर थम-थमकर खूनदार पेशाब करे तो उसको नीचे लिखी दवा दो—

(५) गेरू	१ छ०
घी	३ छ०
सौंफ	१ छ०

सौंफ और गेरू को खूब बारीक पीसकर ࿋॥ दूध और घी में मिलाकर जानवर को पिला दो।

खान-पान—कोई गर्म चीज़, बादी और क़ब्ज़ करनेवाली खाने को न दो। हरी दूब घास व शीशम की पत्ती जहाँतक हो ज्यादह-से-ज्यादह खिलावें। यह इस बीमारी में बड़ी लाभप्रद है। पीने के पानी में ज़रा-सा शोरा मिला देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर के बाँधने के स्थान को निहायत साफ़ रक्खें। पेशाब इत्यादि फौरन हटाते रहें।

(१६) पेशाब न होना या रुकावट पड़ जाना

यह बीमारी पुट्ठे, मसाने या गुर्दे की कमज़ोरी व पथरी के होने की वजह से हुआ करती है। सूखा चारा खिलाना और कम पानी पिलाने की वजह से भी हो सकती है।

पहचान— जानवर को पेशाब न होना, उसका बेचैन होकर उठना बैठना और बार-बार पेशाब करने की कोशिश करना इस बीमारी के लक्षण हैं।

इलाज— सोरा १ तो०
धनिया २ तो०
कपूर ३ मा०

सब चीजें घोट-पीसकर ठण्डे पानी में घोलकर पिला दें। और नीचे लिखी दवाओं में से कोई-सी उसके मूतने के स्थान पर लगाइए—

(१) नीम के पत्ते उबालकर नमक मिलाकर मूतने के स्थान पर लगाइए।

(२) बन्धे वाले जानवर के मूतने की जगह एक साबित लाल मिर्च रख दें। जब पेशाब करने लगे तो निकाल लें।

(३) इसी प्रकार शोरे के गाढ़े घोल में बत्ती भिगोकर मूतने की जगह चढ़ा दें।

(४) यदि संभव हो तो मूतने की जगह एक या दो खाँड के बताशे चढ़ाने से भी पेशाब हो जाता है।

(५) बेरी के पत्ते चबाकर मूतने की जगह रखने से भी पेशाब हो जाता है।

खान-पान—पेशाब में खून आने के विषय में बताये अनुसार।

अन्य हिदायतें—अगर उपरोक्त दवा देने से भी फायदा न हो तो सरकारी पशु-डाक्टर को बुलाकर दिखाना चाहिए।

(१७) पेशाब का टपकते रहना

यह बीमारी भी मसाने, गुर्दे इत्यादि की कमजोरी व पथरी आदि की वजह से होती है।

पहचान—पेशाब का रुक-रुककर थोड़ी मिकदार में आना व टपकते रहना।

इलाज—यह रोग प्रायः पथरी के कारण होता है इसलिए ढोरों के डाक्टर से आपरेशन द्वारा पथरी निकलवा देनी चाहिए। खाने को कोई भी ठण्डी व मौतदिल ताकत की दवा खिलानी चाहिए।

(१)	मक्का के भुट्टे के बाल	२ छटाँक
	काली-मिर्च	१ तोला
(२)	खर्बूजे के छिलके	१ पाव
	काली मिर्च	१ तोला

मक्का के भुट्टे के बाल दो छटाँक यदि न मिलें तो खरबूजे के छिलके एक पाव, काली (गोल) मिर्च १ तोला दोनों को ठंडाई की तरह पीसकर ठंडे पानी में घोलकर सुबह-शाम पिलाइए।

खान-पान—पेशाब में खून आने की बीमारी के अनुसार।

(१८) फोतों का सूजना

किसी प्रकार की चोट लगने से ऐसा हो जाता है। बाज़ दफे कीटाणु भी इसका कारण होते हैं। कभी बादी से फोतों पर

सूजन आ जाती है।

पहचान—फोतों पर सूजन होती है। जानवर पिछले पैर फैलाकर चलता है और अक्सर ज्यादा तकलीफ होने से उसे बुखार भी हो जाता है।

इलाज—जानवर को आराम दीजिए और बीमार जानवर को वरदाने (ग्याभन करने) से रोकना चाहिए।

(१) ठण्डा पानी गीले कपड़े से बार-बार फोतों पर डालिए और ठण्डक पहुँचाइए।

(२) टेसू व ढाक के फूल थोड़े नमक के साथ पानी में पकाकर उसके पानी से सेक कीजिए और सेक के बाद पत्तों को चारों तरफ़ लगाकर उसपर लँगोट की तरह कपड़ा बाँध दीजिए।

(३) इसी तरह अरण्ड के पत्ते, मकोय, झड़बेरी के पत्ते और आकाशबेल इन सबको खूब उबालकर उसके गुनगुने पानी से सेक कीजिए और फिर उन पत्तों को अण्डकोष के चारों तरफ लगाकर लंगोट की तरह कपड़ा बाँध दीजिए।

(४) हल्दी, चूना, फिटकरी, कड़वा तेल सबको खूब बारीक पीसकर तेल में मिलाकर आँच पर पकालें और फोतों पर मामूली गर्म लगावें।

(५) इमली के पत्ते और नमक सिलबट्टे पर पीसकर चटनी की तरह पीस लें। फिर किसी बर्तन में उसको भली भाँति गर्म करके अण्डकोष पर गरम-गरम लेप करें।

उपरोक्त दवाइयों में से कोई भी दिन में दो बार लगावें और नीचे लिखी दवा सवेरे-शाम खाने को दें—

(६) कपूर २ मा०

कलमी शोरा १ तो०

शराब १छ०

शराब में दोनों चीजों को घोलकर पावभर पानी में मिलाकर पिलाइए।

(७) यदि बादी से सूज गये हों तो—

अरण्डी का तेल ३ छ०

त्रिफले का पानी पाव भर

दोनों को मिलाकर पिलाइए और तम्बाकू के पत्ते गर्म करके बाँधिए।

खान-पान—शीघ्र पचनेवाली खुराक देनी चाहि ।

अन्य हिदायतें—जानवर के रहने का स्थान बिलकुल सूखा रहना चाहिए। यदि ज़रा-सा भी गीला हो जाये तो फौरन सूखा कर दें। उसके बैठने की जगह पर भली प्रकार बिछावन कर दीजिए ताकि वह आराम से बैठ सके।

(१९) मिरगी

प्राय: यह रोग बच्चों को ज्यादा होता है। उम्र बढ़ने पर कम होता है। कभी-कभी पेट में कीड़े हो जाने से भी होता है। इसलिए कीड़े दूर करने का इलाज करना चाहिए।

पहचान—जानवर अचानक काँपने लगता है और गिर जाता है। गर्दन तथा पैर अकड़ जाते हैं और बेहोश हो जाता है और बाज़ दफ़ा मुँह से फेन या झाग भी आते हैं।

लिखी कोई-सी दवा दीजिए:—

(१) कपूर ३ माशे

कलमी शोरा १ तो०

एक छटाँक देशी शराब में घोलकर आध सेर गुनगुने गर्म पानी में घोलकर पिलाइए।

(२) गोमा घास के फूल १ छ०

काली मिर्च १ तो०

आध सेर पानी में घोट-पीसकर गुनगुना गर्म करके दीजिए।

(३) शोरा १। तो०

नमक २।। तो०

चिरायता २।। तो०

आध पाव राब, शीरा या गुड़ में मिलाकर खिला दीजिए या आध सेर गुनगुने गर्म पानी में घोलकर दीजिए।

(४) कपूर ६ मा०

शोरा १ तो०

कपूर को ज़रा-सी शराब में घोलकर शोरा मिलाकर आध सेर गुनगुने पानी में घोलकर पिला दें।

खान-पान—खाने को मुलायम शीघ्र पचनेवाला चारा देना चाहिए। तेज़ बुखार में दूध व गेहूँ के चोकड़ व तीसी की चाय देनी चाहिए। बाद में ज़रा अच्छा होने पर दलिया इत्यादि और बिल्कुल अच्छा होने पर धीरे-धीरे साधारण चारा-दाना देना चाहिए। जानवर को तेज़ हवा व सर्दी-गर्मी से बचाइए

और भूल उढ़ाकर रखिए ताकि सर्दी, मच्छर, और मक्खी न सतावें। रहने का स्थान बिल्कुल साफ़ हो। पीने को गुनगुना गर्म या कुएँ का ताजा पानी दीजिए।

अन्य हिदायतें—बहुत तेज़ बुखार में जुलाब की दवा नहीं देनी चाहिए। अक्सर बुखार अकेले बहुत कम होता है। यह दूसरी किसी बीमारी की अलामत होता है, इसलिए बुखार होने पर जानवर को बहुत होशियारी से देखते रहना चाहिए कि कहीं उसको और कोई बीमारी तो नहीं है। बुखार में बहुत ठण्डा पानी पीने से तथा ठण्डी हवा लगने से निमोनिया हो जाया करता है, इसका ध्यान रखना चाहिए।

(२१) साँड का ग्याभन न करना

जब कभी बहुत बड़े रेवड़ में अकेला साँड रहता है या किसी कारण से वह तादाद से ज्यादा गायों को गाभिन करता है या खुराक वग़ैरा या अन्य कारण से कमजोर हो जाता है, खूराक में चर्बी बनानेवाले अंश ज्यादा होने के कारण उसकी चर्बी बढ़ जाती है या अन्य हानिकारक अंशों की बहुतायत होने से तथा ढलती उमर या बुढ़ापे का समय आ जाता है तब ऐसा हो जाया करता है। यह बीमारी खूराक में खास खाद्य-प्राणों (vitamins) की कमी के कारण भी हो जाया करती है।

पहचान—साँड का देर तक गाय को सूँघते रहना या बार-बार कूदने पर भी गाभिन न करना और कई बार गाभिन करने पर भी गर्भ का न ठहरना इसके लक्षण हैं।

इलाज—सबसे पहले यह देखना होगा कि किस कारण से यह बीमारी हुई है। फिर उस कारण को दूर करना चाहिए। बाद में उसको पौष्टिक खूराक और नीचे लिखी दवा खाने को देनी चाहिए।

गेहूँ, जई, या बाजरा में से कोई चीज २४ घन्टे तक पानी में भिगोकर एक गीले कपड़े या बोरी में बाँधकर छाया में रख दें। जब जमकर दो-दो अंगुल की कोपल (अंकुर) निकल आवे तो खिला दें।

उपरोक्त दवाई १ सेर से आध सेर सुबह व १ सेर से आध सेर शाम को जानवर को कद व वजन के अनुसार महीने सवा महीने तक लगातार खिलाइए।

खान-पान—शीघ्र पचनेवाला पौष्टिक चारा-दाना दें। यह ध्यान रखें कि चारे-दाने में जहाँतक हो तेल और चिकनाई-वाली चीजें या खानेवाले अनाज की चीजें न दी जावें।

अन्य हिदायतें—कुछ अर्से तक साँड को आराम देना चाहिए और गायों के साथ मिलने न देना चाहिए। यदि मोटा हो गया हो या चर्बी छा गई हो तो खूराक कम कर देनी चाहिए और उससे थोड़ा परिश्रम लेना चाहिए। सिवाय सख्त सर्दी, गर्मी व बहुत ठंडी व गर्म हवा के उसको खुले मैदान में रखना चाहिए। कुछ परिश्रम के लिए रोज उसको घुमाना चाहिए या उससे थोड़ा-सा काम लेना चाहिए। यदि कमजोरी बुढ़ापे के कारण से हो तो फिर उससे ग्याभिन कराने का काम न लेना चाहिए।

(२२) सफेद झागवाला कीड़ा

(इसको अकसर 'भौंरी' भी कहते हैं)

वर्षाऋतु में या उसके बाद अक्सर खेतों या चरागाहों (गोचर-भूमि) में एक प्रकार का कीड़ा पैदा हो जाता है जिसके चारों तरफ़ सफेद झाग होते हैं और वह अक्सर घास इत्यादि हरे चारे पर पाया जाता है। जानवर घास या चारे के साथ उसको खा जाता है। उसके खा जाने से ज़हर चढ़ जाता है और जानवर बीमार हो जाता है।

पहचान—जानवर बेहोश होकर गिर जाता है। गर्दन एक तरफ डालकर पड़ा रहता है। अपने आप खड़ा नहीं हो सकता। कभी-कभी आँखें फिर जाती हैं और मुहँ से झाग आने लगता है। खाना-पीना बिल्कुल बन्द कर देता है।

इलाज—जानवर को चुपचाप आराम करने देना चाहिए। मुमकिन हो तो तो वहीं शान्ति से पड़े रहने देना चाहिए। उसको कम्बल या झूल से ढक देना चाहिए। सर्दी और ओस से बचाने के लिए (यदि जानवर खुले में या मैदान में पड़ा हो) यथासंभव उसपर इधर-उधर दो खाटें खड़ी करके पूली या टाट रखकर या अन्य किसी प्रकार छाया कर देनी चाहिए। फिर नीचे लिखी दवा फौरन ही देनी चाहिए और जबतक अच्छा न हो एक खूराक सवेरे और एक खूराक शाम को बराबर देते रहना चाहिए।

१ तो० पिसी हुई काली मिर्च पावभर घी में मिलाकर

गुनगुना-गुनगुना गरम करके पिला दें। दवा पिलाने के तीन-चार घन्टे बाद तक पानी नहीं पिलाना चाहिए।

खान-पान—कुएँ का ताज़ा पानी दें और होश में आने के बाद उसको एकदम ज्यादा खूराक खाने को न दें। बल्कि थोड़ा शीघ्र पचनेवाला चारा-दाना दें और फिर धीरे-धीरे साधारण खुराक दें।

अन्य हिदायतें—जानवर को तेज़ सर्दी-गर्मी से बचावें और उसको किसी प्रकार से दिक न करें। उसको अधिक से अधिक आराम पहुँचाने की कोशिश करें। जिस खेत और जंगल से चारा आता है या जहाँ वे चरते हैं वहाँ भली प्रकार देख-भाल करके जहाँ भी सफेद झागवाले कीड़े मिलें उनको घास समेत वहाँ से हटाकर जला देना या गहरा गाड़ देना चाहिए।

(२३) घामड़

जानवर के सख्त गर्मी में तेज़ धूप व लू अर्थात् गर्म हवा में काम करने, फिरने और रहने से यह बीमारी हो जाती है।

पहचान—जानवर को धूप का अच्छा न लगना, हमेशा धूप से हटकर छाया या ठण्डक में खड़े होना, सुस्त होना, जल्दी-जल्दी साँस लेना, कम खाना और इसलिए दुबले होते जाना और बीमारी का ज्यादा असर होने की हालत में साधारण बुखार हो जाना इसके लक्षण हैं।

इलाज—जानवर को जहाँ तक हो छाया में रखें और नीचे

लिखी दवा में से कोई एक दें:—

(१) कच्चे आम पावभर उपले की या दूसरी किसी आँच में दबाकर पकालें। पक जाने पर आधसेर या तीनपाव पानी में खूब मथकर छिलके गुठली निकालकर पिला दें। सवेरे-शाम दोनों समय यह दवा देनी चाहिए।

(२) पवाँर (यह तालाबों में या जहाँ पानी रुका रहता है वहाँ मिलती है। खाँड बनानेवाले इसको खाँड बनाने के काम में लाते हैं, इसको सेवार भी कहते हैं) आधापाव पीसकर पावभर कच्ची खाँड में घोलकर छः-सात दिन तक पिलावें।

(३) सफेद तिल्ली पावभर रात को मिट्टी के कोरे बर्तन में भिगोकर सवेरे घोटकर सात दिन तक पिलावें।

(४) मेंहदी १ तो०

जीरा सफेद १० तो०

रात को मिट्टी के बर्तन में भिगो लें और सवेरे घोट-पीस-कर नाल से पिला दें।

(५) पाव भर जीरा एक पाव सरसों के तेल में खूब घोट-पीसकर रोज सवेरे ४० दिन पिलायें।

(६) चने के पत्तों का साग पावभर भंग के अनुसार पीसकर पानी में घोलकर पिलायें।

खान-पान—क़ब्ज़ करनेवाली तथा गर्म तासीरवाली चीजें न देकर ठण्डी तासीरवाली व शीघ्र पचनेवाली चीजें खिलायें। पीने के पानी में थोड़ा कलमी शोरा डालकर पिलायें।

अन्य हिदायतें—जहाँतक हो जानवर को धूप में न रखें। और धूप में काम न लें और गर्म हवा व लू से बचायें।

(२४) जानवर को ज़हर चढ़ जाना

गफलत या भूल से या तेज़ भूख में या अच्छे चारे के साथ मिली हुई कोई ज़हरीली चीज़ खा लेने से जानवर को ज़हर चढ़ जाता है। बाज़ दफ़ा ऐसा भी होता है कि बिना फली ज्वार (चरी) इत्यादि कुछ चारे की फसलें भी ऐसी होती हैं जिन्हें ख़ास हालत पर खा लेने से उनका ज़हर जानवर को चढ़ जाता है।

जानवर की खाल अनेक प्रकार के काम में आती है। उसकी क़ीमत अच्छी मिल जाती है। चमारों का तथा अन्य कुछ आदमियों का यही रोज़गार या जीवन-निर्वाह का तरीका है कि वे लोग जानवरों की खाल उतारकर उसे बेचते हैं। ये लोग कभी-कभी ख़ास मौक़ों पर जानवर को ज़हर दे देते हैं। ऐसे आदमी गाँव में ठेका ले लेते हैं कि वहाँ जितने जानवर मरेंगे उनकी सबकी खाल उनकी होगी। भारतवर्ष में प्राचीन ग्राम-संगठन की प्रणाली के अनुसार गाँव में जितने ढोर मरते हैं उनका चमड़ा गाँव के चमार उतारकर बेचते हैं या उसकी चीजें बनाते हैं। इसी प्रकार गोरक्षिणी संस्थाएँ चमारों को मरे हुए ढोरों का ठेका दे देती हैं कि अमुक रक़म के बदले उनकी संस्था में जितने ढोर मरें उनका चमड़ा ले लिया करें। कभी-कभी चमार अपने लाभ के लिए मौक़ा मिलने पर और ख़ासकर जिन दिनों में बीमारी फैली होती है उन दिनों में जानवर को ज़हर दे देते हैं या छूतवाली बीमारी भी फैला दिया करते हैं ताकि उनको अधिक आमदनी हो। दुश्मनी से भी बाज़ दफ़ा

बदला लेने की ग़र्ज़ से जानवर को ज़हर दिया जाता है।

पहचान—आँख लाल और शरीर गरम हो जाता है। अफारा हो जाता है और बाज़दफ़ा पतला व खूनी दस्त होता है और जानवर तड़पने लगता है। जानवर की गर्दन ऐंठ जाती है और वह तड़प-तड़पकर मर जाता है।

इलाज—अलग-अलग क़िस्म के ज़हर का अलग-अलग इलाज है। अच्छा तो यह है कि ऐसे मौक़े पर सरकारी ढोरों के डाक्टर को बुलाकर दिखाना चाहिए ताकि उसका माकूल इलाज भी हो सके और यदि जान-बूझ कर या दुश्मनी की वजह से ज़हर दिया गया हो तो मुलज़िम से प्रायश्चित भी कराया जा सके। यहाँ पर हम अहतियातन एक-दो दवा लिखे देते हैं। आरम्भ में नीचे लिखी दवा देनी चाहिए—

एक सेर गर्म दूध में आध सेर घी और आधी छटाँक तारपीन का तेल भली प्रकार मिलाकर पिला देना चाहिए।

इसके बाद नीचे लिखी दवा दीजिए—

केले की जड़ का रस	१ पाव
कपूर	१ तो०

भली प्रकार मिलाकर पिला दीजिए।

नोट—यदि केले का रस न मिले तो पावभर गुलाब जल या उबाले हुए पानी में १ तोला कपूर भली भाँति मिलाकर पिला दीजिए।

कपूर को केले के रस में या पानी में घोलने की तरकीब यह है कि उसको पहले ज़रा-सी शराब, तारपीन के तेल या

सिरके में घोलकर फिर केले के रस में घोल देना चाहिए। तारपीन का तेल या शराब न हो तो कपूर पर पानी का छींटा दे-देकर बारीक पीस लो। जब बारीक हो जावे पानी में मिलाकर पिला दो।

(२५) चरी से ज़हर

वर्षा में जब पानी पड़ना बन्द हो जाता है और हरी चरी छोटी होती है तो उसमें एक क़िस्म का ज़हर पैदा हो जाता है। उसको खाने से जानवर को ज़हर चढ़ जाता है। इसके लिए फौरन ही पीछे बताई दूध, घी, तारपीन के तेलवाली दवा देनी चाहिए। यदि यह सम्भव न हो तो उसके तमाम शरीर पर कीचड़ लपेट देना चाहिए। इसके बाद नीचे लिखी दवा देनी चाहिए—

काली मिर्च	१ तो०
हींग	१ तो०
सोंठ	१ तो०
अजवायन	१ तो०
काला नमक	२ तो०

सबको बारीक पीसकर आध सेर गुनगुने पानी में मिलाकर दिन में दो बार द।

खान-पान—जहाँ तक हो जानवर को पानी पीने को न दें और खास कर दवा देने के दो-तीन घंटे तक तो बिल्कुल नहीं देना चाहिए। खाने को चावल का माँड, तीसी या चोकड़ की चाय या दूध देना चाहिए। अच्छे होने पर धीरे-धीरे साधारण

चारा-दाना देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जहाँ तक हो जानवर को फौरन दवा देनी चाहिए। जितनी जल्दी दवा दी जायगी उतनी ही जानवर के बचने की अधिक उम्मीद समझनी चाहिए। ऊपर लिखी दवा देने के पश्चात् जानवर को ढोरों के डाक्टर को दिखा देना हर एक हालत में अच्छा है।

(२६) लकवा या फ़ालिज

इसमें अचानक जानवर का पिछला हिस्सा या एक ओर का धड़ सुन्न हो जाता है। यह कमर पर चोट इत्यादि लगने से सख्त गर्मी-सर्दी व बारिश में भीगने से या सूत की तरह एक प्रकार के कीड़े रीढ़ की हड्डी के गुद्दे में हो जाने से होती है।

पहचान—इसकी पहचान यह है कि जिस हिस्से में यह बीमारी होती है उसमें सुई इत्यादि चुभोने से दर्द नहीं होता। ऐसा मालूम होता है कि मानों वह हिस्सा शरीर में है ही नहीं।

इलाज—नीचे लिखी कोई दवा दें—

(१)	कुचला	४ माशे
	सोंठ	६ माशे
	हीरा-कसीस	६ माशे
	नमक	आध छ०

सबको कूट-पीसकर आध सेर गर्म पानी में घोलकर पिलावें।

(२) २॥ तो० सरसों पीसकर गर्म पानी में मिलाकर लेप बना लें और फिर जहाँपर लकवे का असर है वहाँ लगावें।

(३) अदरक २ तो०
देसी शराब ५ तो०
भुनी हुई हींग ६ माशे

इन सबको मिलाकर दो-दो घंटे बाद दें।

खान-पान—दूध और मुलायम, शीघ्र पचनेवाली घास खानेको देनी चाहिए। थोड़ा लाभ होने पर दलिया, चोकड़ इत्यादि दे सकते हैं। पीने के लिए गुनगुना पानी दें।

अन्य हिदायतें—जानवर को अधिक-से-अधिक आराम पहुँचाने की कोशिश करनी चाहिए। उसके रहने के स्थान को साफ़ रखना चाहिए। बिछाली लगा देनी चाहिए ताकि आराम से बैठे। जानवर यदि खुद करवट न ले सके तो करवट दिलाते रहना चाहिए।

(२७) गठिया या बाय

इस बीमारी में ख़ून में विकार पैदा होकर पट्ठों और जोड़ों में सूजन हो जाती है और सख्त दर्द पैदा हो जाता है। एकदम गर्मी में ठण्ड लगने से, वर्षा में भीगने से, ज्यादा खाने की वजह से चर्बी चढ़ जाने से, सील या नमी की जगह में जानवर के काफ़ी अर्से तक खड़े रहने से यह बीमारी हुआ करती है। ख़राब चारा-दाना और गन्दा पानी पीने से भी हो जाती है।

पहचान—जोड़ों और पुट्ठों में दर्द हो जाता है। एकदम से सूजन हो जाना और जानवर का बेचैन हो जाना, दर्द एक जगह से दूसरी जगह बदलते रहना इसकी पहचान हैं। बाज़ दफ़ा

जब कभी बहुत जोर से बीमारी होती है तो बुखार भी हो जाता है।

इलाज—जानवर को सर्दी और सील या भीगने से बचाना चाहिए। आरम्भ में एक जुलाब दे दीजिए। इसके लिए नीचे लिखी कोई दवा दे सकते हैं:—

(१)	सरसों या अरण्डी का तेल	८ छटाँक
	सौंठ	आधी छ०

सौंठ को कूट-पीसकर तेल में मिलाकर दें।

(२)	खारा नमक	८ छ०
	सौंठ	आधी छ०

दोनों को कूट-पीसकर आधसेर गुनगुने पानी में घोलकर दें।

उपरोक्त जुलाब देने के बाद नीचे लिखी दवा खाने के लिए दें—

(३)	गुड़	४ छटाँक
	सौंठ	१ तो०
	अजवायन	५ तो०
	मेथी	२ छटाँक
	भंग	१ तो०

सौंठ, अजवायन, मेथी को बारीक पीस लें और भंग को भी थोड़े पानी में डालकर सिल-बट्टे पर खूब बारीक पीस लें। सबको गुड़ में मिलाकर एक पाव दूध में घोलकर पका लें और गुनगुना-गुनगुना जानवर को पिला दें।

दूसरे रोज़ एक वक्त नीचे लिखी दवा और सवेरे-शाम को

उपरोक्त दूध की आवटी दीजिए—

(४) पलास पापड़ा १ तो०

अनार की छाल १ तो०

सौंफ १ तो०

अमलतास १ तो०

आध सेर पानी में पकाकर जब पावभर रह जाय तो गरम-गरम भूखे पेट दें।

नीचे लिखी किसी दवा से मालिश करके गर्म रूअड़, कपड़े या ईंट से सेकें। सेंक के बाद अगर सम्भव हो तो उस जगह पर इसीको बाँधकर जानवर के ऊपर झूल डाल देनी चाहिए।

(५) आक के पत्ते कूटकर रस निकालें और सेरभर रस में एक पाव तिल का तेल मिलाकर पकावें। जब रस जल जाय तो उसे छान लें और इस तेल की मालिश करें।

(६) १ तो० कपूर को एक छटाँक तारपीन के तेल में घोलकर एक पाव तिल के तेल में भली प्रकार मिलाकर मालिश करें।

(७) एक पाव धतूरे के पत्ते का रस तिल के आध सेर तेल में मिलाकर पकावें। पानी जल जाय और खालिस तेल रह जाय तो छान लें और मालिश करें या २ तो० धतूरे के बीज बारीक कूट-पीसकर एक पाव तिल के तेल में मिलाकर १५-२० दिन तक धूप में रक्खें और फिर छानकर शीशी भर लें, इसकी मालिश करें।

(८) एक पाव लहसुन को खूब कुचल लें या सिल-बट्टे पर पीस लें फिर उसे आध सेर तिल के तेल में मिलाकर खूब पका लें। जब भली प्रकार पक जाय तो कपड़े में डालकर छान लें और उसकी मालिश करें।

(९) दो सेर दूब-घास को दस सेर पानी में उबालकर बफारा दें और गर्म-गर्म दुखती जगह पर डालें। इसी प्रकार पलास के फूलों को भी पानी में उबालकर काम में ला सकते हैं।

जानवर को लाभ होने के बाद भी थोड़े दिन तक नीचे लिखी ताक़त की दवा खिलानी चाहिए—

हीरा कसीस	१ तो०
सोंठ	१ तो०
चिरायता	२ तो०

या

भंग	१ तो०
खाने का सोड़ा	१ तो०

या

नमक	१॥ तो०

आध सेर पानी में घोलकर या गुड़ की डली और शीरे में मिलाकर सात दिन तक दें।

खान-पान—पीने को गुनगुना पानी खाने को शीघ्र पचने-वाली घास, चाय, दलिया, दूध इत्यादि। अच्छे होने पर धीरे-धीरे साधारण खूराक बीमारी के बीच में और अच्छे होने के एक-दो महीने बाद तक भी चना, लोभिया, मटर, खेसारी इत्यादि या

अन्य द्विदल जाति के कब्ज और बादी करनेवाला चारा-दाना न दें।

अन्य हिदायतें—अक्सर यह बीमारी खाने-पीने की ख़राबी की वजह से भी हो जाती है इसलिए पीने का पानी बदल दीजिए अर्थात् दूसरी जगह का पानी पीने को दें और खाने का चारा-दाना भी जहाँ तक हो बदलकर दूसरी चीजें दें। जानवर को नमी और ठण्डक से बचावें। उसके नीचे भली प्रकार बिछाली या रेत बिछा दें ताकि वह आराम से बैठ सके। आराम मिलने से जानवर जल्दी नीरोग होगा।

: ६ :

मादा पशुओं का गर्भधारण, ब्याना और खास बीमारियाँ

मादा (Female) पशु प्रायः नर (Male) पशुओं से कमजोर और नाजुक होते हैं। उनको नर की अपेक्षा जल्दी रोग सताता है। इसलिए उनके देखभाल, रहन-सहन, खाने-पीने में विशेष होशियारी रखनी चाहिए। दूध देनेवाले जानवर की सेवा-टहल में ज़रा-सी चूक होने से ही बड़ी हानि होती है। जब पशु ब्याता है तब उसकी हालत बड़ी कमजोर होती है। उस समय ज़रा-सी नाजानकारी और असावधानी से न मालूम क्या रोग उत्पन्न हो जाय। उस समय ख़ासकर सब बातें समझकर किसी जानकार आदमी की सहायता से पशु को ब्याने में मदद करनी चाहिए और ब्याने के बाद भी १०-१५ दिन तक उसकी ख़ास देख-भाल और सेवा-टहल करनी चाहिए।

(१) पशु के गाभिन होने से ब्याने तक का संक्षिप्त वर्णन

भारतवर्ष में प्रायः गायें, भैंसें वगैरह करीब दो-ढाई वर्ष से चार या साढ़े-चार वर्ष तक की उम्र में पहली बार गाभिन होती

हैं। पहली बार जल्दी या देर से गाभिन होना उनके बचपन की खुराक, उनकी बढ़ोतरी तथा उनकी नस्ल पर निर्भर होता है।

गाय गाभिन होने के बाद २८० से २६० दिन तक में बच्चा देती है। अगर ८ महीने के पहिले बिया जाती है या उसका बच्चा बाहर आ जाता है तो वह गर्भपात कहलाता है। प्रायः वह बच्चा नहीं जीता।

गाय ब्याने के बाद हर इक्कीसवें दिन थोड़ा-बहुत गर्माती है। ब्याने के करीब दो महीने बाद जबतक वह गाभिन न हो तेजी के साथ हर एक इक्कीसवें दिन गर्माती है। उस समय उसको साँड से मिलाना चाहिए।

जिस गाय को पाँच-छः महीने का गर्भ हो उसको गर्भ के पालने के लिए कुछ अधिक खुराक की आवश्यकता होती है और यह आवश्यकता जबतक वह ब्याती नहीं बराबर बढ़ती जाती है। इसलिए उसको इस समय अधिक खुराक देनी चाहिए वरना गाय भी कमजोर हो जायगी और बच्चा भी कमजोर पैदा होगा और जब वह ब्यायगी तो दूध भी कम देगी। इसलिए इस समय उसकी खिलाई-पिलाई उदारता-पूर्वक करनी चाहिए।

गाभिन होने के बाद जो उछलने-कूदनेवाली होती है वह गाय भी पहले के मुकाबले में शान्त हो जाती है और यदि गर्भ ठहर जाता है तो ब्याने के समय तक गर्म नहीं होती। कभी-कभी गाय एक बार गाभिन होने के बाद फिर दुबारा और तिबारा गर्म हुआ करती है। उस हालत में यह समझना चाहिए कि वह गर्भवती नहीं है और इसलिए उनको साँड से मिला देना

चाहिए। जब गाय गाभिन हो जाय तब उसे फ़ौरन ही कोई विशेष पौष्टिक चीज़ खाने को दे देनी चाहिए। इससे गर्भ ठहर जाता है। इस समय एक-दो मास तक कोई गर्म तासीर की चीज खाने को नहीं देनी चाहिए। यह पहचानना कि गाय गाभन हो गई है या नहीं, बड़ा कठिन है। तीन महीने बाद डाक्टर लोग गर्भाशय में हाथ डालकर जाँचकर बता सकते हैं। सर्व-साधारण को इस जाँच की कोई आवश्यकता नहीं होती। इसलिए हम यहाँ उसका कोई जिक्र नहीं कर रहे हैं। पाँच-छः महीने के बाद तो गाय के चलते-फिरते और खास करके पानी पीते समय बच्चा हिलता हुआ दिखलाई दे जाया करता है और गाय की शारीरिक अवस्था से भी अन्दाजा हो जाता है। ज्यों-ज्यों गर्भ की अवस्था बढ़ती जाती है उपरोक्त चिन्ह स्पष्ट होते जाते हैं।

गाय को ब्याने के क़रीब डेढ़-दो मास पहले दूध से सुखा देना चाहिए ताकि उसको कुछ समय आराम मिल जाय और दूध देने से जो थकावट और कमजोरी हो जाती है उसको पूरी कर सके। ऐसा न होने से गाय के स्वास्थ्य पर खराब असर पड़ता है और वह अगले बियांत में दूध भी कम देती है। अच्छा तो यह है कि दूध से सुखाने के बाद गाय को अन्य ढोरों से अलग रक्खा जाय और इसके खान-पान और सेवा-टहल का विशेष ध्यान रक्खा जाय। यदि यह सम्भव न हो तो कम से कम २०-२५ रोज़ पहले तो उसको अन्य ढोरों से अलग रखना ही चाहिए। अलग रहने का स्थान ऐसा हो जिसमें भली प्रकार रोशनी आती हो और हवा का प्रवेश हो परन्तु हवा का झोंका

सीधे जानवर को न लगता हो और बैठने का स्थान बिलकुल सूखा तथा मुलायम या गुदगुदा हो ताकि जानवर आराम पा सके और अन्य जानवरों के झोंकने, सींग मारने, लड़ने का डर न रहे। इस मौके पर जानवर का बहुत ज्यादा दूर चरने जाना या चलना, फिरना, दौड़ना, कूदना हानिकारक होता है। ज़रा-सी चोट या धक्के इत्यादि से जानवर को नुक़सान पहुँचने का डर रहता है।

व्याने के दस-पंद्रह रोज़ पहले जानवर के पुट्ठे और कोख बच्चे के बोझसे झुक जाते हैं और उसके लेवे में दूध भरना आरम्भ हो जाता है इसलिए वह फूला हुआ मालूम देता है। पूँछ की जड़ के पास दोनों तरफ खड्डा सा हो जाता है और सूजन दिखाई देने लगती है। इस समय गाय को डेढ़ पाव तिल या सरसों का तेल पिला देना चाहिए ताकि जानवर का कोठा साफ़ रहे और व्याने में तकलीफ कम हो तथा बच्चा आसानी से पैदा हो जावे। इस समय उसको व्याने के स्थान पर रखना चाहिए।

व्याने के एक रोज़ पहले अगर जानवर को ऊपर लिखे अनुसार कोई तेल पिला दिया जाता है तो जानवर के व्याने में तकलीफ़ कम होती है। ज्यों-ज्यों गाय के व्याने का समय नज़दीक आता जाता है गाय की बेचैनी बढ़ती जाती है। इस समय इसको व्याने के ही स्थान पर रखना चाहिए। गाय बेचैन दिखाई देती है और बराबर गोबर और पेशाब करती है। योनि से पानी की एक थैली निकल कर फूट जाती है जानवर का दर्द और भी बढ़ जाता है।

गाय कमर को तानकर पिछले पैरों को झुकाकर या बैठकर ब्याती है। ब्याने के समय बच्चे का मुँह सामने अगली टाँगों के ऊपर रखा हुआ निकलता है। ब्याने के बाद गाय को कुछ गर्म और पौष्टिक तथा शीघ्र पचने-वाली चीज़ खिलानी चाहिए ताकि उसको फौरन ही कुछ ताकत मिल सके। ब्याने के बाद छः-सात घन्टे तक प्रायः जेल डाल देती है। जेल को किसी सुरक्षित स्थान पर गहरा गाड़ देना चाहिए ताकि कुत्ता इत्यादि कोई जानवर उसको निकालकर गन्दगी न फैलावे।

इस वर्णन (विवरण) में हमने साधारण अवस्था का वर्णन किया है इसमें जो कुछ असाधारण अवस्था पैदा हो जाती है उसको दूर करने के उपाय या उसका इलाज आगे मिलेगा।

गाय के ब्याते ही बच्चे को किसी कपड़े के टुकड़े से पोंछकर साफ़ कर देना चाहिए और एक साफ़ की हुई तेज़ कैंची या चाकू जिसको पहले ही से नीम के पत्तों के पानी में १५-२० मिनट तक उबाल लिया गया हो और जो उसी पानी में अभी तक रक्खा हुआ हो निकालकर बच्चे की सूँडी या नाभि में जो एक लम्बी सुतली जैसी लटकती है उसको करीब १ इंच नाभि के पास से छोड़कर काट देना चाहिए और जबतक वह सूख न जाय छः-सात रोज़ तक एक बार रोज़ कपूर मिला-हुआ उसपर तेल लगाते रहना चाहिए। बच्चे के खुर के आखिरी हिस्से में कुछ मुलायम हिस्सा होता है उसे हटाकर वहाँ कपूर मिला

हुआ तेल या साफ सरसों का तेल चुपड़ देना चाहिए। इसी प्रकार सरसों के तेल में साफ रुई का फाहा भिगोकर दो-चार बूँद हर एक कान नाक और मुँह में डाल देना चाहिए। बच्चे को थपकी देकर खड़ा करने की कोशिश करनी चाहिए। यदि खड़ा होने में उसको कोई दिक्कत हो तो उसके चारों पैर ऊपर से नीचे हाथ से आहिस्ता-आहिस्ता मल दीजिए। इससे बच्चे के पैरों में ताकत आ जायगी और वह खड़ा हो जायगा।

गाय बच्चे को चाटेगी उसे चाटने दीजिए। गाय के ब्याने से जो स्थान इधर-उधर मैला-कुचैला हो गया है उसे बिल्कुल साफ़ करके सूखा कर दीजिए। नीम के उस गुनगुने पानी से जिसमें कैंची उबाली गई थी गाय का लेवा व थन धीरे-धीरे साफ कर दीजिए और पैर वग़ैरह भी जहाँ तक हों साफ़ कर दीजिए। गरम पानी में ही कपड़ा तर करके उसको निचोड़कर इससे गाय के हर एक गीले अंग को सुखा दीजिए। अब सुहागा या कपूरमिला तेल, घी या मक्खन जो कुछ आपके पास हो चारों थनों पर लगाकर उनका आधा-आधा दूध निकाल लें। बाद में धीरे-धीरे बच्चे के मुँह में एक-एक थन दीजिए और उसको दूध पीना सिखाइए। वह जल्दी ही, दो-चार मिनट में ही दूध पीना आरम्भ कर देगा। उसको दूध पिलाने के बाद बाकी का दूध दुह लीजिए।

एक-दो रोज़ तक गाय को ठण्डी, गर्म व तेज़ हवा में बाहर नहीं निकालना चाहिए। जाड़े के दिनों में अगर ज्यादा हवा और ठण्डक न हो तो घंटे दो घंटे के लिए बाहर दोपहर के समय

धूप में निकाल देने में कोई नुकसान नहीं। इसी प्रकार रात के समय गर्मियों में यदि सख्त गर्मी हो तो गाय को रात के समय मकान के बाहर रखा जा सकता है।

गाय को व्याने के बाद यथाशीघ्र उसके वजन के अनुसार १२ छटाँक गुड़, १ छटाँक अजवायन, १ तो० सौंठ, १ छटाँक मेंथी १॥ सेर पानी में खूब उबालकर आउटी बना कर खिलानी चाहिए। आउटी खिलाने के दो-तीन घन्टे बाद यदि प्यास हो तो उसको थोड़ा गुनगुना पानी पिलाया जा सकता है।

खाने को पहले तीन दिन सूखी घास, बारीक सूखी जुआर की पूली, सूखी जई का चारा या अन्य कोई सूखा शीघ्र पचनेवाला चारा देना चाहिए। उपरोक्त आउटी दोनों वक्त बच्चे को दूध पिलाने के बाद जो दूध निकले उसमें मिलाकर पिला देनी चाहिए। शीघ्र पचनेवाला चारा और दोनों समय नीचे लिखा दलिया खिलाइए:—

६ छटाँक से ८ छटाँक गुड़ और तीन पाव से एक सेर गेहूँ या बाजरा या चोकड़ में से कोई चीज, आधी छटाँक अजवायन और आधा तोला सौंठ में अन्दाज का पानी मिला कर खूब उबालो। जब ठीक पक जाय तब बच्चे को दूध पिलाने के बाद जो दूध बचे उसमें मिलाकर खिला देना चाहिए। यह दलिया कम से कम दो-तीन रोज अवश्य देना चाहिए और हो सके तो ७ दिन तक दें। पाँच दिन के बाद धीरे-धीरे दाना इत्यादि भी थोड़ा-थोड़ा दिया जा सकता है। पाँचवें दिन दोनों वक्त आध-सेर चोकड़, छठे दिन दोनों समय तीन पाव

चोकड़, सातवें दिन दोनों समय एक सेर चोकड़, आठ दिन के बाद एक सेर चोकड़ और एक सेर और दाना देना चाहिए। फिर धीरे-धीरे बढ़ाकर जो भी खल-दाना गायों को दिया जाता है २१ दिन तक पूरी तादाद में देना आरम्भ कर देना चाहिए। इसी प्रकार १५ दिन के बाद चारा भी जो साधारण गाय को दिया जाता है वह देना आरम्भ कर देना चाहिए।

बच्चे को यदि सम्भव हो तो ३-४ रोज तक गाय के मुँह के पास ही रखना चाहिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि जगह इतनी तंग न हो कि गाय के उठने-बैठने में बच्चे को चोट वगैरा लगने का डर हो। बच्चे को पहले रोज़ पका करके तीन-चार दफ़े थोड़ा-थोड़ा करके दूध पिलाना चाहिए। बाद में जब भूख लगेगी वह खुद ही पी लेगा। दिन में एक बार सरसों का साफ़ तेल रुई का फाहा भिगोकर बच्चे के मुँह में तोला-दो तोला निचोड़ देना चाहिए। इस प्रकार तीन-चार रोज़ बच्चे को माँ के पास रखकर फिर अलग स्थान पर रखना चाहिए।

गाय को जबतक उसको साधारण चारा-दाना न आरम्भ किया जाय तबतक जच्चा-खाने य ब्याने क जगह में ही रखना चाहिए। इस समय जच्चाखाना मैला हो जाता है। उसे फ़ौरन साफ़ करके सुखा देना चहिए। इस समय इसको जितना मुलायम, सूखा और साफ़-सुथरा रक्खा जायगा उतना ही गाय को थनों या लेवे के सूजने की संभावना से तथा अन्य ब्याने के समय की बीमारियों से सुरक्षित रक्खा जा सकेगा।

(२) ब्याने के समय बच्चे का ठीक स्थिति में (Normal Presentation) न होना

गाय किस प्रकार ब्याती है इसका संक्षिप्त हाल हम पीछे लिख चुके हैं। यहाँ पर यह बतला देना चाहते हैं कि बच्चे के निकलने का ठीक तरीका क्या है ? सबसे पहले बच्चे के दोनों अगले पैर दिखलाई देते हैं, जिनके ऊपर बच्चे का मुँह खुरों पर टिका हुआ होता है। ऐसी हालत में गाय के ब्याने में कोई विशेष तकलीफ़ नहीं होती, परन्तु बाज दफे किसी कारण से बच्चा साधारण स्थिति में न होकर इधर-उधर हो जाता है। उसमें गाय को ब्याने में भी तकलीफ होती है और ज्यादा गड़बड़ होने से बच्चे और गाय दोनों ही के मर जाने का डर होता है। ऐसी असाधारण अवस्था का हाल नीचे देते हैं।

(१) बच्चे का सिर सामने अगले पैरों पर होने के बदले कभी-कभी पीछे को घूम जाया करता है।

(२) अगला एक या दोनों पैर पीछे को फिर जाया करते हैं।

(३) पहले अगले पैरों के पिछले दिखाई देते हैं।

(४) बच्चे के पैर नीचे और सिर ऊपर होने के बदले उसके पैर ऊपर और सिर नीचे होता है।

ऐसी हालत में बच्चे को खींचकर बाहर निकालने की कोशिश हरगिज नहीं करनी चाहिए बल्कि जिस आदमी को इस प्रकार के काम का तजुर्बा हो उससे बच्चे को वापिस

बच्चेदानी में ढकेलवाकर और ठीक स्थिति में करवाकर बच्चे को बाहर निकलवाना चाहिए और गाय को खुद ब्याने देना चाहिए। ऐसी हालत में बच्चे को निकालने या ब्याने के लिए नीचे लिखी तरकीब कीजिए:—

हाथ के नाखून यदि बढ़े हुए हों तो उनको काटकर साबुन से या नीम के पत्तों के उबले हुए पानी से हाथ धो लीजिए और कपूर या नीम का तेल मिला हुआ मीठा तेल अपने सारे हाथ पर कोहनी के ऊपर तक भली प्रकार चुपड़ लीजिए। फिर इशारे से बच्चे को जहाँ तक हो हथेली के सहारे या अँगुलियों के सहारे ठीक हालत में लाने की कोशिश करें। ऐसा करने में यह ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे के या गाय के किसी स्थान पर खुरच इत्यादि न लगने पावे।

पहली हालत में इशारे से बच्चे को जहाँ तक हो पीछे बच्चेदानी में ढकेल दीजिए। जितना ही बच्चे को पीछे ढकेलकर उसका सिर अगले पैरों पर लाने की कोशिश की जायगी उतनी ही सहूलियत और कम तक़लीफ़ से यह काम हो जायगा। पीछे ढकेलने के बाद धीरे से उसका सिर अगले पैरों के खुरों पर टिका दीजिए और उसे आगे को कर दीजिए। जब वह योनि के मुँह पर आ जाय तब छोड़ दीजिए। गाय अपना ज़ोर मारकर बच्चे को अपने आप निकाल देगी। यदि ऐसा न हो तो धीरे से दोनों हाथों से अगले पैर और सिर को थामकर बच्चे को बाहर खींच लीजिए।

दूसरी हालत में भी बच्चे को धीरे से पीछे ढकेलकर उसके

पैर धीरे से उसके मुँह के नीचे ठीक स्थिति में करके ऊपर बताये अनुसार गाय को अपने आप व्याने दीजिए। यदि थोड़ी देर तक अपने आप न व्यावे तो धीरे से ऊपर बतलाये गये तरीक़े से बाहर खींच लीजिए।

तीसरी हालत ज्यादा कठिनाई से ठीक होती है। इस हालत में भी बच्चे को धीरे-धीरे पीछे ढकेलिए और उसके अगले पैर आगे को करके धीरे से एक फीता या डोरी से, जो पहले से ही नीम के पत्तों के पानी में आध घण्टा तक उबाली हुई तथा बिल्कुल साफ़ और चिकनी की हुई हो, बच्चे के खुरों के पास बाँध दीजिए। फिर एक दूसरा आदमी धीरे-धीरे इशारे से फीता या डोरी को खींचे और आप हाथ के इशारे से उसको बाहर की ओर कीजिए। बच्चे के बाहर आने के पहले फिर देख लेना चाहिए कि अगले पैरों पर सिर ठीक स्थिति में टिका हुआ है या नहीं। इस प्रकार ठीक स्थिति में करके बच्चे को धीरे से खींच लेना चाहिए।

चौथी हालत में भी बच्चे को इशारे से पीछे ढकेलकर उसको पलट देना चाहिए अर्थात् ठीक स्थिति (position) में करके निकालना चाहिए।

बच्चे को जहाँ तक हो इशारे से धीरे-धीरे ठीक स्थिति (position) में करके जल्दी-से-जल्दी निकालना चाहिए अन्यथा ज्यादा देर होने से बच्चे के मर जाने का डर होता है। बच्चा मर जाय तो वह फूल जाता है और बिना आपरेशन के बाहर निकालना मुश्किल हो जाता है। उसका जहर माँ को भी चढ़ने का डर रहता है। यदि बच्चा किसी तरह भी निकाला न जा सके

तो पशुओं के डाक्टर को बुलाकर आपरेशन करवा के निकलवा देना चाहिए।

बच्चे के निकाल देने के बाद फ़ौरन ही गाय को जल्दी-से-जल्दी ताक़त पहुँचानेवाली दवा देनी चाहिए। इसके लिए पाव-भर घी और आधी छ० काली मिर्च दीजिए।

इसके घंटे दो घंटे बाद नीचे लिखी आउटी दीजिए—

गुड़	एक से दो पाव
अजवायन	२ छटाँक
सौंठ	१ छटाँक

डेढ़ पाव पानी में खूब पकाकर पिला दीजिए। फिर पाँच-छः घंटे बाद पावभर घी, १ तो० काली मिर्च, १ तो० भंग, १ तो० सौंठ मिलाकर दीजिए। जिस प्रकार गर्भपात (Abortion) में जेर न डालने की हालत में दोनों समय डूश करते हैं उसी प्रकार चार-पाँच रोज़ तक डूश कीजिए और यदि गाय के अन्दरूनी हिस्से में किसी प्रकार की ख़राबी का अन्देशा हो तो आगे पृष्ठ १३१ पर जो नुसखा (सड़ाव) देने के लिए लिखा है वह दीजिए।

खान-पान—पहले दिन गाय को गुड़ मिलाकर तीन-चार बार एक सेर दूध दीजिए और खाने को मुलायम सूखा चारा दीजिए। बाद में गर्भपात (Abortion) जैसा खाने-पीने को दीजिए। अगर कुछ बुखार हो गया हो तो पीने के पानी में कलमी शोरा डालकर पिलाइए।

अन्य हिदायतें—गर्भपात जैसी। उसके अलावा गाय को तेज़ सर्दी-गर्मी से बचाना चाहिए। इस समय गाय की हालत

नाज़ुक होती है इसलिए उसको अधिक-से-अधिक आराम देने की कोशिश करनी चाहिए।

नोटः—एक मित्र का अनुभव है कि यदि गाय को कष्ट हो रहा हो और बच्चा ठीक स्थिति में होने पर भी बाहर न आता हो तो २॥ तोला निर्वसी पानी में घोट ज़रा गर्म करके पिला देने से बच्चा फ़ौरन बाहर आ जाता है।

(३) मरा बच्चा पैदा होना

यदि बच्चा पेट में मर जाय तो फ़ौरन ही ढोरों के डाक्टर को बुलाकर आपरेशन द्वारा बच्चे को निकलवा देना चाहिए। यदि यह सम्भव न हो तो तेज़ चाकू को १५-२० मिनट तक नीम के पत्तों में पानी के साथ उबालकर और उस पानी से हाथ धोकर नीम का या कपूर मिला मीठा तेल हाथ पर चुपड़कर, उस चाकू से मरे हुए बच्चे के छोटे-छोटे टुकड़े करके निकाल देना चाहिए और बाद में पिछली बीमारी में जो दवाइयाँ व डूश इत्यादि बतायी हैं वे देनी-दिलानी चाहिएँ।

(४) बच्चा गिरा देना

(Abortion)

गर्म तासीर की चीज़ें ज्यादा खाने से, तेज़ दौड़ने, कूदने-फाँदने, आपस में लड़ने, चोट लगने, किसी वजह से डर जाने, बहुत ज्यादा कमज़ोरी इत्यादि से पूरे समय के पहले ही गाय का

बच्चा गिर जाता है। बाज़ दफ़ा खून में विकार हो जाने के कारण भी बच्चा गिर जाता है। इसके अलावा यदि बिना किसी वजह के गाय बच्चा गिरा दे और इस प्रकार और भी आस-पास की गायों ने बच्चा गिरा दिया हो तो छूत की बीमारी समझनी चाहिए। उसका ज़िक्र छूत की बीमारियों में पृष्ठ ४६ पर देखिए। यहाँ हम बिना छूत की बीमारी का ज़िक्र करते हैं।

पहचान—यदि गाभिन जानवर लगभग ८ महीने के पहले बच्चा गिराने की हरकत ज़ाहिर करे तथा उसकी योनि से मैला गिरे तो उसको तन्दुरुस्त जानवरों से फ़ौरन अलग कर देना चाहिए और यह समझना चाहिए कि बच्चा गिरने का अन्देशा है।

इलाज—चावल के आध सेर गर्म माँड में ४ माशे अफ़ीम या १ माशे धतूरे का बीज भंग की तरह सिल पर पीसकर अच्छी तरह से घोलकर पिला दीजिए। पाँच-पाँच या छः-छः घण्टे के बाद दो-तीन खूराक दीजिए। अगर इससे बच्चा रुकना होगा तो रुक जायगा। यदि बच्चा गिर ही जाय तो बच्चे को तथा गाय के स्थान के मैले-कुचैले को खेत इत्यादि दूर जगह में तीन-चार फ़िट गहरा गड्ढा खोदकर गाड़ देना चाहिए। जिस जगह पर गाय बँधी हो उसको एकदम साफ़ करके उसपर या तो भली प्रकार आग जला देनी चाहिए या बुझा हुआ चूना बिखेर देना चाहिए। गाय को सफ़ाई के बाद गाय के ब्याने पर जो आउटी इत्यादि दी जाती है (पृष्ठ १२३ पर देखिए) वह दीजिए ताकि वह जेर डाल दें। अक्सर बच्चा गिराने (Abortion) के बाद गाय आसानी से जेर नहीं डालती इसलिए एक रोज़ तक उसको

दो-तीन बार जेर डालने की दवा, (जो आगे दी जायगी), दीजिए। यदि दो-तीन बार उपरोक्त दवा देने पर भी जानवर जेर डालता न दिखाई दे तो दूसरे दिन साबुन से हाथ धोकर और हाथों में नीम या कपूर या तारपीन का तेल मिला हुआ मीठा तेल चुपड़कर धीरे-धीरे हाथ से एक-दो बार करके निकाल दीजिए और जेर निकालने के बाद गाय को चार-पाँच रोज़ तक बराबर डूश दीजिए (पृष्ठ १६ पर देखिए) तथा नीचे लिखी दवा पिलावें—

गूलर	८ छटाँक
राई	२ छटाँक
सरसों की खल	४ छटाँक
नमक	२ छटाँक
छाछ या मट्ठा	२ छटाँक

गूलर और सरसों की खल को कूट लें। राई और नमक को पीस लें। सबको छाछ में मिलाकर गर्म जगह में रख दें। एक दिन बराबर धूप में ढका रहने दें। इससे वह सड़ जावेगी। जब सड़ जाय तो आध सेर रोज नाल से पिला दें।

खान-पान—गाय को व्याने के बाद जो खाने-पीने को देते हैं क़रीब-क़रीब वही देना चाहिए। और चार-पाँच रोज के बाद साधारण खूराक आरम्भ कर सकते हैं।

अन्य हिदायतें—सफाई का ख़याल रखना चाहिए। यह मालूम होते ही कि गाय को गर्भपात होनेवाला है उसको दूसरे जानवर से अलग कर देना चाहिए।

कभी-कभी निर्वसी से मरा बच्चा भी निकल आता है। २॥ तो० निर्वसी पानी में घोटकर जरा गरम करके देनी चाहिए।

(५) जेर न गिराना

तन्दुरुस्त गाय प्रायः हमेशा व्याने के दस-पन्द्रह घन्टे के अन्दर-अन्दर जेर डाल देती है। कमजोर, बीमार या जिनको गर्भपात की बीमारी हुई हो वह जेर ठीक समय पर नहीं डाला करती। गाय को व्याने के बाद जो आउटी दी जाती है उसके तीन-चार घन्टे बाद तक यदि जेर न डाले तो दुबारा-तिबारा वही आउटी देनी चाहिए। इस पर भी यदि न डाले तो नीचे लिखी दवायें देनी चाहिएँ—

इलाज—नीचे लिखी दवा में से कोई एक दवा आठ-आठ दस-दस घन्टे बाद दीजिए।

(१) बाँस के पत्ते पावभर से आधसेर तक
खारीनमक एकपाव तक
दोनों चीजों को खूब उबालकर पिलाइए।

(२) गुड़ आध सेर
बेलगिरी आध सेर
सौंठ १ तो०
अजवायन २ तो०

आउटी बनाकर पिलावें। दिन में दो-तीन खूराक से अधिक न दें।

(३) अन्त में उपरोक्त आउटी में बनाने के समय दो

माशे गाजर के बीज सौंठ-अजवायन के साथ मिलाकर पिलावें।

यदि इससे भी जेर न गिरावे और गाय को व्याये दो-तीन रोज हो जायें तो जेर को हाथ से निकालने की कोशिश करनी चाहिए।

इनके अलावा एक होम्योपैथिक दवा जो मेरी अजमाई हुई है इस बीमारी में बहुत कामयाब रही है। वह गाँव में नहीं मिलती, किसी बड़े कस्बे या शहर में होम्योपैथिक डाक्टर या अस्पताल में मिलती है। जिसके यहाँ चार-पाँच जानवर हों उसे एक औंस लाकर किसी ठण्डे और साफ़ स्थान में किसी डिबिया या साफ़ बर्तन में बन्द करके रखनी चाहिए। इस दवा का नाम 'पलसेटिला मदरटिंचर' है।

गाय के व्याने या बच्चा डाल देने के बाद घी और कालीमिर्च देने के पहले या बाद में ५ से ७ बूँद हर तीसरे घंटे के बाद कुएँ के ताजा आध छटाँक पानी में डालकर गाय का मुँह खोलकर उसमें डाल दीजिए या १ तोला सत्तू साफ़ कागज़ पर रखकर उसमें ५ से ७ बूँद दवा डालकर गाय की जबान पर डाल दीजिए। इस प्रकार ५ खूराक रोज़ देनी चाहिए। इससे दो-तीन रोज़ में गाय यदि एक साथ नहीं तो थोड़ा-थोड़ा करके जेर डाल देगी। अन्यथा जेर को उपरोक्त विधि से अर्थात् हाथ से निकालना और डूश देना चाहिए।

जेर को हाथ से निकालने की तरकीब—पहले नाखून काट लें। फिर होशियारी से कोहनी तक हाथ धोकर १ छ० मीठे तेल में २ माशे नीम का तेल या एक माशा कपूर मिला लें

और उससे हाथ भली भाँति चुपड़कर धीरे-धीरे गाय की योनि में हाथ डालकर बहुत होशियारी से हाथ से धीरे-धीरे जेर को जिस जगह वह चिपकी हुई हो धीरे-धीरे हटाकर निकाल लीजिए। इसके बाद गाय को दोनों वक्त करीब १॥ सेर पानी में नीम के पत्ते उबालकर या फिनाइल या कुएँ में डालने की लाल दवा मिलाकर ५ या ७ दिन तक डूश करते रहें। (डूश की विधि पृष्ठ १६ पर देखिए) इसके बाद दो-तीन रोज तक नीचे लिखा सड़ाव या पलसेटिला (होम्यिोपैथिक दवा) देते रहना चाहिए।

गूलर कच्चा	आध सेर
राई	आध पाव
सरसों की खल	एक पाव
नमक	आध पाव
छाछ	तीन सेर

गूलर और सरसों की खल को कूट लें। राई और नमक को पीस लें। सबको छाछ में मिलाकर किसी गर्म जगह में रख दें। एक-दो दिन बराबर धूप में ढकी रहने दें। एक दिन में चीजें सड़ जायेंगी। तब आध सेर रोज़ नाल से पिला दें।

खान-पान—गाय के ब्याने पर जो कुछ खान-पान को देते हैं वही देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर को आराम से मकान के अन्दर पुआल वगैरह बिछाकर रखना चाहिए। सफ़ाई का ख़ास ध्यान रखना चाहिए।

(६) प्रसूत या जच्चा का बुखार

(Septic fever)

कभी-कभी गाय के ब्याने के बाद कोई खराबी हो जाने यथा गाय की बच्चादानी में हाथ डालने में कोई खरोंच वगैरह लगजाने या किसी प्रकार गन्दगी के प्रवेश हो जाने से बुखार हो जाया करता है।

पहचान—गाय का एकदम सुस्त हो जाना, खाना-पीना बन्द कर देना। एक तरफ़ गर्दन डालकर पड़ा रहना, एकदम कमजोर हो जाना, बुखार रहना। इसमें कभी-कभी कान ठण्डे हो जाते हैं और शरीर भी ठण्डा दिखाई पड़ता है। तब गाय की हालत ज्यादा खराब समझनी चाहिए।

इलाज—गाय को तेज गर्म-सर्द हवा से बचायें और उसपर भूल डाल दें ताकि मक्खी-मच्छर तंग न करें। उसके नीचे व आसपास का स्थान बिल्कुल साफ़ और सूखा रक्खें। बैठने के स्थान पर खूब अच्छी बिछाली देकर उसको बिठायें। दोनों वक्त डूश करने के अलावा ब्याने के बाद जो आवटी दी जाती है एक वक्त उसे दें। दूसरे वक्त—

सौंठ	१ हिस्सा
अलसी	१ हिस्सा
काली मिर्च	१ हिस्सा

नौसादर आधा हिस्सा, सबको कूट-पीस लें; ४ तोला दवा एक पाव गुड़ में रखकर खिलाना चाहिए। पीने को गुनगुना पानी १ तोला कलमी शोरा मिलाकर दें।

खान-पान—अगर खाये तो सूखा मुलायम शीघ्र पचनेवाला घास, दूध और चौकड़ की या अलसी की चाय दीजिए। पीने को गुनगुना गर्म पानी। बुखार उतरने के बाद थोड़ा-थोड़ा चोकड़ या दलिया दूध मिलाकर दिया जा सकता है। इसके बाद धीरे-धीरे साधारण खूराक देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—इस समय गाय की हालत बड़ी नाजुक होती है। उसे जितना अधिक-से-अधिक आराम पहुँचाया जायेगा और वहाँ अधिक-से-अधिक जितनी सफ़ाई रक्खी जायगी उतनी ही गाय के बचने की सम्भावना ज्यादा है। गाय को एक करवट आठ-दस घंटे से ज्यादा नहीं पड़े रहने देना चाहिए। इसलिए उसको चौबीस घण्टे में दो-तीन बार एक करवट से दूसरी करवट बदलते रहना चाहिए। उसका शरीर कहीं से गीला हो गया हो तो फौरन सुखा देना चाहिए और कपड़े या टाट से पोंछकर बिलकुल साफ़ रखना चाहिए।

(७) बाक (लेवा) और थन का सूजना

यह बीमारी प्रायः अधिक दूध देनेवाली गायों में उस वक्त जबकि दूध का ज्यादा से ज्यादा जोर होता है और लेवा उसके जोर से तन जाता है हुआ करती है। ऐसे समय गाय के सीली या गीली जगह में बैठने से, सर्द-गर्म हो जाने से, लेवे में दूसरी गाय के सींग या लात मारदेने से या थनों से दूध पीते हुए बच्चे के जोर से सिर मार देने से उसका लेवा फूल जाता है। अक्सर गाय को मेले या प्रदर्शिनी इत्यादि में दिखाने के लिए

या अन्य किसी कारण से यथोचित समय से देर में दुहा जाता है तब भी यह बीमारी हो जाती है। कभी-कभी जिस प्रकार गाय का लेवा सूजता है उसी प्रकार चोट इत्यादि और सील, ठण्ड या गर्मी से थन भी सूज जाया करता है। यदि उसका पूरा-पूरा इलाज और देखभाल नहीं होती तो सूजन बढ़ जाती है। उसमें एक प्रकार की बीमारी के कीटाणु पैदा हो जाते हैं जो ऊपर लेवे तक फैल जाते हैं और उसकी वजह से लेवा भी सूज जाता है। वह बीमारी चाहे थनों से आरम्भ हुई हो या लेवे से लेकिन यथोचित देखभाल और इलाज न होने के कारण फैलकर थनों से लेवे में और लेवे से थनों में हो जाती है।

पहचान—थन या बाक के सूजे हुए हिस्से से दूध कम निकलता है। दूध में फुटकी-सी आने लगती है। धीरे-धीरे दर्द बढ़ जाता है और गाय उस हिस्से पर हाथ लगते ही लात मारती है। उस हिस्से का दूध गाढ़ा मवाद-सा हो जाता है और यदि शीघ्र आराम न हो तो बिल्कुल पानी की तरह हो जाता है। वह थन और लेवे का हिस्सा जिससे ऐसा दूध निकलता है बेकार हो जाता है। कभी-कभी बीमारी का असर एक दम बड़ी तेजी से होता है तब जानवर सुस्त हो जाता है। हल्का बुखार हो जाता है। जुगाली करना बन्द कर देती है और कभी-कभी काँपने भी लगती है। उस के थन या लेवे के एक या अधिक हिस्सों पर इसका असर हो जाता है। सूजन बड़ी तेजी से बढ़ जाती है। और वह हिस्सा लाल-सा हो जाता है। अगर जल्दी आराम न हो तो फिर सख्त हो जाता है। दूध बड़ी मुश्किल से निकलता है, शुरू

में गाढ़ा और चिपचिपा बदबूदार मवाद और खून मिला हुआ होता है बाद में पानी जैसा हो जाता है। लेवे के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में बीमारी फैल जाती है और यदि जल्दी आराम न हो तो लेवे के एक-दो या इससे ज्यादा हिस्से हमेशा के लिए बेकार हो जाते हैं।

हिफाजत—इस बीमारी को न होने देना ही अच्छा है क्योंकि एक बार हो जाने पर एक तो जानवर अच्छा मुश्किल से होता है दूसरे अगर अच्छा हो भी जाता है तो इसका असर कुछ न कुछ रही जाता है और दूध सदा के लिए थोड़ा या बहुत कम हो जाता है। इससे बचने का एक मात्र उपाय गाय के बैठने के स्थान को बिल्कुल साफ़ रखना और उसके नीचे यदि पक्का स्थान हो तो मुलायम और सूखा बिछावन रखना और कच्चा स्थान हो तो सूखा रेत या मिट्टी का रखना ही है। गाय को दुहने के पहले और सम्भव हो तो बाद में भी नीचे लिखी दवा उसके थनों पर भली भाँति लगानी चाहिए।

बारह हिस्से घी या मक्खन, वैसलीन या तिल का तेल और एक हिस्सा बारीक भुना हुआ या तवे पर फुलाया हुआ सुहागा या बोरिक एसिड या आधा हिस्सा कपूर—दोनों को भली प्रकार मिलाकर लगावें। यदि कपूर तेल, मक्खन इत्यादि में जल्दी न घुले तो उसे थोड़ा शराब या स्पिरिट में घोलकर फिर तेल इत्यादि में घोलना चाहिए।

इलाज—सबसे पहले अगर गाय को कब्ज़ हो तो जुलाब देना चाहिए और पीने के पानी में १ तो० शोरा मिलाकर पिलाना

चाहिए। गाय को दुहने के समय सूजे हुए और अच्छे हिस्से का दूध अलग-अलग बर्तन में निकालना चाहिए। अगर बच्चा थनों से दूध पीता हो तो उसे सिर्फ अच्छे थनों का ही दूध पिलाना चाहिए। जिस हिस्से में बीमारी हो गई हो उस हिस्से का ऊपर लिखी चिकनाई लगाकर धीरे-धीरे तमाम दूध दुह लेना चाहिए। अगर उस हिस्से का सख्त होने की वजह से दूध निकलना कम भी हो गया हो तो भी और चाहे उस हिस्से से दूध की जगह मवाद निकले तो भी बराबर दुहलेना चाहिए क्योंकि अगर उसमें जरा-सा भी दूध रह गया या उसको देर तक नहीं दुहा गया तो वह हिस्सा बेकार हो जायगा।

दुहने के बाद नीचे लिखी कोई-सी दवा सेक करने के बाद सवेरे-साँझ दोनों समय लगानी चाहिए:—

(१) मकोय के पत्तों को पानी में उबालकर उसके गर्म-गर्म पानी से १०-१५ मिनट तक सेक करो। बाद में मकोय के ताजे पत्तों का अर्क, गेरू और ककरौंधा, कुकरमुता या गुलेबाँस के पत्ते बारीक पीसकर गर्म कर लो और गुनगुना-गुनगुना सूजनवाली जगह पर और उसके आस-पास लेप कर दो।

मकोय के ताजे पत्तों का अर्क कालीजीरी और गेरू तीनों को मिलाकर गर्म करके गरम-गरम सूजन पर लेप करने से भी लाभ होता है।

(२) लोनी मिट्टी को पानी में औटावें। इस पानी से थनों का सेक करें। गाढ़े हिस्से का थनों पर लेप कर दें।

(३) नीम के पत्तों के उबले हुए पानी से सेक करने के बाद २ तोले, हल्दी और १ तोला साबुन दोनों को खूब बारीक पीसकर खूब औटाकर लेप करें।

(४) नीम के पत्तों के उबले हुए पानी से सेक करने के बाद गेरू और अजवायन पीसकर पानी में मिलाकर पकावें और फिर लेप करें।

(५) अमर बेल, मकोय और संभालू के पत्तों को पानी में औटाकर उस पानी से सेक करें। फिर इन तीनों के नये ताज़े पत्तों को पीसकर गर्म करके लेप करें।

(६) अमर बेल, झाड़ी के पत्ते और वरना के पत्ते पानी में उबालकर उस पानी से सेक करें और फिर तीनों के नये ताज़े पत्तों को पीसकर गर्म करके लेप कर दें।

(७) नीम के पत्तों के उबले हुए पानी से धोने के बाद दिमौट (दीमक के घर की मिट्टी) को पानी में उबालकर लेप कर दें।

(८) नीम के पत्तों के उबाले हुए पानी से सेकने के बाद थनों को गीले कपड़े को निचोड़कर सुखाकर थोड़ी हींग, ५-६ गुने पानी में घोलकर गर्म करके उसका पानी सूजी हुई जगह या उसके आस-पास लगावें।

खाने को नीचे लिखी दवा दो-तीन दिन तक लगातार दें:—

उड़द या छोटे चने के बराबर रसकपूर की डली हरे केले को चीरकर उसमें रखकर दिन में एक बार खिला दें। रसकपूर एक तेज जहरीली दवा है इसको बड़ी

होशियारी से काम में लाना चाहिए और २-३ दिन से ज्यादा लगातार ,नहीं देना चाहिए। इसके बाद दो बार रोज़ आधा-पाव शतावरी पाक खिलाइए। शतावरी पाक बनाने की विधि यह है—

शतावरी को कूटकर चलनी में छान लें और चौगुने मीठे तेल को कढ़ाई में आँच पर रख दें। जब तेल लाल हो जाय तब शतावरी उसमें डाल दें और फौरन कढ़ाई आँच पर से उतार कर किसी तशले में जिसमें पानी भरा हो कढ़ाई रखकर बराबर उसको मिलाते रहें फिर ठण्डा करके उपरोक्त विधि से खिलावें। एक बार एक सेर दवा तैयार कर लें ताकि कई रोज़ काम में आ सके।

यदि ऊपर की दवा न दे सकें तो नीचे लिखी दवा की आउटी बनाकर दें—

सोंठ	१ तो०
अजवायन	२ तो०
मेथी	१० तो०
गुड़	१० तो०

आध सेर पानी में खूब पकावें जब आधा या पौना रह जाये तो गुनगुना-गुनगुना पिला दें।

अगर ज़ख्म हो जाये तो कपूर का तेल, बोरिक एसिड या फूले हुए सुहागे का मलहम ज़ख्म पर लगावें। ज़ख्म को पहले नीम के पत्तों के उबले पानी से धो लें।

थन बन्द हो जाये तो गाय जब दुबारा ब्यानेवाली हो

तब व्याने के थोड़ी देर पहले गाय को २॥ तोला हींग चने की रोटी में रखकर खिला दें।

अगर दो-चार दिन पहले ही थन वन्द हुआ हो तो नीचे की दवा ३-४ दिन तक दें—

काली जीरी आध पाव
काली मिर्च आध पाव

आध सेर घी में मिलाकर या शतावरी पाक आध पाव से एक पाव तक दिन में दो बार दें।

खान-पान—इस बीमारी में जानवर को ऐसी कोई खुराक नहीं देनी चाहिए जिससे दूध बढ़े क्योंकि वह हानिकारक होता है। गाय को शीघ्र पचनेवाली खुराक देनी चाहिए और ठंडा पानी न पिलाकर गुनगुना या कुएँ का ताजा पानी पिलाना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर को तेज हवा और सर्दी से वचावें उसके रहने की जगह एक दम सूखी रखें। सेंक वगैरह के पानी से या वैसे ही जो कीचड़ वगैरह हो जाय उसे विल्कुल साफ करके सूखी मिट्टी फैला दें। मवाद या सूजे हुए हिस्से का दूध इत्यादि जो भी निकले वह जहाँ तक हो फर्श पर नहीं गिरना चाहिए वल्कि उसे अलग वर्तन में निकालना चाहिए। अगर फर्श पर गिर ही जाय तो फौरन साफ कर देना चाहिए।

(८) योनि में कीड़े पड़ जाना

गन्दी जगह में रहने या वैठने से मक्खियाँ कीड़ों के अण्डे

छोड़ देती हैं जिससे कीड़े पड़ जाते हैं। कीड़े पड़ने से योनि सूज जाती है और जखम हो जाता है। कभी-कभी पेशाब के साथ शुरू या अखीर में खून भी आता है। जब कीड़े इधर-उधर चलते हैं तो जानवर बेचैन हो जाता है।

इलाज—जानवर को गिराकर या अन्य तरीके से क़ाबू में करके योनि को उबले हुए नीम के पत्तों के पानी से पिचकारी द्वारा धोइए। यदि कीड़े दिखलाई दें तो नीम के पत्तों के साथ उबाली हुई चिमटी से कीड़े निकाल दीजिए। इसके बाद एक हिस्सा तारपीन का तेल और एक हिस्सा मीठा तेल मिलाकर रुई के फ़ोयों के साथ कीड़ेवाले स्थान पर चिमटी से अन्दर कर दीजिए। इस प्रकार सवेरे-शाम दोनों समय दवा लगानी चाहिए। अगर तारपीन का तेल न हो तो फिनाइल और तेल मिलाकर भी लगाया जा सकता है या मरवे के पत्तों का रस टपका दीजिए इससे कीड़े मर जावेंगे।

कपड़े धोने के रीठे को पानी में उबालकर जखम को धो डालने से भी सब कीड़े मर जाते हैं या मूलीम पंसारी से लाकर बारीक पीसकर कपड़छन करलो। एक रुई के फाये के साथ लपेटकर तारपीन के तेल की तरह अन्दर कर दो। कीड़े मर जायँगे या अपने आप बाहर आ जायँगे।

खान-पान—साधारण दीजिए।

अन्य हिदायतें—फोतों के सूज जाने की बीमारी के अनुसार।

(६) बच्चेदानी का बाहर लौट आना

बुढापे में कमजोरी की वजह से या बच्चा होने के समय लापरवाही होने से ऐसा हो जाता है।

पहचान—बच्चा होने के समय या बाद में जेल गिराने के लिए जोर लगाने के समय या और थोड़े दिन बाद बच्चेदानी का बाहर निकल आना।

इलाज—ज्योंही बच्चादानी बाहर निकले फौरन ही स्प्रिट, शराब, फिटकरी के पानी या नीम के पत्तों के उबाले हुए पानी से बच्चादानी को धो देना चाहिए और फिर अपने हाथ धोकर उसको आहिस्ता से अन्दर करके हथेलियों से उस जगह को थोड़ी देर दबाये रखना चाहिए। फिर पट्टी से जगह को बाँध देना चाहिए ताकि बच्चादानी बाहर न निकले। जानवर को थोड़ा-सा धीरे-धीरे टहलाना चाहिए ताकि बच्चादानी अपनी जगह पर भली प्रकार बैठ जाय। इस प्रकार चौबीस घन्टे तक पट्टी या छींका बँधा रहना चाहिए। आस-पास की जगह नीम के पानी व फिटकरी के पानी से बराबर साफ़ करते रहना चाहिए।

इसके बाद नीचे लिखी दवा देनी चाहिये:—

सौंठ	६ मा०
कालीमिर्च	१ तो०
घी	पावभर

घी को थोड़ा गर्म करके दोनों चीजें पीसकर उसमें मिलाकर दो-चार दिन तक बराबर रोज़ दीजिए।

खान-पान—खाने को शीघ्र पचनेवाली खूराक देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—बच्चेदानी अन्दर करने के बाद जानवर को आठ-दस घन्टे तक बैठने न देना चाहिए और दस-बारह रोज तक ज्यादा दूर चलाना या तेज़ दौड़ाना नहीं चाहिए। बैठने का स्थान सूखा होना चाहिए तथा बैठने की जगह पर बिछावन कर देना चाहिए।

(१०) यथोचित समय पर गाय का गर्भ धारण न करना

कई बार गाय बियाने के ४-५ महीने बाद तक या इससे भी ज्यादा समय तक गाभिन नहीं होती। इसके तीन कारण हो सकते हैं:—

(१) **नस्ल का स्वाभाविक धर्म**—किसी-किसी नस्ल की गायें प्रायः व्याने के काफ़ी अर्से के बाद ही गाभिन हुआ करती हैं। पीढ़ी-दर-पीढ़ी उस नस्ल में यही चला आ रहा है इसलिए ऐसी जातियों की गायों का स्वभाव ही ऐसा हो जाता है।

(२) **व्यक्तिगत स्वभाव**—किन्हीं-किन्हीं गायों का यह स्वभाव होता है कि वे व्याने के काफ़ी अर्से बाद साँड से मिलती हैं और गाभिन होती हैं।

(३) **खाने-पीने और रहने-सहने का तरीका**—जब किसी गाय को गर्म तासीर की खुराक ज्यादह मिलती है या

जब उसका बच्चा मर जाता है या जब उसके बच्चे को सीधा थनों से दूध न पिलाकर ऊपर से दूध पिलाया जाता है और जब वह चरने या टहलने जाती है और बराबर उसके साथ या रेवड़ में साँड हो तो ऐसा देखा गया है कि वह जल्दी गाभिन हो जाती है। इसके विपरीत जिनको पूरी खुराक नहीं मिलती, जिनके पास साँड नहीं रहता या जिनका साँड से मिलना दुर्लभ होता है वे बहुत दिनों में गाभिन होती हैं।

यदि होशियारी से और बराबर इस कमी को दूर करने की कोशिश की जाये तो तीनों ही हालत में कामयाबी हो सकती है, परन्तु तीसरी हालत में खुराक इत्यादि ठीक देकर इस कमी को औरों से जल्दी दूर किया जा सकता है। बाज़ दफ़ा वर्षों तक और जड़ से ही गाय गाभिन नहीं होती। उसका कारण बच्चादानी या बच्चा पैदा करने के अन्य अंगों में सूजन होना उनका मूँह टेढा या बन्द हो जाना या उनमें अन्य खराबियाँ हो जाना होता है।

इलाज—बच्चेदानी या बच्चा पैदा करने के अन्य अंगों का मूँह बन्द हो जाना या थोड़ा मुड़ जाना, गाय के ज्यादा मोटा हो जाने और चर्बी बढ़ जाने की वजह से भी हो जाता है। अगर ऐसी बात हो तो उसकी खुराक कम कर देनी चाहिए, उससे काम लेना चाहिए और उसको खूब चलाना-फिराना चाहिए ताकि जो चर्बी छा गई है और मोटापन आ गया है वह कम हो जाये। यदि वह बीमारी मुटापा या चर्बी छाने की वजह से नहीं है तो ढोरों के होशियार डाक्टर को दिखाकर

औपरेशन द्वारा ठीक (इलाज) कराना चाहिए।

इसके अलावा दूसरी हालतों में देर में गाभिन होनेवाली गायों को नीचे लिखी दवायें लाभप्रद होती हैं। अगर गाय व्याने के बाद १०० रोज तक गाभिन न हो तो १०१ वें दिन नीचे लिखी दवाओं में से कोई एक दीजिए—

(१) २ सेर गेहूँ या जई को पानी में १२ घंटे भिगो दें। इसके बाद गीले कपड़े या बोरी में लपेटकर रख दें। जबतक गेहूँ जम न जायें और दो अंगुल लम्बे अंकुर न निकल आवें तबतक कपड़ा गीला रक्खें। ऐसे अंकुर निकले गेहूँ १५ दिन तक बराबर जानवर को खिलाए।

(२) अढाई पाव मेथी बारीक पीसकर थोड़ा पानी मिलाकर लुगदी बना लें। इसे तीन-चार दिन सवेरे खिलावें।

(३) ४ से ८ छुहारे प्रति दिन दो-तीन दिन तक दें। पहले दिन ४ छुहारे दें। इससे भी गर्भ न हो तो दूसरे दिन ५, तीसरे दिन ७ और पाँचवें दिन ८ छुआरे रोटी या गुड़ में मिलाकर खिला दें।

(४) मसूर १। सेर
वैंगन १। सेर

दोनों को पकाकर तीन दिन तक रोज खिलावें।

(५) भिड़ों के छत्ते को जिसमें अण्डे न हों एक छटाक पीस लो और १ छटाँक जामुन की छाल पीस लो। दोनों को मिलाकर सवेरे ७ दिन तक दो।

(६) कबूतर की बींट १ तोला सवेरे दो-तीन दिन तक

हो उसके १६ वें, २० वें और २१ वें दिन भी दीजिए ताकि गाय के दुबारा गर्म होने का डर न रहे। गाभिन होने के एक रोज बाद ठण्डे पानी से डूश भी लाभप्रद होता है। इसे देने की विधि पृष्ठ १८-१६ पर देखिए।

खान-पान—गाय को जहाँ तक हो ठण्डी तासीरवाली और पौष्टिक खुराक दीजिए। गर्म चीज़ न खिलाइए। जिस दिन गाय गाभिन हो उस रोज़ से दस पन्द्रह दिनों तक उसकी खुराक़ कुछ कम कर दें।

: ७ :

शरीर की बाहरी साधारण बीमारियाँ

अब हम किसी दुर्घटना या चोट लगजाने से तथा किसी कीड़े, मक्खी या जानवर के काटने से शरीर के बाहरी भाग में होनेवाली बीमारियों के बारे में लिखते हैं। इन बीमारियों में जानवर को और खास कर उसके उस अंग को जिसमें तकलीफ़ है पूरा आराम देना चाहिए और उसकी पूरी सफाई रखनी चाहिए। इस प्रकार की बीमारियों में जो भी दवा व इलाज होता है वह तो प्रायः केवल छूत से बचाने, दर्द को कम करने, तथा गंदा माद्दा निकालकर ज़ख्म इत्यादि को साफ़ रखने के लिए ही होता है। प्रकृति को अगर अपना काम करने का पूरा मौका दिया जाये तो जानवर को जल्दी ही फायदा हो जाता है।

(१) सूजन (वरम)

चोट, सर्दी-गर्मी या कोई ख़राब माद्दा इकट्ठा हो जाने की वजह से कभी-कभी बदन के किसी हिस्से में सूजन हो जाती है।

पहचान—वह जगह कुछ उभरी व फूली हुई मालूम पड़ती

है । वहाँ दर्द होता है। वह दबाने से दबती नहीं, अक्सर सुर्ख हो जाती है और छूने से गर्म मालूम पड़ती है। उस हिस्से से काम नहीं होता। जानवर बेचैन मालूम पड़ता है। कभी-कभी हल्की हरारत-सी हो जाती है।

इलाज—चोट वगैरह की वजह से यदि सूजन हो तो नीम के पत्तों के उबाले हुए पानी से उस जगह को भली-भाँति धोकर सेकें और बाद में नीचे लिखी कोई दवा लगावें:—

(१) तवे पर हल्दी और घी डालकर अच्छी तरह से भून कर पकालें और फिर रुई के फोये पर रखकर बाँध दें।

(२) कपूर भुना हुआ या तवे पर फुलाया हुआ सुहागा बराबर-बराबर लेकर बराबर के तिल के तेल अथवा घी, वेसलीन, मक्खन इत्यादि किसी में भली-भाँति मिलाकर चुपड़ दें।

यदि खराब मादे के इकट्ठा हो जाने की वजह से या खून की खराबी की वजह से फोड़ा-फुन्सी होने के पहले की सूजन हो तो नीम के पत्ते, मकोय, आकसंड में से एक या सब को पानी में डालकर खूब पकाकर उसके गर्म पानी से बार-बार कपड़ा या टाट भिगोकर दस-पन्द्रह मिनट सेक करना चाहिए और बाद में नीचे लिखे लेपों में से कोई एक करना चाहिए।

(१) २ तो० हल्दी, २ तो० साबुन में मिलाकर गर्म-गर्म लेप कर दें।

(२) १ तो० गेरू २ तो० मकोय के रस में मिलाकर गर्म-गर्म लेप करें।

(३) हल्दी और चूना दोनों बराबर-बराबर गर्म पानी

या मकोय, आकसंड या आकाशबेल किसी के रस में मिलाकर गर्म-लर्म लेप करें।

अगर लेप या सेक करने से उसका पकना शुरू हो जाये, और उसमें मवाद पड़ने लगे तो समझ लेना चाहिए कि वह फोड़ा बन जायेगा और फिर उसका इलाज फोड़े-फुन्सी की तरह करना चाहिए। फोड़े-फुन्सी का इलाज आगे देखिए।

यदि सूजन व दर्द दूसरे किसी कारण से है तो आरम्भ में ठंडे पानी की धार डालने व ठंडे पानी में भिगोकर कपड़े व टाट की गद्दी रखने से भी लाभ होता है लेकिन जब मर्ज़ बढ़ जाये और उससे लाभ न हो तो सेक करना चाहिए। सेक दो प्रकार का होता है एक तर और दूसरा खुश्क। तर सेक गर्म पानी में दवा डालकर उस पानी में बार-बार कपड़ा भिगोकर किया जाता है और सेक करने के बाद उसपर दवा का लेप करना मुनासिब है। गर्म ईंट, रेत या मिट्टी वगैरह कपड़े या टाट में रखकर खुश्क सेक किया जाता है। खुश्क सेक करने के पहले दर्द को दूर करने के लिए नीचे लिखा कोई भी तेल धीरे-धीरे जानवर के रंग के रुख के अनुसार मल देना चाहिए। मालिश और सेक करने के बाद अरण्ड के पत्ते तेल चुपड़कर बाँध दें और फिर सेक करें।

(१) १ तोला कपूर को १ छटाक तारपीन के तेल में घोलकर पाव भर तिल के तेल में मिलाकर मालिश करें।

(२) आक के पत्ते कूटकर रस निकालें और सेर भर रस में पाव भर तिल का तेल मिलाकर पकायें। जब रस जल जाये

तो उसे छान लें और इस तेल की मालिश करें।

(३) धतूरे के पत्ते का रस पाव भर तिल के आध सेर तेल में मिलाकर पकायें। पानी जल जाये और खालिस तेल रह जाये तो छान लें और मालिश करें। या २ तोले धतूरे के बीज बारीक कूट-पीसकरएक पाव तिल के तेल में मिलाकर १५ या २० रोज तक धूप में रक्खें और फिर छानकर शीशी में भरकर रख लें और इसकी मालिश करें।

(४) पावभर लहसुन को खूब छेत लें या सिल-बट्टे पर पीसलें। फिर उसे आध सेर तिल के तेल में मिलाकर खूब पकावें। जब भली भाँति पक जाये तो कपड़े में डालकर छान लें और उसकी मालिश करें।

यदि उपरोक्त इलाज से फ़ायदा न हो तो राई या लहसुन का पलास्तर लगाना चाहिए।

पलास्तर की विधि—राई को पानी में पीसकर गर्म करके मलहम की तरह कपड़े पर फैलाकर लगावें।

लहसुन १ हिस्सा और आटा २ हिस्से–दोनों को सिल-बट्टे पर खूब बारीक पीसें जब मलहम जैसा हो जाये तो गर्म करके कपड़े पर लगाकर चिपका दें।

जब पलास्तर से जगह लाल हो जाय या उपाड़ हो जाय तो पलास्तर को उतार देना चाहिए और तेल चुपड़ देना चाहिए। पलास्तर लगाने के बाद अगर खाल उतर जाये तो लौनी, घी या मक्खन में बारीक पिसा हुआ खाने का नमक मिलाकर लगाना चाहिए।

यदि सूजन की वजह से बुखार हो जाये तो पानी में १ तो० शोरा डालकर पिलाना चाहिए। यदि बुखार तेज़ हो जाय तो बुखार की दवा करनी चाहिए।

खान-पान—खाने को चना, मटर, मसूर वगैरा द्विदल जाति की देर में पचनेवाली तथा बादी या क़ब्ज़ करनेवाली चीज़ें नहीं खिलानी चाहिए। पीने को कुएँ का ताजा पानी देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर को जहाँ तक हो आराम देना चाहिए और ख़ास करके उस अंग को जिसमें बीमारी है, मक्खी मच्छर से बचाना चाहिए और सेक या मालिश या पलास्तर के बाद जानवर को हवा का सीधा झोंका और तेज़ सर्दी बिल्कुल नहीं लगने देनी चाहिए।

(२) रसौली और मस्सा

कई बार खाल के नीचे से गेंद-सी बनकर सूजती या बढ़ती चली जाती है जिसको दबाने से दर्द नहीं होता। वह चलने-फिरने में भी कोई रुकावट नहीं करती पर जानवर को बदसूरत कर देती है या बढ़कर किसी अंग को ढक या दबा लेती है तो हानि पहुँचाती है।

इलाज—रसौली में सेक इत्यादि जिस प्रकार सूजन की अवस्था में किया जाता है करना चाहिए। यदि इससे दब जाये तो ठीक है अन्यथा ३ हिस्से पानी और एक हिस्सा कच्चे पपीते के फल या पेड़ में कील या चाकू चुभाने से जो रस निकलता है उसे मिलाकर एक चौड़े मुँहवाली शीशी में रख लीजिए। फिर उसमें

रुई या कपड़ा भिगोकर ठीक उस स्थान पर लगाकर कपड़े से बाँध दीजिए। बराबर ऐसा करने से लाभ होगा। यदि इससे भी लाभ न हो तो ढोरों के डाक्टर को बुलाकर आपरेशन करवाकर निकलवा देना चाहिए। अगर शरीर के किसी अन्दरूनी भाग में रसौली हो तो उसका इलाज ढोरों के डाक्टर से आपरेशन कराकर कराना चाहिए:—

मस्से को सब पहचानते हैं।

इलाज—उसके लिए नीचे लिखी दवायें दे सकते हैं:—

(१) चूना, सज्जी बराबर-बराबर किसी काँच के बर्तन या सीपी वगैरा में रखकर ज़रा-सा पानी डाल किसी तिनके के सिरे पर रूई का फोहा या फुरेरी लगाकर उससे यह दवा ठीक मस्से पर दिन में दो-तीन बार लगाइए। दो-चार दिन में मस्सा सूख जायगा।

(२) पपीते में चाकू चुभाने से जो रस निकलता है उसे ३ हिस्से पानी में मिलाकर लगाने से भी आराम होता है।

खा -पान—खान-पान में कोई खास बात नहीं है। साधारण रोजाना की खुराक दे सकते हैं।

अन्य हिदायतें—दवाई होशियारी से रसौली या मस्से के ऊपर ही लगनी चाहिए। यदि और दूसरी जगह लग जायेगी तो जख्म कर देगी और तकलीफ होगी।

(३) फोड़ा-फुन्सी

जब सूजन अधिक दूर तक न फैलकर किसी खास जगह ऊपर को उठती चली आती है तो वही फोड़ा हो जाती है। यह

चोट लगने या खून की खराबी से भी होता है।

पहचान—उस जगह बहुत दर्द मालूम पड़ता है जिसके कारण बेचैनी हो जाती है। वह जगह लाल हो जाती है, गर्म मालूम पड़ती है और वहाँ हर समय कुल-कुलाहट-सी होती है। बेचैनी रहती है। कभी-कभी बुखार भी हो जाता है।

इलाज—यदि खून की खराबी से ऐसा है तो जुलाब देना चाहिए और सूजन के बताये हुए इलाज के मुताबिक़ पहले सेक इत्यादि करना चाहिए। यदि इससे फोड़ा-फुन्सी दब जाये तो अच्छा है और यदि उसमें मवाद पड़ गया हो तो उसको पकाने का प्रबन्ध करना चाहिए। इसके लिए नीम के पत्ते डालकर उबाले हुए पानी से सेक करके कोई चीज़ जैसे प्याज, कुकरौंधा, गुलबाँस सिल-बट्टे पर बारीक पीसकर गर्म करके गर्म-गर्म ही दिन में दो बार बाँधना चाहिए या नीचे लिखी पुलटिस दिन में दो-तीन बार गरम-गरम बाँधिए।

आटा	१ तो०
हल्दी	१ मा०
तेल मीठा	१ तो०
सुहागा	१ मा०
सिन्दूर	१ मा०
तूतिया (नीला थोथा)	२ रत्ती

जब उसमें मवाद पड़ जाय और वह जगह पिलपिली (मुलायम) हो जाय तो नीम के पत्तों के साथ २०-२५ मिनट तक उबाले हुए एक तेज़ चाकू से चीरा देकर मवाद निकाल देना

चाहिए और फिर जख्म का इलाज करना चाहिए।

खान-पान—बादी करनेवाली खुराक व द्विदल जाति की चीजें न देकर शीघ्र पचनेवाला मुलायम चारा देना चाहिए।

अन्य हिदायतें—गन्दगी बिल्कुल नहीं रहनी चाहिए। सफ़ाई का ख़ास ध्यान रखना चाहिए वरना रोग के बढ़ जाने का डर रहता है।

(४) घाव या ज़ख्म

किसी फोड़े-फुन्सी के पककर फूट जाने या चोट लगने या तेज़ चीज़ से कट जाने के कारण घाव हो जाता है। इसमें से मवाद, ख़राब ख़ून आदि निकलता रहता है। यदि अच्छी तरह इसका इलाज न किया जाय तो उसमें कीड़े पड़ जाते हैं और गलना-सड़ना भी शुरू हो जाता है।

इलाज—उस हिस्से को आराम देना चाहिए। जहाँ तक हो हिलाना-डुलाना नहीं चाहिए। सफ़ाई का ख़ास ध्यान रखना चाहिए। उस जगह के बाल इत्यादि काट देने चाहिएँ। यदि कहीं की खाल या माँस इत्यादि वेढंगे तरीके का हो गया हो तो १५-२० मिनट तक नीम के पत्तों के साथ उबाली हुई कैंची या तेज चाकू से काट देना चाहिए ताकि जो भी दवा लगाई जाय वह सहूलियत से लग सके और अपना असर कर सके। जो रुई, कपड़ा इत्यादि काम में लें वह भी साफ़ होना चाहिए। घाव को लाल दवा मिले गरम पानी से या नीम के पत्तों के उबाले हुए पानी से धोकर साफ़ करके फिर दवा लगानी चाहिए। घाव तब

साफ़ समझना चाहिए जब वह लाल हो जाये यदि मवाद या गली खाल या अन्य कोई चीज़ लगी हो तो साफ़ नहीं समझना चाहिए। जब वह बिलकुल साफ़ हो जाये और लाल दिखाई देने लगे तभी दवा लगानी चाहिए।

अगर घाव में कीड़े पड़ गये हैं तो उसे धोने के बाद बराबर-बराबर फिनाइल या तारपीन के तेल मिले हुए तिल के तेल में रुई का फोया भिगोकर एक तिनके से अच्छी तरह घाव के अन्दर कर दें ताकि अन्दर के कीड़े सब मर जाये और उसके आस-पास भी यही तेल चुपड़कर मक्खी, धूल-गर्द से बचाने के लिए और कोई चीज़ लगाने की आवश्यकता हो तो उसे लगा दीजिए और यदि पट्टी बाँधने की आवश्यकता हो तो उसे बाँध दीजिए। इस प्रकार दोनों समय सुबह-शाम दवा लगाइए। जब कीड़े मर जायें तब दूसरी दवा लगावें।

यदि घाव में कीड़े न पड़े हों या पड़कर मर गये हों तो उसे दोनों समय सवेरे-शाम उपरोक्त विधि के अनुसार धोकर साफ़ करके और फिर नीचे लिखी कोई दवा लगावें:—

(१) १ हिस्सा कपूर, १ हिस्सा सुहागा, १६ हिस्से मक्खन, घी व तिल का तेल मिलाकर लगावें।

(२) १ हिस्सा तूतिया, ४ हिस्से तेल तारपीन, १० हिस्सा कपूर, २० हिस्सा मोम, २० हिस्सा तिल का तेल लें कपूर को तारपीन के तेल में घोलकर तिल का तेल डालकर खूब घोट लें बाद में बारीक पिसा हुआ तूतिया व मोम मिलाकर हल्की आँच पर पका लें। यह मलहम लगावें।

(३) एक हिस्सा तूतिया, १० हिस्से राल, २० हिस्से पिसी हुई ताजा नीम की पत्तियाँ गाय के दूध में खूब पका लें और यह मलहम लगावें।

(४) मरुए या गेंदे के पत्ते सिल-बट्टे पर बारीक पीसकर लुगदी बनाकर घाव पर रखकर बाँध दें या इन्हें सिल-बट्टे पर पीसकर तिल के तेल व गाय के घी में पकाकर लगावें।

(५) १ हिस्सा भुना या फुलाया हुआ सुहागा ४ हिस्से मक्खन, घी या तिल के तेल में मिलाकर लगावें।

(६) १ हिस्सा तूतिया, आधा हिस्सा खड़िया मिट्टी और १ हिस्सा लकड़ी के कोयले खूब बारीक पीसकर कपड़-छन करके तेल चुपड़ने के बाद बुरका दें।

अगर जख्म में दाने-दाने से दिखाई दें या कोई हिस्सा फूलकर सतह से ऊपर आ गया हो या ज्यादा उभरा हो, टेढ़ा-मेढ़ा हो गया हो या मांस बढ़ गया हो तो तूतिये की डली से उसको रगड़कर एक-सा कर देना चाहिए। ऐसा करने में जानवर को थोड़ी तक़लीफ़ होगी परन्तु यह याद रखना चाहिए कि घाव का समान भरना ही ठीक है। वरना खोल रह जायगा जो दुख देगा। घाव जब क़रीब-क़रीब ऊपर तक भर जाये तो दूसरी दवाइयाँ न लगाकर सिर्फ़ १ हिस्सा कपूर जरा-सी देशी शराब में घोलकर १२ हिस्से तिल के तेल में मिलाकर इस कपूर मिले हुए तेल को ही दिन में दो-तीन बार चुपड़ देना चाहिए और घाव को खुला रखना चाहिए ताकि जल्दी सूख जाये।

खान-पान—बादी व क़ब्ज़ करनेवाली खूराक न देकर

शीघ्र पचनेवाली व मुलायम खुराक देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—सफ़ाई का बहुत ध्यान रखना चाहिए। मवाद इत्यादि से जो गन्दगी हो जाये उसे फ़ौरन साफ़ करते रहना चाहिए। जानवर को अधिक-से-अधिक आराम देना चाहिए।

(५) हड्डी पर चोट लगना, टूटना, उतरना और मोच आ जाना

शरीर हड्डियों के ढाँचे का बना हुआ है। चोट लग जाने से, पैर फिसल जाने से या अन्य किसी कारण से हड्डी टूट जाती है या जोड़ की जगह से अलग हो जाती है।

पहचान—उस जगह दर्द होता है। वह हिस्सा हरकत नहीं करता। कई बार खून भी निकलने लगता है। हड्डी टूट जाने पर हिलाने से आवाज़ होती है। यदि जोड़ उतर जाये तो वह हिस्सा दूसरे के मुक़ाबले में बढ़ा हुआ, टेढ़ा और काम के नाक़ाबिल हो जाता है।

इलाज—अगर साधारण मोच है और उसकी वजह से सूजन आ गई है और दर्द होता है तो ठण्डे पानी की गद्दी इत्यादि लगानी चाहिए। इससे आराम न हो तो तर व गर्म सेक व मालिश या लेप जो सूजन के इलाज में पीछे बताये हैं उसके मुताबिक़ करना चाहिए।

अगर हड्डी उतर गई है तो जानकार आदमी द्वारा हड्डी चढ़वाकर बताये अनुसार मालिश व खुश्क सेक पहले करना

चाहिए और जानवर को कुछ दिन आराम देना चाहिए। अगर हड्डी टूट गई है तो उसके सिरों को जानकार आदमी द्वारा ठीक मिलवाकर रुई, लोगड़, कपड़ा रखकर बाँस की खपच्ची लगाकर उस जगह को ऐसे बाँध देना चाहिए कि जानवर के हिलने-डुलने इत्यादि से वह ढीली न हो सके और हड्डी के जो दोनों सिरे मिलाये गये हैं वे ज्यों-के-त्यों मिले रहें। डेढ़ महीने तक हड्डी को बराबर उसी तरह बाँधे रखने से वह जुड़ जाती है।

साधारण मोच के अलावा दूसरी हालतों में ढोरों के होशियार डाक्टर से उपरोक्त काम में मदद लेनी चाहिए ताकि इलाज विधिपूर्वक हो सके। ढोर को चोट लगते ही नीचे लिखी दवा पिला देने से उसको आराम मिलता है—

फिटकरी	५ तो०
हल्दी	२॥ तो०
दूध	१ सेर

गरम दूध में सब चीजें घोलकर गरम-गरम पिला दीजिए। दो-तीन दिन तक एक बार रोज पिलाइए।

खान-पान—शीघ्र पचनेवाला तथा मुलायम चारा-दाना चाहिए और बादी व क़ब्ज करनेवाली खुराक नहीं देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर को ज्यादा-से-ज्यादा आराम देना चाहिए। हिलने-डुलने न देना चाहिए। उसके बैठने की जगह बहुत साफ़ रखनी चाहिए और वहाँ बिछाली लगा देनी चाहिए। यदि इस बीच में बँधी हुई जगह के आस-पास जख्म हो जाय तो बड़ी दिक्क़त होगी। इसलिए पहले से ही हिफ़ाजत रखनी

चाहिए ताकि ज़ख्म न हो। अगर जानवर को करवट देनी हो तो होशियारी से देनी चाहिए जिससे उसे तकलीफ़ न हो और बँधे हुए स्थान पर किसी क़िस्म का ज़ोर न पड़े।

(६) खुरों में फोड़ा-फुंसी, घाव आदि हो जाना

पक्की सड़क पर बराबर चलने से खुर घिस जाते हैं बहुत तेज़ गर्म रेत में चलने से खुरों के बीच में सूजन व फफोला-सा हो जाता है। कील, कंकड़ या दूसरी चीज़ चुभने से भी खुरों में घाव हो जाता है।

पहचान—जानवर लँगड़ाकर चलता है और चलने में तकलीफ़ होती है।

इलाज—जब जानवर लँगड़ाकर चले तो सबसे पहले उसका मुँह देखना चाहिए कि मुँह या ज़बान पर किसी प्रकार के छाले तो नहीं हैं। यदि ऐसा है तो खुर-मुँह की बीमारी समझनी चाहिए और उसको तन्दुरुस्त ढोरों से अलग करके खुरमुँह की बीमारी का इलाज करना चाहिए। पृष्ठ ४१ पर देखिए।

अगर इसका सन्देह न हो तो फिर जानवर के खुर अच्छी तरह देखने चाहिएँ और अगर उनमें कोई कील-काँटा वग़ैरा नुकीली चीज़ चुभी हुई हो तो उसे वहाँ से निकालकर उस जगह कपूर और तारपीन मिले हुए तिल के तेल में रुई का फाया भिगोकर उसे सावधानी से अन्दर घुसेड़ देना चाहिए और आस-पास की जगह पर भी तेल चुपड़ देना चाहिए। इस प्रकार दो-चार रोज़ तक यह दवा लगाने से आराम हो जायेगा।

अगर मवाद पड़ गया है तो नीम के पत्तों के उबाले हुए पानी से धोकर जैसे घाव का इलाज करते हैं वैसे करना चाहिए। यदि कीड़े पड़ गये हों तो कीड़े मारने का इलाज करना चाहिए।

गर्म रेत में चलने की वजह से सूजन या फफोला हो गया हो तो बारीक पिसा हुआ नमक मक्खन में मिलाकर लगावें। अगर खुर घिस गये हों तो जानवर को आराम देना चाहिए और अगर पक्की सड़क के ऊपर ज्यादा चलने-फिरने का काम हो तो उसके खुरों पर लोहे का नाल लगवा देना चाहिए।

खान-पान—खाने के लिए रोज़ाना की साधारण खुराक देनी चाहिए।

अन्य हिदायतें—कभी-कभी जानवर के खुरों के अधिक फैल जाने या उनके आगे को बढ़ जाने के कारण वह लँगड़ाकर या खुरों को धरती में लगाकर चलता है। ऐसी हालत में उसके खुरों को कटवाकर ठीक करवा देने चाहिएँ। खुर में दवा जानवर को गिराकर लगाई जाती है ताकि दवा लगानेवाला शान्ति से अपना काम कर सके। जानवर को गिराने में ध्यान रखना चाहिए कि उसे सख्त जगह पर न गिराया जाये बल्कि मुलायम मिट्टी, रेती या घास इत्यादि पर गिराना चाहिए और फुर्ती से दवा इत्यादि लगानी चाहिए ताकि जानवर को देर तक गिराये रखने से जो उसको अफारा-सा हो जाया करता है उसके पहिले ही सब काम पूरा हो जाये। फिर भी यदि अफारा हो जाये तो जानवर को एक बार छोड़ देना चाहिए और फिर थोड़ी देर बाद गिराकर काम समाप्त करना चाहिए।

(७) सींग में कीड़ा लग जाना या चोट से टूट जाना

किसी गन्दगी के कारण या सींग के आसपास के किसी फोड़े-फुन्सी की देख-भाल न होने के कारण सींग में कीड़ा लग जाया करता है। लड़ने या किसी प्रकार चोट लगने से भी सींग में घाव होकर कीड़े लग जाते हैं या ज्यादा चोट लगने से टूट जाया करता है।

पहचान—सींग में जब कीड़ा लग जाता है तो जानवर बराबर अपना सींग किसी खम्भे, पेड़, दीवाल या आस-पास के खूँटे पर या अन्य किसी जगह पर रगड़ता रहता है। जब कीड़ों का असर ज्यादा हो जाता है तो सींग एक तरफ को झुक जाता है।

इलाज—अगर सींग में कीड़े लगने का सन्देह हो तो सींग व आस-पास की जगह को गुनगुने नीम के पानी से भली भाँति साफ करके देखना चाहिए कि कहीं कोई सूराख या घाव तो नहीं है। यदि वह मिल जाये तो तारपीन के तेल में रुई का फाहा भिगोकर सींग द्वारा उसको अन्दर कर देना चाहिए ताकि कीड़े मर जायें। इस प्रकार दिन में दो-तीन बार कीड़े मारने की दवा लगानी चाहिए और घाव हो गया हो तो कीड़े मारने के बाद उसका इलाज करना चाहिए। अगर कीड़ों का इतना असर हो गया हो कि सींग झुक गया हो या चोट लगने से टूट गया हो तो उसको जरा नीचे से आरी से काटकर अलहदा कर दें। खून रोकने के लिए ठण्डे पानी में जरा-सी

फिटकरी घोलकर उसकी पट्टी या गद्दी लगा दें। खून रुक जाने पर दो हिस्से फिटकरी, १ हिस्सा तूतिया बारीक पिसवाकर उसपर बुरकाकर ऊपर से साफ़ रुई रखकर या कपड़े की गद्दी देकर कसकर बाँध दें। बाद में घाव का इलाज करें।

खान-पान—रोज़ाना-जैसा साधारण।

अन्य हिदायतें—जबतक घाव बिलकुल अच्छा न हो जाये जानवर को ऐसे तरीक़े से बाँधना चाहिए कि वह सींग को किसी चीज़ से न रगड़ पाये। यदि ऐसा करने में उसे खाने-पीने में तकलीफ़ हो तो एक आदमी जानवर के पास बैठकर उसे खिला-पिला दे पर वह सींग न रगड़ सके।

(८) कान में मवाद और घाव पड़ जाना

चोट या दूसरे किसी कारण से फोड़ा-फुन्सी हो जाने से कान में मवाद व घाव पड़ जाया करता है।

पहिचान—कान को हिलाना, फटफटाना, किसी चीज़ से खुजलाना या रगड़ना या जिस कान में तकलीफ हो उधर की गर्दन नीची रखना इसकी पहचान है।

इलाज—कान को नीम के उबले पानी से धोना चाहिए। अगर सूजन हो तो उसमें नीम के पत्तों के साथ थोड़ी मकोय और आकसंड के पत्ते और मिला देने चाहिएँ। धोने के बाद कान को इस प्रकार के पानी में रुई भिगोकर और निचोड़कर उसे एक तिनके के सिरे पर फुरहरी की तरह बाँधकर उससे कान को सुखाना चाहिए और फिर १ हिस्सा कपूर, १ हिस्सा भुना हुआ सुहागा

और २० हिस्सा सरसों के तेल में मिलाकर दवा फुरहरी से लगा दें और दो चार बूँद कान में डाल दें।

(२) आक का तेल फुरहरी से लगा दें और दो-चार बूँद कान में डाल दें।

खान-पान—जानवर को शीघ्र पचनेवाली चीजें खाने को देनी चाहिएँ। पानी कुएँ का ताज़ा पिलावें।

अन्य हिदायतें—कान की सफ़ाई का खास ध्यान रक्खें और मक्खी से बचायें। जानवर को आराम से रखें। यह ध्यान रखना चाहिए कि वह अपन कान किसी चीज से न रगड़े।

(६) आँख का खुजलाना, पानी या गीड़ का बहना

किसी चोट से या किसी चीज़ के आँख में गिर जाने के कारण, सख्त गर्मी से, बदबूदार गन्दी हवा या धुँएवाले मकान में रहने से आँख दुखने लगती है। कभी-कभी मच्छर के काटने से भी ऐसा हो जाता है।

पहचान—आँख का सुर्ख़ होना, आँख से आँसू और गीड़ का बराबर निकलते रहना इसकी पहचान है।

इलाज—खूब उबले हुए पानी को साफ़ बारीक कपड़े में छानकर और ठण्डा करके ४ छटाँक पानी में १ माशा फिटकरी घोल लीजिए। फिर उसके कुल्ले जानवर की दुखती हुई आँख में कराइए। जानवर की आँख को गर्द गिरने व हवा लगने से बचाइए। जहाँ तक हो सके उसको अँधेरे में रखिए। यदि पिचकारी मिल सके तो

बजाय कुल्ले करने के फिटकरी के पानी की पिचकारी से जानवर की आँख धोइए।

खान-पान—खाने को चने का दाना व द्विदल जाति का चारा तथा ज्यादा गर्म तासीर की चीजें न देकर चोकर, हरी दूब घास देनी चाहिए। पीने का पानी १ तो० क़लमी शोरा डालकर पिलाना चाहिए।

अन्य हिदायतें—जानवर को आँख नहीं रगड़ने देना चाहिए। आँख की सफाई का भी ध्यान रखना चाहिए। दिन में दो-तीन बार उसकी आँख हो सके तो दवा के पानी से नहीं तो साफ़ ठण्डे पानी से ही धोते रहना चाहिए। धूप तथा गर्द या आँधी में जहाँतक हो जानवर जबतक बिलकुल अच्छा न हो जाये तबतक उससे काम न लें।

(१०) कन्धा आ जाना व फाला लग जाना

अधिक काम करने से, कहीं ज्यादा जोर करने से, बैल को पहले पहल जोतने पर, कन्धे पर बार-बार झटका लगने पर, बहुत देर तक डले वाली सख्त जमीन में हल चलाने से या किसी और कारण से बैल का कन्धा फूल जाया करता है और उससे बैल काम करने के काबिल नहीं रहता। कभी-कभी कुछ असावधानी हो जाने के कारण या किसी चीज से हल उछल जाने से फाला बैल के पैर में लग जाता है।

पहचान—कन्धा लाल हो जाता है। सूजन आ जाती है। कभी-कभी यह इतना फूल जाता है कि वहाँ हँडिया सी बन जाती

है। बैल के कन्धे पर जुआ रखते ही वह गर्दन गिरा लेता है और जोर नहीं लगाता। फाला लग जाने पर बैल लँगड़ाने लगता है और कभी-कभी खून भी निकलने लगता है।

इलाज—कन्धा आ जाने पर सबसे पहले खारा या खाने का नमक मिले गर्म पानी से सेक करना चाहिए (सूजन में बताई हुई तर सेक करने की विधि पन्ना १५२ पर देखिए) यदि सूअर की चरबी मिल सके तो उसकी चरबी की मालिश करना बहुत लाभप्रद है। यदि इससे आराम न हो और कन्धा फूल जाये तो उसको पकाने की दवा लगाकर (पृष्ठ १५७ देखिए) उसको पकाने की कोशिश करनी चाहिए। जब पककर फूट जाये तो फिर घाव का इलाज घाव (पृष्ठ १५८ पर) में बताये अनुसार करना चाहिए।

बैल के फाला लग जाने पर फौरन ही उसको एक तरफ ले जाकर उसके चोट की जगह पर पेशाब कर देनी चाहिए। दिन में दो-तीन बार इस प्रकार एक दो रोज़ पेशाब करने से लाभ हो जाता है या आम के अचार की फाँक बाँधकर पट्टी बाँध देनी चाहिए। यदि घाव हो जाय या कीड़े पड़ जायें तो उनका इलाज ऊपर बताए तरीक़े से कीजिए।

खान-पान—साधारण देना चाहिए। सिर्फ़ यह ध्यान रखना चाहिए कि जानवर कमजोर न होने पावे या उसको कोई ऐसी चीज खाने को न दें जो मवाद बढ़ानेवाली हो।

अन्य हिदायतें—जानवर को यथासम्भव आराम देना चाहिए और खास करके उस अंग को जिसमें तकलीफ़ है। परन्तु

फाला लगते ही या कन्धा आ जाने पर साधारण हालत में उससे थोड़ा बहुत बराबर काम लेना चाहिए। ऐसी हालत में बिलकुल काम न लेना भी हानिकारक होता है।

(११) आग से जल जाना

बाज दफे भूल में आग लग जाने से या छप्पर या मकान में आग लगने के कारण ढोर आग से झुलस जाया करते हैं।

पहचान—कम जलने पर जगह सुर्ख सी हो जाती है और अधिक जलने पर वहाँ फफोले पड़ जाते हैं।

इलाज—चूने के निथरे हुए पानी को अलसी, गोले (नारियल), तिल में से किसी एक तेल में थोड़ा कपूर मिलाकर बराबर का लेकर बोतल में भर लें और उसको खूब हिलायें। जब एक-सा हो जाये तब दिन में दो-तीन बार लगावें मक्खियों से बचाने के लिए उसे चादर या झूल से ढक देना चाहिए और यह ध्यान रखना चाहिए कि जानवर उस जगह को चाट न सकें।

गाय के घी को फूल या काँसी की थाली में डालकर बराबर का साफ़ ठण्डा पानी डालकर खूब फेटें। फिर थोड़ी देर रखकर वह पानी निकाल दें और दूसरा पानी डालकर फिर फेंटें। इस प्रकार ८० से १०० बार पानी में फेंटा हुआ गाय का घी जली हुई जगह पर लगाने से आराम होता है। जितनी अधिक बार फेंटा हुआ घी होगा उतना ही अच्छा होगा। दिन में तीन-चार चार रोज दवा लगानी चाहिए और मक्खी-मच्छर से बचाना चाहिए।

चूने के पानी में तिल या अरंडी या नारियल का तेल मिलावें। इससे एक मलहम वन जायेगा। इसको लगावें ऊपर से बड़ लेसुवे या मेंहदी के पत्ते जलाकर उसकी राख छिड़कने से भी आराम होता है।

पहचान—शीघ्र पचनेवाली पौष्टिक खुराक देनी चाहिए। गुड़, दूध, चोकड़, दलिया, अवश्य देना चाहिए ताकि जानवर कमजोर न होने पावे। पीने को ताज़ा पानी दें।

अन्य देखभाल—यदि जानवर ज्यादा जल गया हो तो उसको बहुत होशियारी से दिन में दो-तीन बार करवट दिलवाना नहीं भूलना चाहिए, नहीं तो खाल गल जायेगी और घाव हो जायेगा। खूब अच्छी मुलायम बिछाली बिछानी चाहिए और जानवर को ऐसी जगह रखना चाहिए कि मच्छर-मक्खी उसे न सतावें और उसपर भूल डाल देनी चाहिए।

परिशिष्ट

(इस पुस्तक में जो दवाइयाँ बतायी गयी हैं उनकी सूची)

घर में मिलनेवाली चीज़ें

१ अजवायन (Carum Copticum, Bishops Weed) Species of Dill)

२ अमचूर या आम की सूखी खटाई (Dry mango-pulp)

३ आम का अचार (Mango-pickle)

४ गुड़ (Gur, Jaggery)

५ घी, मक्खन (Clarified butter, Butter)

६ छाछ, मट्ठा, लस्सी (Butter milk, churned curd)

७ जीरा (सफेद) (White Cumin seed or Carraway 'White')

८ तम्बाकू (Tobacco)

९ तिल का तेल (Til oil, Sesame oil, Jingeley oil)

१० धनिया (Coriander seeds)

११ नमक (Common Salt)

१२ प्याज़ (Onion)

१३ मिट्टी का तेल (Kerosine oil)

१४ लाल मिर्च (Chili)

१५ सरसों का तेल (Mustard oil)

१६ सौंठ (Dry ginger)

१७ हल्दी (Turmeric)

गाँव में मिलनेवाली चीज़ें

१ अदरक (Ginger)

२ अलसी (Lin-seed)

३ कत्था (Catechu)

४ कबूतर की बीठ (Pigeon's dung)

५ काली मिर्च (Pepper)

६ खारी नमक (Crude Glauber's Salt, Crude Soda Sulph)

७ गाजर के बीज (Carrot seeds)

८ गेरू (Ochre)

९ चाय (Tea)

१० चूना (Burnt lime, Unslacked-lime)

११ छुआरे (Dry dates)

१२ तूतिया या नीला थोथा (Blue Vitriol or Copper Sulphite)

१३ नीम का तेल (Neem oil or Margosa oil)

१४ फिटकरी (Alum)

१५ खाँड का बताशा (Batasha made from Sugar)
१६ मेथी (Fenugreek)
१७ लहसुन (Garlic)
१८ सफेद तिल्ली (Sesame or Jingeley seeds 'White')
१९ सरसों की खल (Mustard oil cake)
२० साबुन (Soap)
२१ सिरका (Vinegar)
२२ सौंफ़ (Foeniculum vulgare, Anise seeds)
२३ शहद (Honey)
२४ शीरा (Molasses)
२५ हींग (Asafoetida)

आस-पास खेत या जंगल में मिलनेवाली चीज़ें

१ अडूसा या वासा (Adhotosavasica)
२ अमलतास की फली (Fruit of Cassia fistula tree)
३ अमर बेल या आकाश बेल (Parasite creeper, Air creeper)
४ अनार का छिलका (Pomegranate bark)
५ अरण्ड के पत्ते (Castor-seed plant leaves)
६ आकसण्ड के पत्ते (Aksand leaves)
७ आंक या मदार के पत्ते या जड़ (Mudar or Calotropis gigantee or proceta leaves or roots)

८ कच्चे आम (Unripe Mango)
९ इमली के पत्ते (Tamarind leaves)
१० ककरोंधा, कुकर मुत्ता जंगली तम्बाकू
११ कीकर या बबूल की छाल (Arabic gum-tree Acacia Arabica tree's bark)
१२ केले की फली तथा रस व राख (Green Bananas fruits, its juce and ash)
१३ गूलर (In appearance similar to fig)
१४ गुलाबाँस (It is a kind of plant found in gardens)
१५ गेंदा का फूल (Marigold flower)
१६ गोमा (घास) (Goma, a kind of weed found in cultivated fields)
१७ ग्वार पाठा, घी कुवार (Bardadies Aloes or Indian Aloes)
१८ जवासा (Manna, Hebrew or Alhagi-Maurorum)
१९ झरबेरी के पत्ते (Zizyphus Jujuba or Jujube hedge)
२० दूब-घास (Dub-grass)
२१ धतूरे के बीज वा पत्ते (Datura or Thornapple (white) seeds)
२२ पलास पापड़ा (Butea frondosa seeds or Bustard teak flowers)
२३ पवार (तालाब में मिलती है) (It spreads on the

surface of water in big ponds)

२४ बरना के पत्ते (A tree which is generally found in pasture lands)

२५ बाँस के पत्ते (Bamboo leaves)

२६ बेल का फल (Bael fruit or Aegle Marmlos fruits)

२७ मकोय (A plant found throughout India bearing small red fruits in branches)

२८ मरवा के पत्ते (Ocimum pilosum)

२९ मेंहदी के पत्ते (Henna leaves or complure leaves)

३० सफेदा के पत्ते (Eucalyptus leaves)

३१ सेंजने की छाल (Horse reddish tree bark or Morunga-Hyperantheria)

आसपास के क़स्बे या शहर में मिलनेवाली चीज़ें

(जिन गाँवों में बहुत ढोर हों तो उस गाँव में पनसारी या बनिये की दुकान पर ये चीज़ें संग्रह करके रखनी चाहिएं ताकि तब कभी काम पड़े तो मिल सकें।)

१ एलवा (मुसब्बर) (Aloes)

२ कपूर (Camphor)

३ काला नमक (Black Salt)

४ कुचला (Nux-vomica)

५ खरिया मिट्टी (White clay or China clay or Chalk)

६ गन्धक (Sulphur)
७ चिरायता (Chiretta or chirait Gentian)
८ तारपीन का तेल (Turpentine oil)
९ देशी शराब (Country wine)
१० नौसादर (Amonium chloride)
११ पलास पापड़ा (Butea frondosa-pulp)
१२ बेलगिरी (Bael fruit or Aegle Marmlos fruits)
१३ भंग (Cannabis Indica or Indian hemp)
१४ रस कपूर (Calomel or Muriate of Mercury)
१५ राई (Yellow Mustard)
१६ राल (Resin)
१७ सुहागा (Borax)
१८ शोरा (Nitre or Salt Peter, Potassium Nitrute)
१९ हीरा या हरा कसीस (Ferrous Sulphate or green Vitriol)
२० रीठा (Soap nut)

सस्ता साहित्य मण्डल

सर्वोदय साहित्य माला के प्रकाशन

[नोट—*चिन्हित पुस्तकें अप्राप्य हैं]

१. दिव्य-जीवन ।=)
२. जीवन-साहित्य १।)
३. तामिल वेद ।।।)
४. भारत में व्यसन और व्यभिचार ।।।=)
५. सामाजिक कुरीतियाँ* ।।।)
६. भारत के स्त्री-रत्न ३)
७. अनोखा* १।=)
८. ब्रह्मचर्य-विज्ञान ।।।=)
९. यूरोप का इतिहास २)
१०. समाज-विज्ञान ।।।)
११. खद्दर का संपत्ति-शास्त्र* ।।।≡)
१२. गोरों का प्रभुत्व* ।।।=)
१३. चीन की आवाज़* ।-)
१४. द. अ. का सत्याग्रह १।।)
१५. विजयी बारडोली* २)
१६. अनीति की राह पर ।।=)
१७. सती की अग्नि-परीक्षा ।-)
१८. कन्या-शिक्षा ।)
१९. कर्म योग =)
२०. कलवार की करतूत ।=)
२१. व्यावहारिक सभ्यता ।।)
२२. अँधेरे में उजाला ।।)
२३. स्वामी जी का बलिदान* ।-)
२४. हमारे ज़माने की गुलामी* ।)
२५. स्त्री और पुरुष ।।)
२६. सफ़ाई ।=)
२७. क्या करें ? १)
२८. हाथ की कताई-बुनाई* ।।-)
२९. आत्मोपदेश* ।)
३०. यथार्थ आदर्श जीवन* ।।।-)
३१. जब अंग्रेज नहीं आये थे ≡)
३२. गंगा गोविन्दसिंह* ।।=)
३३. श्रीरामचरित्र १।)
३४. आश्रम-हरिणी* ।)
३५. हिंदी मराठी कोष २)
३६. स्वाधीनता के सिद्धान्त* ।।)
३७. महान् मातृत्व की ओर ।।।=)
३८. शिवाजी की योग्यता ।=)
३९. तरंगित हृदय ।।)
४०. नरमेध* १।।)
४१. दुखी दुनिया ।=)
४२. जिन्दा लाश* ।।)
४३. आत्मकथा १), १।।)
,, [संक्षिप्त संस्करण] ।।)
४४. जब अंग्रेज आये* १।=)
४५. जीवन-विकास १।)
४६. किसानों का बिगुल* =)
४७. फाँसी ।=)
४८. अनासक्ति योग =) ≡)।)
४९. स्वर्ण विहान* ।=)
५०. मराठों का उत्थान और पतन २।।)